46वां 46th
राष्ट्रीय फ़िल्म National Film
समारोह Festival
1999

संपादक
कावेरी बमज़ई

Editor
Kaveri Bamzai

समन्वय
एस. टुइक्ले
मंजु खन्ना

Co-ordination
S. Twickly
Manju Khanna

उत्पादन
एस.एम. चहल
जी.पी. धुसिया
वी.के. मीणा
विलास पगारे

Production
S.M. Chahal
G.P. Dhusia
V.K. Meena
Vilas Pagare

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक : तारा आर्ट प्रिंटर्स, नई दिल्ली-110 002

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Tara Art Printers, New Delhi-110 002

Job No. 2/2/99 PP III | 2,000 Copies | Feb. 2000

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
निर्णायक मण्डल	(vii)	**JURY MEMBERS**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	1	**DADA SAHEB PHALKE AWARD**
कथाचित्र पुरस्कार	5	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	6	Best Feature Film
निर्देशक को सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	8	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार	10	Best Popular Film Providing Wholesome Enterainment
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	12	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म	14	Best Film on Family Walfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	16	Best Film on other Social Issues
पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	18	Best Film on Environment Coservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल फ़िल्म	20	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशक	22	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	24	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	26	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	28	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	30	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल-कलाकार	32	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	34	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	36	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	38	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	40	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	42	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	44	Best Editing
सर्वोत्तम निर्देशन	46	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषाकार	48	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	50	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	52	Best Lyrics

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार	54	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	56	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	58	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	60	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	62	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र	64	Best Feature Film in English
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	66	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड कथाचित्र	68	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	70	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	72	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	74	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र	76	Best Feature Film in Punjabi
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	78	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	80	Best Feature Film in Telugu
विशेष उल्लेख	82	Special Mention
ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	85	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	86	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	88	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/जनजातीय फ़िल्म	90	Best Anthropological/Ethrographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	92	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म	94	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/संग्रहण फ़िल्म	96	Best Environment/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन	98	Best Historical/Reconstruction/Compilation Film
सर्वोत्तम सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	100	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	102	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम गवेषणात्मक रोमांचक फ़िल्म	104	Best Exploration/Adventure Film
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म	106	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	108	Best Animation Film
विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार	110	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	112	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम परिवार कल्याण फ़िल्म	114	Best Film on Family Welfare

सर्वोत्तम छायांकन	116	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनी आलेखन	118	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	120	Best Editor
सर्वोत्तम संगीत निर्देशक	122	Best Music Director
विशेष उल्लेख	124	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	126	Awards Not Given
सिनेमा लेखन के लिए पुरस्कार	127	**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक (1998)	128	Best Book on Cinema (1998)
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक (1998)	130	Best Film Critic (1998)
विशेष उल्लेख	132	Special Mention
कथासार : कथाचित्र	134	**SYNOPSES : FEATURE FILMS**
अग्निसाक्षी	135	Agnisaakshi
अंत:पुरम	136	Anthapuram
असुख	137	Asukh
आत्मीयो स्वजन	138	Atmiyo Swajan
डा. बाबासाहेब अम्बेडकर	139	Dr. Babasaheb Ambedkar
चिंताविष्टायया श्यामला	140	Chinthavishtayaya Shyamala
दया	141	Daya
दिल से	142	Dil Se
गॉड मदर	143	God Mother
हूमाले	144	Hoomale
हाउसफुल	145	House Full
हू तू तू	146	Hu Tu Tu
जननी	147	Janani
जीन्स	148	Jeans
कभी पास कभी फेल	149	Kabhi Paas Kabhi Fail
कन्नेझुथि पोट्टुम् थोट्टू	150	Kannezhuth Pottum Thottu
कंटे कुतुरने कानु	151	Kante Kuturne Kanu

किछु संलाप किछु प्रलाप	152	Kichhu Sanlap Kichhu Pralap
कुछ कुछ होता	153	Kuch Kuch Hota Hai
कुहखल	154	Kuhkhal
मल्ली	155	Malli
नन्दन	156	Nandan
समर	157	Samar
सत्या	158	Satya
शहीद-ए-मोहब्बत बूटा सिंह	159	Shaheed-a-Mohabbat Boota Singh
तू तिथे मी	161	Tu Tithe Me
थोली प्रेमा	162	Tholi Prema
ज़ख्म	163	Zakhm
कथासार : ग़ैर कथाचित्र	164	**SYNOPSES : NON-FEATURE FILMS**
अन्ना लिव्स	165	Anna Lives
एजुकेशन ओनली हर फ्यूचर	166	Education Only Future
फकीर	167	Faqir
इन द फोरेस्ट हैंग्स ए ब्रिज	168	In the Forest Hangs a Bridge
मलाना-इन सर्च ऑफ	169	In search of Malana
जी करता था	170	Jee Karta Tha
खेरवाल परब	171	Kherwal Parab
कुमार टाकीज	172	Kumar Talkies
मल्ली	173	Malli
एन.एन. 367-सन्टेन्स ऑफ साइलेन्स	174	N.M. 367-Sentence of Silence
ए पेंटर ऑफ ओलोक्वेन्ट साइलेंस : गणेश पायने	175	A Painter of Eloquent Silence : Ganesh Pyne
प्रेमजी-इतिहासथिन्ते स्पर्शम	176	Premji Ithihasathinte Sparsam
रिपेंटेन्स	177	Repentance
द सागा ऑफ डार्कनेस	178	The Saga of Darkness
साइलेन्ट स्क्रीम	179	Silent Scream
उनारविन्ते कालम	180	Unarvinte Kalam
विलिंग टू सैक्रीफ़ाइस	181	Willing to Sacrifice

निर्णायक मण्डल Jury Members

फीचर फिल्मों के लिए जूरी

JURY FOR FEATURE FILMS

डॉ. डी.वी.एस. राजु (चेयरमैन)
D.V.S. Raju (Chairman)

मृणमय चक्रवर्ती
Mirnmoy Chakraborty

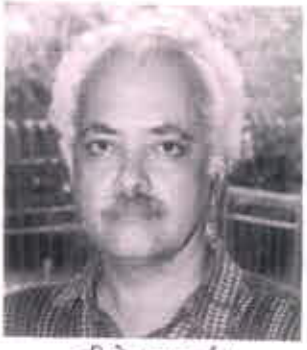

नचिकेत पटवर्द्धन
Nachiket Patwardhan

अरुणा वासुदेव
Aruna Vasudev

रमेश सिप्पी
Ramesh Sippy

बी. नरसिंह राव
B. Narsing Rao

सुरेश हबलीकर
Suresh Heblikar

रंजन बोस
Ranjan Bose

भावना सौमाया
Bhawana Somaya

चित्रार्थ
Chitraarth

गौतम बोरा
Gautam Bora

सुमित्रा भावे
Sumitra Bhave

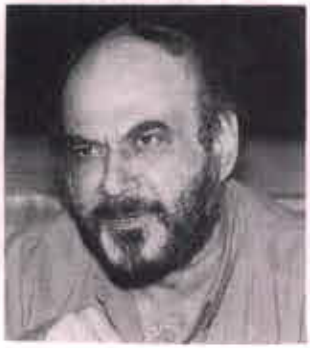

भास्कर चंदावरकर
Bhaskar Chandavarkar

वी. निर्मला
V. Nirmala

बालचंद्र मेनन
Balachandra Menon

जे.एल. रल्हन
J.L. Ralhan

अली पीटर जॉन
Ali Peter John

JURY FOR NON-FEATURE FILMS
गैर फ़ीचर फ़िल्मों के लिए जूरी

शाजी एन. करुण (चेयरमैन)
Shaji N. Karun (Chairman)

राजेश परमार
Rajesh Parmar

नंदन कुद्यादी
Nandan Kudhyadi

सहजो सिंह
Sehjo Singh

शोमा ए. चटर्जी
Shoma A. Chatterji

सिनेमा पर लेखन के लिए जूरी

JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA

एम.टी. वासुदेवन नैयर (चैयरमैन)
M.T. Vasudevan Nair (Chairman)

गीता हरिहरन
Githa Hariharan

संजीत नारवेकर
Sanjit Narwekar

दादा साहेब Dada Saheb
फाल्के पुरस्कार Phalke Award
1998

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार
विजेता 1998

बी.आर. चोपड़ा को मौजूदा पीढ़ी टेलीविजन धारावाहिकों के क्षेत्र में क्रांति लाने वाले फिल्मकार के रूप में अधिक जानती है। उन्होंने सन् 1960 में "**कानून**" तथा सन् 1969 में "**इतिफाक**" जैसी बेजोड़ फिल्मों का निर्माण किया। बिना गीतों वाली "**इतिफाक**" नई धारा की फिल्मों के दौर की महान कृति मानी जाती है और बी.आर. चोपड़ा ने सन् 1965 में बनाई "**वक्त**"। यह एक बड़ी मल्टी स्टार फिल्म थी। उन्होंने सन् 1957 में "**नया दौर**" फिल्म बनाई, जब मशीनीकरण के खिलाफ बात करना इतना सरल नहीं था। उन्होंने उसके बाद विवाहेतर संबंधों पर "**गुमराह**", बलात्कार पर "**इंसाफ का तराजू**" तथा मुस्लिम समाज पर आधारित "**निकाह**" जैसी गजब की फिल्में क्रमश: 1963, 1980 तथा 1982 में बनाई।

अंग्रेजी साहित्य में पोस्ट ग्रेजुएट बी.आर. चोपड़ा देश के विभाजन से पहले लाहौर में पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय थे। उनकी बतौर निर्देशक पहली फिल्म "**अफसाना**" थी। यह फिल्म आई.एस. जौहर की कहानी पर आधारित थी। इस फिल्म को सिनेमा प्रेमियों ने खूब सराहा और यहीं से उनके बेहद सफल फिल्मी जीवन की शुरूआत भी हुई। वे इन दिनों अपनी आगामी फिल्मों क्रमश: "**बागबन**" तथा "**खुदकुशी**" के काम में जुटे हुए हैं। बी.आर. चोपड़ा को हमारे फिल्म उद्योग के सर्वाधिक आदरणीय हस्तियों में से एक माना जाता है। उनके पुत्र रवि चोपड़ा, भाई यश चोपड़ा तथा भतीजा आदित्य चोपड़ा भी भारतीय फिल्म उद्योग की महत्वपूर्ण हस्तियाँ है। वे संघ लोक सेवा आयोग, महाराष्ट्र फिल्म तथा रंगमंच निगम आदि से भी जुड़े रहे हैं। छोटे पर्दे के लिए सन् 1988 में "**महाभारत**" सीरियल का निर्माण करके उन्होंने एक तरह से नया इतिहास रच डाला। बी.आर. चोपड़ा ने "**चुन्नी**", "**कानून**", "**मैं दिल्ली हूं**" और "**बेटा**" धारावाहिक बनाये। ये सभी दूरदर्शन पर दिखाये गये। पिछले वर्ष भारतीय सिनेमा के इस दिग्गज शख़्स ने फिल्म उद्योग में अपने 50 साल पूरे किये।

DADA SAHEB PHALKE AWARD
WINNER OF 1998

B. R. Chopra

FOR the current generation, B.R. Chopra may be more famous as the man who changed the face of television soap. But he is more than that. He is the man who made **"Kanoon"** in 1960 and **"Ittefaq"** in 1969, a songless film before experimental cinema became part of the New Wave. He made **"Waqt"** in 1965, a multi-starrer before Manmohan Desai made it into a formula. And he made **"Naya Daur"** in 1957 when it wasn't very fashionable to talk of a revolution against mechanisation. He has made films on every conceivable topic: marital infidelity in **"Gumrah"** in 1963, rape in **"Insaaf ka Tarazu"** in 1980, and a Muslim social in **"Nikaah"** in 1982.

A post-graduate in English literature, he was a journalist based in Lahore. He made his directorial debut with **"Afsana"**, based on I.S. Johar's story. The film worked and started Chopra off on his long road to success. He is currently working on **"Bagban"** and **"Khudkhushi".** He is perhaps one of the most celebrated members of the film industry, apart from also spawning a dynasty of his own with son Ravi Chopra, brother Yash Chopra and nephew Aditya Chopra. He has been on the Central Board of Film Certification, on the Union Public Service Commission, and the Maharashtra Film and Stage Corporation. His move into television with **"Mahabharata"** in 1988 made history and since then he has continued with serials such as **"Chunni", "Kanoon", "Mein Dilli Hoon"** and now **"Beta",** all on Doordarshn. Last year, he completed 50 years in the film industry.

कथाचित्र पुरस्कार Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

समर (हिन्दी)

निर्माता **सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार** को स्वर्ण कमल तथा 50,000 का नकद पुरस्कार

निर्देशक **श्याम बेनेगल** को स्वर्ण कमल तथा 50,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1998 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **'समर'** को नवीनतापरक और मानवीय प्रस्तुति के लिए जिसमें निर्देशक ने एक सामाजिक बुराई को प्रस्तुत और चित्रित किया है।

AWARD FOR BEST FEATURE FILM

SAMAR (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to the **producer Ministry of Social Justice and Empowerment, Govt. of India**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to the director **SHYAM BENEGAL**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1998 is given to the Hindi film, **SAMAR**, for the innovative and human manner in which the director presents a continuing social evil.

श्याम बेनेगल

62 वर्षीय श्याम बेनेगल का परिचय देने की जरूरत नहीं। 1974 में '**अंकुर**' के जरिए भारत में मध्यम सिनेमा के अग्रदूत बने। पिछले 25 वर्षों से फिल्म महोत्सवों में वे महत्त्वपूर्ण रहते हैं। टेलीविजन के लिए 1986-91 में भारत के इतिहास पर '**भारत एक खोज**' नाम से एक श्रृंखला बनाने के साथ उन्होंने 1984 में सत्यजीत राय पर वृत्तचित्र बनाया। वे 1980 और 1984 तथा 1989-92 में पुणे फिल्म संस्थान के चेयरमैन रहे। बेनेगल ने अपने '**कॉपीराइटर**' को कहीं दूर छोड़ दिया। उन्होंने तेलुगु में '**अनुग्रहम**', 1977 तथा अंग्रेजी में '**द मेकिंग आफ महात्मा**' (1995) बनायी। उन्हें 1976 में पद्मश्री और 1991 में पद्म विभूषण से नवाजा गया। बेनेगल की नयी फिल्म '**समर**' में मध्यप्रदेश के एक गांव में जातिगत संबंधों को उभारा गया है। फिल्म निर्माता गुरुदत्त के भतीजे बेनेगल को पिछले 25 वर्षों से समांतर सिनेमा का प्रकाश स्तंभ माना जाता है साथ ही वे व्यवासायिक सिनेमा के एक मुहावरा भी हैं।

Shyam Benegal

FOR 62-year-old Shyam Benegal, introductions are not necessary. The man who heralded Middle Cinema in India with **"Ankur"** in 1974, has been a staple of the film festival circuit for the past 25 years. From a 53-part series for television on the history of India, **"Bharat Ek Khoj"** in 1986/91, to making a documentary on Satyajit Ray in 1984, to being chairman of the Film and Television Institute of India between 1980 and 1983 as well as 1989-1992, Benegal has left quite far behind his beginnings as a copywriter. He has made films in Telugu **("Anugraham, 1977")** as well as English (**"The Making of the Mahatma"** in 1995). A recipient of the Padma Shri in 1976 and Padma Bhushan in 1991, Benegal's latest film, **"Samar"**, explores the caste relationships in a village in Madhya Pradesh. A nephew of film-maker Guru Dutt, Benegal's 25 years have seen him evolve from a torchbearer of parallel cinema to a man who can be at ease in the commercial idiom too.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

दया (मलयालम)

निर्माता **सी.के. गोपीनाथ** को स्वर्ण कमल तथा 25,000 रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक **वेणु** को स्वर्ण कमल तथा 25,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए 1998 का इंदिरा गांधी पुरस्कार मलयालम फिल्म **'दया'** को इसके परिकथात्मक कथानक के सौन्दर्यपूर्ण, मोहक प्रस्तुतीकरण और शैली, कल्पना, सर्जनात्मक अद्वितीयता के लिए दिया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

DAYA (MALAYALAM)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 25,000 to the producer **C.K. Gopinath**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 25,000 to the director **VENU**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 1998 is given to the Malayalam film, **DAYA**, for its depiction of a delightful fairy-tale like theme lending exotic sophistication and colour to the unique mosaic of creativity, imagination and style.

सी.के. गोपीनाथ

सी.के गोपीनाथ 45 वर्षीय उद्यमी हैं एवं कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों के सक्रिय सदस्य हैं।

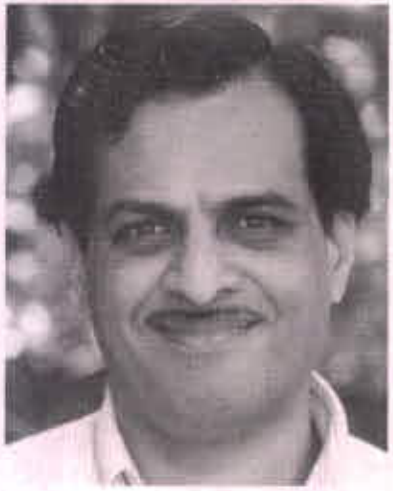

C.K. Gopinath

Forty Five Year Old C.K. Gopinath is an entreprenuer and active member of several social and cultural organisations.

वेणु

42 वर्षीय वेणु ने 70 फीचर फिल्मों में सिनेमाटोग्राफर के रूप में काम किया है। ये फिल्में हिंदी की '**माटी मानस**' (मणिकौल) बंगाली की '**ताहेदेर कथा**' (बुद्धदेव दास गुप्त), अंग्रेजी की '**मिस बीटीज़ चिल्ड्रन**' (पामेला रूक्स) और तमिल की '**मिन्सारा कनवु**' (राजीव मेनन) आदि हैं। इसके पहले इन्हें 1987, 1993 और 1994 में सर्वश्रेष्ठ सिनेमाटोग्राफर का पुरस्कार मिल चुका है। '**दया**' को केरल सरकार 1998 का सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार दे चुकी है।

Venu

FORTY-TWO-YEAR-OLD Venu has worked as a cinematographer on 70 feature films in languages ranging from Hindi, **"Mati Manas"** (Mani Kaul); to Bengali, **"Tahader Katha"** (Buddhadeb Dasgupta); from English, **"Miss Beaty's Children"** (Pamela Rooks), to Tamil, **"Minsara Kanavu"** (Rajeev Menon). He has been awarded the National Award for Best Cinematographer thrice before: in 1987, 1993, and 1994. Daya has already won him Best Debut Director Award from the Kerala State Government in 1998.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाला सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार के लिए पुरस्कार

कुछ-कुछ होता है (हिन्दी)

निर्माता **यश जौहर,** को स्वर्ण कमल तथा 40,000 रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक **करण जौहर** को स्वर्ण कमल तथा 40,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र का 1998 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म '**कुछ-कुछ होता है**' को दिया गया है। जिसमें अप्रतिहत मोहकता और कथा, संगीत, नृत्य और अभिनय का सुंदर समन्वय है।

AWARD FOR BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

KUCH KUCH HOTA HAI (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 40,000 to the producer **YASH JOHAR**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 40,000 to the director **KARAN JOHAR**

Citation

The Award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment of 1998 is given to the Hindi film **KUCH KUCH HOTA HAI** for the irresistible charm and universal appeal of its story, music, dance and performances.

यश जौहर

1952 में यश जौहर फिल्म उद्योग में आये 1958 में फ्रिट्ज लैंग की '**द इंडियन टांब**', रॉल्फ बायर की '**इविल विदिम**', सुनील दत्त की '**मुझे जीने दो**' और '**ये रास्ते हैं प्यार के**' में कंट्रोलर के रूप में काम किया। उन्होंने नव केतन में रहकर '**ज्वेल थीफ**', '**प्रेम पुजारी**' और '**हरे रामा हरे कृष्णा**' आदि का प्रोडक्शन का काम किया। 1976 में '**धर्म प्रोडक्शनस**' के नाम से अपने बैनर की शुरूआत करने वाले यश जौहर ने '**दोस्ताना**', '**दुनिया**', '**मुकद्दर का फैसला**', '**अग्निपथ**' और '**गुमराह**' जैसी फिल्में बनायी। वाल्ड डिज्नी की 1995 में '**द लास्ट डांस**' और 1998 में '**आर्मागार्डन**' बनाने में इस कंपनी ने सहयोग दिया। ये फिल्म प्रोड्यूसर्स गिल्ड आफ इंडिया लि. की मैनेजिंग कमेटी तथा फिल्म मेकर्स कंबाइन की कार्यकारिणी के पूर्व सदस्य हैं।

Yash Johar

YASH JOHAR joined the film industry in 1952. In 1958, he was production controller for Fritz Lang's The Indian Tomb, Rolf Bayer's Evil Within. Sunil Dutt's **"Mujhe Jeene Do"** and **"Yeh Raaste Hai Pyar Ke"**. He stayed on in Navketan to work on the production of films such as **"Jewel Thief"**, **"Prem Pujari"** and **"Hare Rama Hare Krishna"**. In 1976, he started his own banner, Dharma Productions, which produced films such as **"Dostana"**, **"Duniya"**, **"Muqaddar ka Faisla"**, **"Agneepath"** and **"Gumrah"**. His company has also assisted for Walt Disney on their films, **"The Last Dance"** in 1995, and **"Armageddon"** in 1998. He is a former member of the managing committee of the Film Producers' Guild of India Ltd and of the working committee of the Film Makers' Combine.

करन जौहर

25 वर्षीय करन जौहर उन फिल्म निर्माताओं की नई पीढ़ी का एक हिस्सा है जिसने बालीवुड के कार्यक्रम को फिर से परिभाषित किया। निर्देशन के रूप में '**कुछ-कुछ होता है**' उसकी पहली फिल्म है। 1988 में ग्रीनलॉन हाई स्कूल से शिक्षा प्राप्त करने के बाद जौहर मुंबई के एच.आर. कालेज से वाणिज्य स्नातक बना। इसके पहले उसने अपने पिता का '**डुप्लीकेट**' के निर्माण में सहयोग किया और यश चोपड़ा की '**दिल तो पागल है**' में शाहरूख खां के लिए पोशाक तय की।

Karan Johar

AT the age of 25, Karan Johar is part of the new breed of film makers who've redefined the agenda for Bollywood. **"Kuch Kuch Hota Hai"** was his first film as director. After completing his schooling from Greenlawns High School in 1988, Johar went on to graduate in commerce from H.R. College, Mumbai. Karan Johar wrote his first script on love and friendship which ended up as **"Kuch Kuch Hota Hai"**, after he had assisted his father in producing **"Duplicate"** and did the wardrobe for Shah Rukh Khan in mentor Yash Chopra's **"Dil To Pagal Hai"**

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

जख्म (हिन्दी)

निर्माता **पूजा भट्ट** को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक **महेश भट्ट** को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1998 का नरगिस दत्त पुरस्कार हिन्दी फिल्म **'जख्म'** को समकालीन समय में व्यापत सामाजिक धार्मिक संघर्ष, साम्प्रदायिक तनाव, हिंसा और असौहार्द के निर्भीक चित्रण के लिए दिया गया है। फिल्म बहुत ही संवेनशील ढंग से प्रेम और शांति के संदेश को संप्रेषित करती है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

ZAKHM (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the producer **POOJA BHATT**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the director **MAHESH BHATT**

Citation

The Nargis Dutt Award for the best Feature Film of 1998 is given to the Hindi film, **ZAKHM**, for boldly dealing with social and religious strife, communal tensions, violence and disharmony in contemporary times. The film has a message of love and peace that is conveyed in a sensitive way.

महेश भट्ट

महेश भट्ट फिल्म निर्माताओं में बहुमुखी प्रतिभा वाले हैं। 1971 में **'मंजिले और भी हैं'** के जरिए अपने कैरियर की शुरूआत करने वाले भट्ट ने मुख्य धारा और समांतर सिनेमा दोनों में अपना स्थान बनाया। पूरी तरह से उन्होंने निजी फिल्में जैसे **'अर्थ', 'जनम'** और **'नाम'** बनायी जिनकी समीक्षकों ने भी सराहना की। **'दिल है कि मानता नहीं'** और **'हम हैं राही प्यार के'** जैसी कॉमेडी फिल्मों ने बाक्स आफिस पर कामयाबी हासिल की। मुंबई एवं दक्षिण भारत में निर्माताओं के साथ काम करते हुए। भट्ट ने अन्य कामों में भी अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया। जो लेखन और टी.वी. निर्माता तक फैला हुआ है। भट्ट ने जे. कृष्णामूर्ति पर एक पुस्तक लिखी है। टी.वी. के लिए – दुरदर्शन पर महीनों दिखाए गए **'स्वाभिमान'** और भारत के पहले अंग्रेजी सीरियल – **'ए माउथ फुल ऑफ स्काई'** का निर्माण कार्य भी किया। हिन्दी फिल्म उद्योग से जुड़ी यादों पर एक किताब जल्दी ही पेंगुन से जारी होगी।

पूजा भट्ट

पूजा भट्ट के बतौर अभिनय जीवन का श्रीगणेश महेश भट्ट की फिल्म ''**डैडी**'' से हुआ पर फिल्म निर्माण उसका पहला प्रेम है। वे तो इसे अपने जीवन का अटूट हिस्सा ही मानती है। तीन साल पहले ''**तमन्ना**'' फिल्म के साथ उनके फिल्म निर्माण कैरियर की भी शुरूआत हुई। पूजा का फिल्मों में अभिनय तो जारी हैं जैसा कि उन्होंने जे.पी. दत्ता की फिल्म ''**बॉर्डर**'' तथा अपनी स्वंय की फिल्म ''**जख्म**'' में किया पर पूजा रंगमंच तथा टेलिविजन जैसे अन्य क्षेत्रों में भी कुछ ठोस करके दिखाना चाहती है।

Mahesh Bhatt

MAHESH BHATT is easily one of the more prolific of our film-makers. Beginning his career in 1971 with **"Manzilen Aur Bhi Hain"** (which, in a precursor of things to come, was not cleared initially by the Central Board of Film Certification), Bhatt has gone on to make a mark in both mainstream and what is called parallel cinema. With stark and often highly personal films such as **"Arth", "Janam"** and **"Naam",** he has won over the critics, whereas with comedies such as **"Dil Hai Ki Maanta Nahin"** and **"Hum Hai Rahi Pyar Ke",** he has won over the box office. Having worked with producers in Mumbai as well as in southern India, Bhatt has showed his versatility, which has extended to writing (he has authored a book on J.Krishnamurthi) and television production (the long-running DD serial, **"Swabhimaan"** and India's first English language soap, **"A Mouthful of Sky"**). His memoirs, of his years in the Hindi film industry, are to be released by Penguin soon.

Pooja Bhatt

For Pooja Bhatt, who made her acting debut with father Mahesh Bhatt's film, **"Daddy"**, production has become her first love. In fact, she calls it a way of life. She beggan her production career with **"Tamanna"** three years ago and has continued it with the controversial **"Zakhm"**, directed by her father. Though she continues to act in movies, as she did in J.P. Dutta's Border and her own **"Zakhm"**, she is also exploring other arenas, such as theatre and television.

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

आत्मीयो स्वजन (बंगला)

निर्माता **धात्री फ़िल्म्स** को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक **राजा सेन** को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1998 का पुरस्कार बंगला फिल्म '**आत्मीयो स्वजन**' को एक परिवार के संवेगात्मक और नैतिक समस्याओं से जूझने के अद्‌भुत निरूपण के लिए दिया गया है। फिल्म में सम्बंधों को सुंदर बनावट, वृद्धों के लिए आशा और जवानों के लिए जीवन का उत्सव बखूबी चित्रित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

ATMIYO SWAJAN (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the producer **DHATRI FILMS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the director **RAJA SEN**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1998 is given to the Bengali film **ATMIYO SWAJAN** for vividly emotional and moral problems faced by an extended family. Weaving a rich tapestry of relationships, the film brings forth hope for the aged and celebrates life for the young.

राजा सेन

राजा सेन पश्चिमबंगाल की गंभीर फिल्म बनाने वाले निर्माताओं की नई पीढ़ी के हैं। 1993 में रवीन्द्र संगीत के जाने माने गायक सुचित्र मित्रा पर उन्होंने एक वृत्त चित्र बनाया जिसे कला और सांस्कृतिक खंड के लिए सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मिला। उन्हें आशापूर्णा देवी के कार्य पर आधारित टेली सीरियल '**सुबर्नलता**' (स्वर्ण लता) पर भी काफी सम्मान मिला है। सेन ग्रुप थियेटर मूवमेंट से जुड़े और अजितेष बंद्योपाध्याय और सोम्भू मित्रा जैसी नामी हस्तियों के साथ काम किया। 1982 में स्वतंत्र निर्देशक के रूप में उसके कैरियर की शुरूआत हुई। डॉक्यूमेंटरी फिल्म निर्माता के रूप में उनकी खासी पहचान कैंसर सेंटर और कल्याण गृह, पश्चिम बंगाल की '**होम अवे फ्राम होम**' बनाने से हुई।

Raja Sen

RAJA SEN is one of the more committed and serious film-makers in the new crop from West Bengal. His documentary on Suchitra Mitra, Bengal's noted Rabindra Sangeet singer, won the National Award in 1993 for the best film in the art and cultural segment. He had already won quite a few laurels for his tele-serial **"Subarnalata"** which was based on the daunting work of Ashapurna Devi. Sen began as an activist in the Group Theatre movement, working with stalwarts such as Ajitesh Bandopadhyaya and Sombhu Mitra. His career as an independent director took off in 1982. As a maker of documentary films, his **"Home Away From Home"** on the cancer centre and welfare home in Thakurpukur, West Bengal, has had a considerable amount of impact.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियां, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

चिंता विष्टयया श्यामला (मलयालम)

निर्माता **सी. करुणाकरण** को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **श्रीनिवासन** को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल-कल्याण, दहेज-विरोधी, नशीले पदार्थ, विकलांग कल्याण जैसे अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1998 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **'चिंता विष्टयया श्यामला'** को उसे कथानक के लिए, जिसमें अपने निकम्मे पति के कारण उठने वाली दारुण परेशानियों के विरुद्ध एक स्त्री का संघर्ष बन गया है। अंततः उसकी जीत और उद्धार सामाजिक प्रेरणा का स्रोत बनता है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC

CHINTHAVISHTAYAYA SHYAMALA (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the producer **C. KARUNAKARAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the director **SREENIVASAN**

Citation

The Award for the Best Film on Other Social Issues Such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped Etc of 1998 is given to the Malayalam film, **CHINTHAVISHTAYAYA SHYAMALA**, for its strong theme of a woman's struggle against relentless difficulties heaped upon her by a worthless husband. Her ultimate success and emancipation prove to be socially inspiring.

सी. करूणाकरण

सी. करूणाकरण एक सफल उद्यमी हैं। **'चिन्ताविष्टयया श्यामला'** का निर्माण उनका प्रथम प्रयास है।

Karunakaran

C. Karunakaran is a successful enterpreneur. **"Chinthavishtayaya Shyamala"** is his first film as producer.

श्रीनिवासन

श्रीनिवास अर्थशास्त्र में स्नातक हैं। इन्होंने साऊथ इंडियन फिल्म चेम्बर ऑफ कामर्स के फिल्म अभिनय संस्थान से अभिनय में डिप्लोमा प्राप्त किया है। ये मलयालम चित्रपट के सुप्रसिद्ध अभिनेता हैं एवं इन्होंने अनुमानत: 100 फिल्मों में अभिनय किया है जिनमें से 20 में मुख्य भूमिका निभायी है। ये लेखक भी हैं तथा 40 फिल्मों के लिए कहानी, पटकथा एवं संवाद लिख चुके हैं। इन्होंने **'वाडक्कु नोकी यात्रा'** एवं **'चिन्ताविष्टयया श्यामला'** का लेखन एवं निर्देशन किया है तथा इनमें अभिनय भी किया है। इन्हें कई राष्ट्रीय तथा केरल राज्य सरकार के पुरस्कार मिल चुके हैं।

Sreenivasan

Sreenivasan is a graduate in Economics. He received a diploma in Film Acting from the South Indian Film Chamber of Commerce, Institute of Film Acting.

He is a popular actor of Malayalam Screen, having acted as a **"Hero"** in about 20 films and portrayed a writer as well, having written story, screenplay and dailogues for about 40 films. He has written, directed and acted in two well known films **"Vadakku Nokki Yathra"** and **Chintavishtayaya Shyamala"**. He has won several Kerala State Government Awards and National Awards.

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

मल्ली (तमिल)

निर्माता : राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **संतोष सिवन** को रजत कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1998 का पुरस्कार तमिल फिल्म '**मल्ली**' को प्रकृति के प्रांचल और लयात्मक चित्रण और उन पर्यावरणीय उपादानों को संरक्षित करने की जरूरत के चित्रण के लिए दिया गया है जो पृथ्वी पर जीवन को संभव और सुंदर बनाते हैं।

AWARD FOR THE BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION/ PRESERVATION

MALLI (TAMIL)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the producer National Centre of Films for Children & Young People (N'CYP)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the director **SANTOSH SIVAN**

Citation

The Award for the Best Film on Environment Conservation/ Preservation of 1998 is given to the Tamil film, **MALLI**, for its lucid and lyrical depiction of nature and the need to save the environmental assets which have made life on this earth possible.

संतोष सिवन

संतोष सिवन भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के स्नातक हैं और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता सिनेमाटोग्राफर हैं। उन्होंने बतौर सिनेमाटोग्राफर आदित्य भट्टाचार्य की '**राख**', मणिरत्नम की '**रोजा**' और '**दलपति**' और शंकर की '**काला पानी**' में काम किया है। उन्हें मलयालम की '**पेरुमतचन**', '**काला पानी**', '**मोहिनीअट्टम**' और '**तमिल**' फिल्म '**इरूवर**' में सिनेमाटोग्राफी के लिए नेशनल एवार्ड मिले हैं। उन्होंने फिल्म डिवीजन के लिए लघु फिल्म '**स्टोरी आफ टिब्लू**' का निर्देशन किया जिसे 1988 में सर्वोत्तम लघु कथा फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। 1995 में बनी उनकी बाल फिल्म '**हैलो**' को सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म का 1996 का नेशनल एवार्ड मिला। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फीचर फिल्म '**टेररिस्ट**' को 22वें काहिरा, अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में गोल्डन पिरामिड, सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए मिला।

Santosh Sivan

SANTOSH SIVAN, a graduate of the Film and Television Institute of India, is a multiple National Award-winning cinematographer. His credits as cinematographer include Aditya Bhattacharya's **"Raakh"**, Mani Ratnam's **"Roja"** and **"Dalpathi"**, and Shankar's **"Kala Pani"**. He has won National Awards as a cinematographer for the Malayalam films **"Perumthachan"**, **"Kaalapani"**, **"Mohiniyattam"** and the Tamil film, **"Iruvar"**. He debuted as a director with a short film, **"Story of Tiblu"** for the Films Division of India, which won the National Award for Best Short Fiction Film in 1988. His children's film, **"Halo"**, for the National Council of Children and Young People, India, also won the National Award for Best Children's Film, for the year 1995. **"Terrorist"** is his first feature film as director and bagged the Golden Pyramid for Best Film, Best Director and Best Artiste at the 22nd Cairo International Film Festival.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

कभी पास कभी फेल (हिन्दी)

निर्माता : राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र को स्वर्ण कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **वीरेन्द्र सैनी** को स्वर्ण कमल तथा 30,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल फिल्म का 1998 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म '**कभी पास कभी फेल**' को उसके मनमोहक कथा बनावट के लिए दिया गया है जिसमें सभी आयु वर्ग के बच्चों का मनोरंजन होता है। फिल्म में बहुत सारे पात्रों के बावजूद सभी का अविस्मरणीय अभिनय प्रदर्शन है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

KABHI PASS KABHI FAIL (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 30,000 to the producer National Centre of Films for Children & Young People (N'CYP)

Swarna Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the director **VIRENDRA SAINI**

Citation

The Award for the Best Children's Film of 1998 is given to the Hindi film, **KABHI PASS KABHI FAIL**, for weaving an enchanting spell that can be enjoyed by children of all ages and drawing memorable performances from its large cast of characters.

वीरेंद्र सैनी

सिनेमाटोग्राफर वीरेंद्र सैनी ने पुणे फिल्म और टेलीविजन संस्थान से 1976 में डिप्लोमा लिया। वे भारत में नए सिनेमा आंदोलन से जुड़े थे। उन्होंने फीचर फिल्म और वृत्तचित्रों में सईदमिर्जा, सई परांजपे, कुंदनशाह और भीमसेन के साथ काम किया। जिन फिल्मों में उन्होंने काम किया वे कैन्स से टोक्यो और बर्लिन से सैन फ्रांसिस्को के फिल्म महोत्सवों में दिखायी जा चुकी हैं। 1990 में उन्होंने **'सलीम लंगड़े पर मत रो'** की सिनेमाटोग्राफी के लिए नेशनल एवार्ड मिला। उन्होंने टेलीविजन पर बतौर निर्देशक काम किया है। उन्होंने पंजाब में आतंकवाद पर **'गूंगी तारीख'** धारावाहिक और अयोध्या पर वृत्तचित्र भी बनाया। एक फीचर फिल्म **'कभी पास कभी फेल'** (बच्चों के लिए) बनाई जो उनके निर्देशन में पहली फिल्म है।

Virendra Saini

CINEMATOGRAPHER Virendra Saini graduated from the Film and Television Institute of India with a diploma in 1976. Very much part of the New Cinema movement in India, Saini has worked on both feature films and documentaries with Saaed Mirza, Sai Paranjpye, Kundan Shah and Bhimsain. Films he has worked on have been screened at film festivals from Cannes to Tokyo, Berlin to San Francisco. In 1990, he won the National Award for Cinematography for the film, **"Salim Langde Pe Mat Ro"**. He has worked extensively as a director in television, on serials such as **"Goongi Tarikh"** on terrorism in Punjab and a documentary on Ayodhya. **"Kabhi Pass Kabhi Fail"**, a feature film for children, is his first directorial venture.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

टी. राजीवनाथ

निर्देशक **टी. राजीवनाथ** को स्वर्ण कमल तथा 50,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1998 का पुरस्कार राजीवनाथ को मलयालम फिल्म **'जननी'** के लिए दिया गया है जिसमें विषय और उसका निर्वाह अपनी पूर्ण संगति में प्रस्तुत हुआ है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

T. RAJEEVNATH

Swarna Kamal and cash prize of Rs 50,000 to the director **T. RAJEEVNATH**

Citation

The Award for the Best Direction of 1998 is given to Rajeevnath for the Malayalam film, **JANANI**, for a warmly compassionate film where the subject and treatment are in perfect harmony.

टी. राजीवनाथ

टी. राजीवनाथ का जन्म 1951 में छंगनचेरी में हुआ था और विश्वविद्यालय से पढ़ाई पूरी करने के बाद 16 एम.एम. की लघु फिल्म से अपने फिल्म के कैरियर की शुरूआत की। उन्होंने पहली फिल्म '**थानल**' 1976 में बनाई। इस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता एवं सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार जीता। बाद में उन्होंने '**थीरांगल**', '**सूर्यान्ते मरणम्**', '**पुराप्पद**', '**कावेरी**', '**कादल थीराथु**' और '**अहम्**' बनाई। ओ.वी. विजयन की एक लघु कथा पर आधारित '**कादल थीराथु**' को 1989 में भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया। उनकी नवीन फिल्म '**जननी**' का नार्वे के ओसले ममें प्रीमियर हुआ था और उसे कई अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में आमंत्रित किया गया था। फिलहाल वह आंगल भाषा की भारत-नार्वे के सहयोग से बन रही फिल्म पर काम कर रहे हैं। उनकी शादी श्रीकुमारी से हुई है और उनके दो बच्चे हैं जिनके नाम संकरनाथ और विश्वनाथ हैं।

T. Rajeevnath

BORN in 1951 in Changanacherry, T. Rajeevnath started his film career with a 16 mm short film after university. His first film, **"Thanal"**, was made in 1976.The film won the award for Best Director, Best Actor and Best Editor. He later made **"Theerangal"**, **"Suryante Maranam"**, **"Purappad"**, **"Kaveri"**, **"Kadal Theerathu"** and **"Aham"**. While **"Kadal Theerathu"**, based on a short story by O.V. Vijayan, was selected for the Indian Panorama, 1989, his current film, **"Janani"**, was premiered in Oslo, Norway, and was invited to many international festivals. He is currently working on an English language, Indo-Norwegian venture. He is married to Sreekumary and they have two children, Sankarnath and Viswanath.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

अजय देवगन एवं ममूटी

अभिनेता **अजय देवगन** एवं **ममूटी** प्रत्येक को रजत कमल तथा 5,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1998 का पुरस्कार अजय देवगन को हिन्दी फिल्म '**जख्म**' में जर्जर व्यवस्था के खिलाफ एक क्रुद्ध व्यक्ति के नियंत्रित और गतिमान अभिनय प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

तथा

सर्वोत्तम अभिनेता का 1998 का पुरस्कार ममूटी को अंग्रेजी फिल्म '**डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर**' में एक महान राष्ट्रीय चरित्र के जीवन के सशक्त और अविस्मरणीय अभिनय प्रदर्शन के लिए दिया गया है, जोकि तीन महाद्वीपों में अनेक दशकों का फैलाव लिए है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

AJAY DEVGAN and MAMOOTTY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 5,000 to each **AJAY DEVGAN** and **MAMMOOTTY**

The Award for the Best Actor of 1998 is given to two actors Ajay Devgan in **ZAKHM** for his restrained and moving performance of an angry man exasperated with the failing system. To Mammootty in **DR BABASAHEB AMBEDKAR** for bringing to life a great national figure in a strong and memorable performance spanning several decades across three continents.

अजय देवगन

अजय देवगन एक ऐसा अभिनेता है जो गैरपारंपरिक और मुख्य धारा दोनों तरह के सिनेमा में दखल रखता है। 1991 में '**फूल और कांटे**' के जरिए अपना कैरियर शुरू करने वाले देवगन ने अपने को एक्शन हीरो के रूप में स्थापित किया और अपने पिता वीरू देवगन की विरासत को जारी रखा। साथ ही उसने '**हम दिल दे चुके सनम**' और '**जख्म**' जैसी फिल्मों में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया। व्यावसायिक फिल्मों '**इतिहास**' और '**प्यार तो होना ही था**' में वह उच्च शिखर पर रहे। उसने अपनी सहयोगी स्टार और देश की प्रमुख नायिकाओं में खास स्थान रखने वाली काजोल से शादी की।

Ajay Devgan

AJAY DEVGAN is one actor who has managed to keep his feet in both camps - mainstream and unconventional cinema. Having started his career in films with **"Phool Aur Kante"** in 1991, Devgan went on to establish himself as an action hero, continuing his father Veeru Devgan's legacy as a stunt director. But he has shown considerable flair for experimentation with films such as **"Hum Dil De Chuke Sanam"** and **"Zakhm"**, although he continues to maintain his position as a top star in commercial films such as Itihaas and **"Pyar To Hona Hi Tha"**. He is married to frequent co-star and one of the country's leading actresses, Kajol.

ममूटी

वकील से अभिनेता बने ममूटी को '**अनंतरम**' और '**विदेयन**' के लिए राष्ट्रीय सम्मान मिला है। 80 के दशक में मलयालम अभिनेताओं के नए युग में अपनी पहचान कायम करने वाले ममूटी ने सत्येन, प्रेम नजीर और मधु जैसे स्टार कलाकारों को हटाकर अपनी जगह बनायी। '**1921**' और '**ओरू वडक्कन वीरगाथा**' में उनका अभिनय अविस्मरणीय है। 200 से अधिक फिल्में कर चुके ममूटी को अभिनय के लिए 5 राज्यीय पुरस्कार मिल चुके हैं।

Mammootty

A LAWYER turned actor, Mammootty has received national acclaim for his work in films such as **"Anantaram"** and **"Vidheyan"**. He ushered in a new era of Malayalam actors in the 80s, replacing stalwarts such as Satyan, Prem Nazir and Madhu. His performances in films such as **"1921" and "Oru Vadakkan Veeragatha"** have been memorable. With over 200 films under his belt, he has won as many as five State awards for acting.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

शबाना आज़मी

अभिनेत्री **शबाना आज़मी** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1998 का पुरस्कार शबाना आज़मी को हिन्दी फिल्म '**गॉड मदर**' में पुरुष संसार में संघर्षरत स्त्री के मार्मिक और खूबसूरत अभिनय के लिए दिया गया है। बेमन से जबर्दस्ती कानून को अपने हाथों में लेने के भुक्त भोगी का अपूर्व गहनता और भव्यता से अभिनय प्रदर्शन अभिनेत्री ने किया है। जटिल भावनाओं को बेहद स्वाभाविक और गंभीरता से जिया गया है। शबाना आज़मी की अब तक की अविस्मरणीय भूमिकाओं में से एक, इस भूमिका में उन्होंने स्वर और भाव-भंगिमा का अद्‌भुत सम्मिश्रण किया है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

SHABANA AZMI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the actress **SHABANA AZMI**

Citation

The Award for the Best Actress of 1998 is given to Shabana Azmi for the Hindi film **GODMOTHER** for her dramatic and passionate portrayal of a woman forced to fight in a man's world. The actress lends a rare intensity and dignity to her portrayal as the victim forced to take the law into her hands and projects a wide range of intricate and complex emotions with ease and sincerity. Shabana Azmi flawlessly weaves expression, voice and body language and comes up with one of her most memorable performances to date.

शबाना आजमी

शबाना आजमी एक ऐसी अभिनेत्री हैं जिसने राष्ट्रीय स्तर पर एक कलाकार और समाजसेवी, दोनों रूपों में अपनी मौजूदगी को पूरी तरह से पुख्ता किया है। मुंबई के सेंट जेवियर कालेज से मनोविज्ञान में स्नातक शबाना ने भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से अभिन्य में '**सर्वोत्तम छात्रा**' का स्वर्ण पदक हासिल किया। श्याम बेनेगल निर्मित '**अंकुर**' में उनको 1974 में पहली फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ अभिन्य के लिए लगातार तीन बार 1983 में '**अर्थ**' 1984 में '**खंडहर**' और 1986 में '**पार**' के लिए कामयाबी हासिल की यानी हैट्रिक बनायी। उन्हें इटली के टेवरमिना आर्ट महोत्सव में दीप मेहता की '**फायर**' के जरिए अपने कार्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता और पहचान मिल चुकी है। पेरिस में जॉर्ज पाम्पीडु सेंटर, द स्मिथ सोनियम इंस्टीट्यूशन तथा वाशिंगटन में अमरीकी फिल्म इंस्टीट्यूट में उनके कृतित्व (कार्य) का पुनरावलोकन भी हो चुका है। इतना ही नहीं वे मांट्रियल तथा काहिरा के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों की अध्यक्षता भी कर चुकी हैं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों रोनाल्ड जॉफ की '**सिटी ऑफ ज्वॉय**' और इस्माइल मर्चेंट की '**मुहाफिज**' में अभिनय किया है। 1988 में उन्हें पद्मश्री से नवाजा गया और 1998 में वे राज्यसभा की सदस्य मनोनीत की गई।

Shabana Azmi

SHABANA AZMI is an actress who has firmly entrenched her presence on the national screen both as an artiste and activist. A graduate in psychology from St Xavier's College, Mumbai, she won the gold medal for the Best Student in Acting from the Film and Television Institute of India. She not only won a National Award for Best Acting for her very first film for Shyam Benegal in 1974, **"Ankur"**, but actually scored a hattrick when she repeated the success in 1983 with **"Arth"**, in 1984 with **"Khandahar"** and in 1985 with **"Paar"**. She has been internationally recognised for her work too, at the Taormina Arte Festival in Italy for Goutam Ghosh's Patang and the Chicago International Film Festival for Deepa Mehta's **"Fire"**. Retrospectives of her work have been held at Paris' Centre Georges Pompidou, the Smithsonian Institution and the American Film Institute in Washington. She has been chairperson of the Montreal and Cairo international film festivals and acted in international films such as Roland Joffe's **"City of Joy"** and Ismail Merchant's **"Muhafiz"**. Awarded the Padma Shri in 1988, she was nominated to the Rajya Sabha in 1998.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

मनोज वाजपेयी

सह-अभिनेता **मनोज वाजपेयी** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1998 का पुरस्कार मनोज वाजपेयी को हिन्दी फिल्म '**सत्या**' में एक सनकी अंडरवर्ल्ड के परिपूर्ण अभिनय प्रदर्शन के लिए दिया गया है। वह एक ही वक्त में अतिहिंसक और अतिसंवेदनशील हैं।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

MANOJ BAJPAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the actor **MANOJ BAJPAI**

Citation

The Award for the Best Supporting Actor if 1998 is given to Manoj Bajpai for the Hindi film, **SATYA**, for his flawless performance as an eccentric underworld figure trapped in a system, cold-blooded and vulnerable at the same time.

मनोज बाजपेयी

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास (आनर्स) स्नातक मनोज बाजपेयी ने बेरीजान, बादल सरकार, देवेंद्रराज अंकुर और एन.के. शर्मा के साथ दिल्ली रंगमंच पर 11 वर्ष कार्य किया। उन्होंने थियेटर डुसोलेल में एक फ्रेंच नाटक किया। यद्यपि उन्होंने शेखर कपूर की **'बैंडिट क्वीन'** में मानसिंह और गोविंद निहलानी की **'संशोधन'** में भवरसिंह का किरदार निभाया है, लेकिन रामगोपाल वर्मा की **'सत्या'** में मुंबई के गैंगस्टर भीकू म्हात्रे के किरदार से उन्हें एक अनूठी पहचान मिली।

Manoj Bajpai

A HISTORY Honours graduate from Delhi University, Manoj Bajpai worked on the Delhi stage for 11 years, with Barry John, Badal Sircar, Devendra Raj Ankur and N.K. Sharma. He also performed in a French play at the **"Theatre du Soleil"**. Though he played Mansingh in Shekhar Kapur's **"Bandit Queen"** and Bhanwar Singh in Govind Nihalani's **"Sansodhan"**, it was his portrayal of the Mumbai gangster Bhiku Mhatre in Ram Gopal Verma's **"Satya"** that catapulted him to iconic urban status.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

सुहासिनी मुले

सह-अभिनेत्री **सुहासिनी मुले** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1998 का पुरस्कार सुहासिनी मुले को हिन्दी फिल्म '**हू तू तू**' में बिना अपने मानवीय चेहरे को धूमिल किए जीवंत नकारात्मक भूमिका के अभिनय के लिए दिया गया है। वह दृढविश्वास के साथ अभिनय करती है और सशक्त प्रदर्शन प्रस्तुत करती है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

SUHASINI MULAY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the actress **SUHASINI MULAY**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1998 is given to Suhasini Mulay for the Hindi film, **HU TU TU**, for bringing alive an evil personality and yet retaining her human face. She comes into her own with a conviction-packed performance that encompasses pride and sorrow.

सुहासिनी मुले

सुहासिनी मुले अब भी बहुत से लोगों को मृणाल सेन की '**भुवन शोम**' में उत्पल दत्त की महबूबा के रूप में याद है लेकिन वास्तव में उन्होंने इस बीच काफी ज्यादा काम किया है। पिछले 20 वर्षों में उन्होंने शिक्षा, कृषि एवं पर्यटन जैसे विविध विषयों पर 60 से ज्यादा वृत्तचित्रों एवं वीडियो फिल्मों का निर्देशन किया है। वह मुंबई की एस.एन.डी.टी. वीमेन्स यूनिवर्सिटी की 1986 से 1988 तक सलाहकार तथा 1994 से 1997 के बीच ग्रामीण विकास मंत्रालय की सलाहकार रही है। वह 1981 में सर्वश्रेष्ठ सूचना फिल्म '**एन इंडियन स्टोरी**' के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्माता का पुरस्कार, 1987 में सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर फिल्म '**भोपाल, बियोन्ड जेनोसाइड**' के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार, 1989 में सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फिल्म '**चिट्ठी**', 1998 में सर्वश्रेष्ठ कला और संस्कृति '**द आफिशियल आर्ट फार्म**' का पुरस्कार आदि कई राष्ट्रीय पुरस्कार पा चुकी हैं। वह सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, दूरदर्शन, फिल्मस डिविजन आदि में निर्माता/निर्देशक के रूप में पैनल में हैं।

Suhasini Mulay

SUHASINI MULAY is still known to many as the woman who stole Utpal Dutt's heart in Mrinal Sen's **"Bhuvan Shome"** but she has actually much more to her credit since then. She has directed more than 60 films and videos over the past 20 years, on subjects as varied as education, agriculture and tourism. She has been a consultant to the SNDT Women's University in Mumbai between 1986 and 1988, and adviser to the Ministry of Rural Development between 1994 and 1997. She has won National Awards for producer for Best Information Film **"An Indian Story"** in 1981, for Director for Best Non-Fiction Film (Bhopal: Beyond Genocide) in 1987, Best Educational Film **"Chitthi"** in 1989, Best Art and Cultural Film **"The Official Art Form"** in 1998, and is empanelled as a producer/ director with the Films Division, Doordarshan and the Ministry of Information and Broadcasting, among others.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

बेबी श्वेता

बाल कलाकार **बेबी श्वेता** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1998 का पुरस्कार बेबी अम्मा को तमिल फिल्म '**मल्ली**' में एक छोटे बच्चे के प्रकृति के साथ सच्चे रिश्ते और पर्यावरण के क्षय पर सदमे के अद्‌भुत और झकझोर देने वाले अभिनय के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTIST

BABY SWETHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the child artist **BABY SWETHA**

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1998 is given to Baby Amma for the Tamil film, **MALLI**, for her vibrant performance of a young child's pure bonding with nature and her trauma at environmental degradation.

बेबी श्वेता

10 साल की है जी. श्वेता जो चेन्नई के होली ऐंजेल्स कांवेन्ट की कक्षा चार में पढ़ती है। अभी तक 50 विज्ञापनों, 10 टेलीसीरियल और 7 फीचर फिल्मों में अभिनय कर चुकी है। उसने अभी प्रभु और मीना के साथ एक तमिल फिल्म **'मनम वीरुम बुधे उन्नानी'** पूरी की है।

Baby Swetha

ALL of 10 years old, G. Swetha is studying in Class IV of Chennai's Holy Angels' Convent. She has already acted in more than 50 advertisements, 10 tele-serials and seven feature films. She's just done a Tamil film, **"Manam Virumbudhe Unnai",** with Prabhu and Meena.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

संजीव अभ्यंकर

पार्श्व गायक **संजीव अभ्यंकर** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1998 का पुरस्कार संजीव अभ्यंकर को हिन्दी फिल्म **'गॉड मदर'** में **'सुनो रे भइला'** गीत के लिए, जिसमें उन्होंने लोकगीत, भजन और लोकप्रिय संगीत का सफलतापूर्वक सम्मिश्रण करते हुए गीतों को प्रभावी रूप से सम्प्रेषित किया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

SANJEEV ABHYANKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the male playback singer **SANJEEV ABHYANKAR**

Citation

The Award for Best Male Playback Singer of 1998 is given to Sanjeev Abhyankar for the Hindi film, **GODMOTHER**, for the song, **SUNO RE BHAILA**, in which he successfully blends folk, bhajan and popular music to communicate the lyrics effectively.

संजीव अभ्यंकर

मेवाती घराने के कुलदीप संजीव अभ्यंकर ने बहुत छोटी उम्र में संगीत में पैठ कायम कर ली थी। 1969 में जन्में अभ्यंकर ने 8 साल की उम्र में ही भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू कर दिया। उन्होंने शुरूआत मेंअपनी मां शोभा ताई अभ्यंकर और पिता गंगाधरबुआ पिम्पालखेर (दोनों सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ) से संगीत सीखा। सबसे पहले ग्यारह साल की उम्र में पहला कार्यक्रम पेश किया। तब से अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और यूरोप में यात्रा करके प्रोग्राम पेश करते रहे। उन्होंने पुणे के सवाई गंधर्व संगीत समारोह, कलकत्ता के आई.टी.सी. सम्मेलन, नई दिल्ली के विष्णु गंधर्व पुरस्कार समारोह और राष्ट्रीय एकता के लिए **'स्पिरिट ऑफ यूनिटी कन्सर्टस'** में संगीत कार्यक्रम पेश किया। 1996 में उन्हें एफ.आई. फाउंडेशन राष्ट्रीय पुरस्कार मिला साथ ही **'माचिस'**, **'संशोधन'**, **'निदान'** और अब **'गॉड मदर'** में पार्श्व गायन किया।

Sanjeev Abhyankar

As a young torchbearer of the Mewati gharana, Sanjeev Abhyankar showed remarkable flair for music from an early age. Born in 1969, he started learning Indian classical music when he was eight. Initially, he learnt from his mother, Shobhatai Abhyankar, and Pandit Gangadharbua Pimpalkhare, both eminent musicologists. He gave his first public performance when he was 11 and since then he has travelled throughout the US, Canada, Australia and Europe. He has performed at Pune's Sawai Gandharva Sangeet Samaroh, Calcutta's ITC Sammelan, New Delhi's Vishnu Digambar Paluskar Samaroh and the Spirit of Unity Concerts for National Integration. He has won the FIE Foundation National Award for Excellence in 1996 and done playback singing for **"Maachis"**, **"Sansodhan"**, **"Nidaan"** and now **"Godmother"**.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

अलका याग्निक

पार्श्व गायिका **अलका याग्निक** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1998 का पुरस्कार अलका याग्निक को हिन्दी फिल्म '**कुछ-कुछ होता है**' के लिए दिया गया है। इस विषय-आधारित गीत की प्रस्तुति में उन्होंने विभिन्न मनोभावों और संवेगों को ढाला है और फिल्म के प्रभाव में बहुत योगदान दिया है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

ALKA YAGNIK

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the female playback singer **ALKA YAGNIK**

The Award for the Best Female Playback Singer of 1998 is given to Alka Yagnik for the Hindi film song, **KUCH KUCH HOTA HAI**. Her rendering of this theme sing brings out the different moods and emotions and adds greatly to the impact of the film.

अलका याग्निक

कलकत्ता में जन्मी अल्का याग्निक ने अपनी मां शुभा याग्निक से संगीत सीखा। **एच.एम.वी.** ने उसका पहला एलबम दस वर्ष की आयु में ज्ञान प्रकाश के गीतों पर बनाया। 1980 में उसने '**मेरी बहू अल्का**' में गाना गाकर बतौर पार्श्व गायिका अपना कैरियर शुरू किया। इसमें राजेश रोशन ने संगीत दिया था। इसके बाद कल्याण जी आनन्दी जी, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल जैसे जाने माने संगीत निर्देशकों के साथ काम किया। लावारिस का '**मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है**' गाकर उसने अपना कैरियर आगे बढ़ाया। फिर '**तेजाब**', '**कयामत से कयामत तक**', '**साजन**', '**दीवाना**' और '**करण अर्जुन**' में गाने गाए। उसने तीन बार सर्वोत्तम महिला गायिका का फिल्म फेयर एवार्ड जीता। ये एवार्ड उसे '**तेजाब**', '**खलनायक**' और '**परदेस**' के लिए मिले उसे '**हकीकत**' के लिए स्क्रीन एवार्ड और '**हम हैं राही प्यार के**' का गाना '**घूंघट की आड़ से**' के लिए नेशनल एवार्ड मिला।

Alka Yagnik

BORN in Calcutta, Alka Yagnik learned music from her mother, Shubha Yagnik. At the age of ten, she cut her first album for **"HMV"** with a composition by Gyan Prakash Gosh. The year 1980 saw her begin her career as a playback singer in the film, **"Meri Bahu Alka".** The music was by Rajesh Roshan. She then worked with veteran music directors such as Kalyanji Anandji and Laxmikant Pyarelal. The song **"Mere Angne Mein Tumhara Kya Kaam Hai"** from **"Lawaris"** was the start of her career from where she went on to sing in films such as **"Tezaab", "Qayamat Se Qayamat Tak", "Saajan", "Deewana"** and **"Karan Arjun".** She has won the Filmfare award for the Best Female Singer thrice, for **"Tezaab", "Khalnayak"** and **"Pardes".** She also won the Screen award for **"Haqueeqat"** and the National Award for the song **"Ghunghat ki Aad Se"** from **"Hum Hain Rahee Pyaar Ke".**

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

संतोष सिवन

कैमरामैन **संतोष सिवन** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार
फिल्म प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला **जेमिनी कलर लैबोरेट्री** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1998 का पुरस्कार संतोष सिवन को हिन्दी फिल्म '**दिल से**' के लिए दिया गया है। उन्होंने भव्य लैंडस्केपों और स्थापत्यों के साथ-साथ मानवीय हलचल को उसके मोहक आकर्षण के रूप में विभिन्न मनोदशाओं और रंगों में सहजता से प्रस्तुत किया है जोकि एक सिनेमाई परिपूर्णता के उच्च मापदण्ड का सूचक है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

SANTOSH SIVAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the cameraman **SANTOSH SIVAN**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the laboratory processing the film, **GEMINI COLOUR LABORATORY**

Citation

The Award for the Best Cinematography of 1998 is given to Santosh Sivan for the Hindi film, **DIL SE**. His camera travels across spectacular landscapes and architecture and through bustling humanity with great seductive charm. Colours and moods are created and disrupted with equal ease in a film which sets a high standard of cinematic perfection.

संतोष सिवन

संतोष सिवन भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के स्नातक हैं और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता सिनेमाटोग्राफर हैं। उन्होंने बतौर सिनेमाटोग्राफर आदित्य भट्टाचार्य की '**राख**', मणिरत्नम की '**रोजा**' और '**दलपति**' और शंकर की '**काला पानी**' में काम किया है। उन्हें मलयालम की '**पेरुमतचन**', '**काला पानी**', '**मोहिनीअट्टम**' और '**तमिल**' फिल्म '**इरूवर**' में सिनेमाटोग्राफी के लिए नेशनल एवार्ड मिले हैं। उन्होंने फिल्म डिवीज़न के लिए लघु फिल्म '**स्टोरी आफ टिब्लू**' का निर्देशन किया जिसे 1988 में सर्वोत्तम लघु कथा फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। 1995 में बनी उनकी बाल फिल्म '**हैलो**' को सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म का 1996 का नेशनल एवार्ड मिला। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फीचर फिल्म '**टेररिस्ट**' को 22वें काहिरा, अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में गोल्डन पिरामिड, सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए मिला।

Santosh Sivan

SANTOSH SIVAN, a graduate of the Film and Television Institute of India, is a multiple National Award-winning cinematographer. His credits as cinematographer include Aditya Bhattacharya's **"Raakh"**, Mani Ratnam's **"Roja"** and **"Dalpathi"**, and Shankar's **"Kala Pani"**. He has won National Awards as a cinematographer for the Malayalam films **"Perumthachan"**, **"Kaalapani"**, Mohiniyattam and the Tamil film, **"Iruvar"**. He debuted as a director with a short film, **"Story of Tiblu"** for the Films Division of India, which won the National Award for Best Short Fiction Film in 1988. In 1995, his children's film, **"Halo"**, for the National Council of Children and Young People, India, also won the National Award for Best Children's Film, 1996. **"Terrorist"** is his first feature film as director and bagged the Golden Pyramid for Best Film, Best Director and Best Artiste at the 22nd Cairo International Film Festival.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

अशोक मिश्र

पटकथा लेखक **अशोक मिश्र** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1998 का पुरस्कार अशोक मिश्र को हिन्दी फिल्म '**समर**' के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने शहरी/देहाती, अमीर/गरीब, सत्ता सम्पत्ति/निचले तबके के जटिल विरोधाभासों के उकेरने के लिए एक अद्वितीय संरचना की है। समकालीन भारतीय जीवन में शहरी अवबोधात्मक अंतदृष्टि के द्वारा हास्य और विडंबनाओं के गहरे क्षणों को सरल कथा में बुना गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

ASHOK MISHRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the screenplay writer **ASHOK MISHRA**

Citation

The Award for the Best Screenplay for 1998 in given to Ashok Mishra for the Hindi film, **SAMAR**, where he has used a unique structure to explore the complex contradictions of urban/rural, rich/poor, powerful/downtrodden, in a simple storyline laced with poignant moments of humour and irony for a perceptive insight into contemporary Indian life.

अशोक मिश्र

अशोक मिश्र ने समाज शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने कई फिल्में और धारावाहिक लिखे हैं। उनमें सईद मिर्जा की फिल्म '**नसीम**' और वीरेन्द्र सैनी की फिल्म '**कभी पास कभी फेल**' तथा श्याम बेनेगल के '**भारत एक खोज**' और आमोल पालेकर के '**मृगनयनी**' धारावाहिक प्रमुख हैं। उन्होंने फिल्म और रंगमंच दोनों में अभिनय किया है। मसलन फिल्म '**समर**' और धारावाहिक '**रजनी**'। उनको हबीब तनवीर और एम.के. रैना जैसे नामी लोगों के साथ काम करने का मौका मिला है। नई दिल्ली के मार्डन स्कूल में ड्रामा टीचर रह चुके श्री मिश्र ने '**वेटिंग फॉर गॉडॉट**' और '**मर्चेंट ऑफ वेनिस**' समेत 40 से अधिक नाटकों का निर्देशन भी किया है।

Ashok Mishra

ASHOK MISHRA is both a post-graduate in sociology as well as a diploma from the National School of Drama. He has written several films and serials, prominent among them **"Naseem"** by Saaed Mirza and **"Kabhi Pass Kabhi Fail"** by Virendra Saini, and Shyam Benegal's **"Bharat Ek Khoj"** and Amol Palekar's **"Mrignayanani"**. He has acted in films and on stage too - in films such as **"Samar"** and serials such as **"Rajani"**, and with veterans such as Habib Tanvir and M.K. Raina. A former drama teacher at Modern School, New Delhi, Mishra has directed more than 40 plays, among them **"Waiting for Godot"** and **"Merchant of Venice"**.

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन पुरस्कार

एच. श्रीधर

अंतिम मिक्सड ट्रैक के पुर्न रिकार्डिंग करने वाले **एच. श्रीधर** को रजत कमल एवं 10 हजार रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 का सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन पुरस्कार हिन्दी फिल्म **'दिल से'** के लिए एच. श्रीधर को दिया गया है। फिल्म में ट्रैक पर उन्होंने दृश्यों की तरह ध्वनि को केंद्रित किया और एक असाधारण लय की रचना की।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

H. SRIDHAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the re-recordist of the final mixed track, **H. SRIDHAR**

Citation

The Award for the Best Audiography of 1998 is given to H. Sridhar for the Hindi film, **DIL SE**, for capturing sounds as varied as the visuals and creating an unusual rhythm on the track.

एच. श्रीधर

गणित स्नातक एच. श्रीधर को इलेक्ट्रानिक्स और संगीत में खास रुचि है। 1988 में साउंड इंजीनियर के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत की। साउंड इंजीनियर के रूप में उन्होंने दक्षिण भारतीय सिनेमा के मणिरत्नम, के. बालाचन्दर, कमल हासन, प्रियदर्शन और रामगोपाल वर्मा सरीखे बड़े निर्देशकों के साथ काम किया। उन्होंने ए.आर. रहमान के लिए गानों और बैकग्राउंड म्यूजिक तैयार करने में पूरी-पूरी मदद की है। '**रोजा**', '**जेंटलमैन**', '**कादालन**', '**थिरूडा थिरूडा**' और '**इरूवर**' जैसी फिल्मों में ध्वनि आलेखन का श्रेय श्रीधर को जाता है। 1994 में '**महानदी**' फिल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन का एवार्ड दिया गया। भारत की पहली डॉल्बी स्टीरियो फिल्म '**रंगीला**' के ध्वनि सृजन में भी उनका खास योगदान है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों - जार्ज हैरीसन, पंडित रविशंकर, जाकिर हुसैन और एल. शंकर के लिए साउंड मिक्सिंग का काम किया।

H. Sridhar

H. SRIDHAR is a mathematics graduate with a keen interest in electronics and music. He started his career as a sound engineer in 1988 and has worked closely in that capacity with some of the finest names in southern cinema, among them Mani Ratnam, K. Balachandar, Kamal Hasan, Priyadarshan and Ramgopal Varma. He has engineered all the songs and background score for A.R. Rahman and has some groundbreaking films to his credit **"Roja"**, **"Gentleman"**, **"Kadhalan"**, **"Thiruda Thiruda"**, and **"Iruvar"**. He was given the National Award for Best Audiography in 1994 for the film Mahanadi. He was also instrumental in creating the sound for India's first Dolby Stereo film to be produced in India, **"Rangeela"**. He has also mixed sounds for international artistes such as George Harrison, Pandit Ravi Shankar, Zakir Hussain and L. Shankar.

सर्वश्रेष्ठ संपादन पुरस्कार

रेणु सलुजा

संपादिका : **रेणु सलुजा** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए नकद का पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 के सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार **रेणु सलुजा** को हिन्दी फिल्म **'गॉड मदर'** के लिए दिया जाता है। फिल्म में उन्होंने इतनी कुशलता एवं नवीन तरीके से संपादन किया कि इससे फिल्म को एक कलात्मक स्पर्श मिल जाता है। उनके चुस्त संपादन से फिल्म के मनोभावों एवं ध्वनि का ऐसा संगम हुआ कि फिल्म के कथ्य में एक नई जान आ गई।

AWARD FOR THE BEST EDITING

RENU SALUJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the editor **RENU SALUJA**

Citation

The Award for the Best Editing of 1998 is given to Renu Saluja for the Hindi film, **GODMOTHER**, for her smart, slick and innovative editing which adds an artistic touch to the film. Her pacing of the cuts enhances the emotions and the sound overlaps lend a remarkable lucidity to the narration.

रेणु सलूजा

पुणे के फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट में फिल्म संपादन का डिप्लोमा लेकर रेणु सलूजा ने 50 से अधिक फीचर फिल्में की हैं। उन्होंने सईद मिर्जा की '**अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है**', कुंदन शाह की '**जाने भी दो यारों**', विधु विनोद चोपड़ा की '**परिन्दा**' तथा गोविंद निहलानी की '**अर्धसत्य**' जैसी कालजयी फिल्मों का संपादन किया है। हाल ही में उन्होंने देव बेनेगल की '**स्प्लिट वाइड ओपेन**', नागेश कुकुनूर की '**रॉकफोर्ड**' और शाजी एन. करूण और सुखवंत दादा की डाक्यूमेंटरी '**रिवर्स ऑफ इंडिया**' के संपादन का काम पूरा किया है। उन्होंने '**ये है जिंदगी**' और '**स्वाभिमान**' जैसे टी.वी. धारावाहिकों के लगभग 1,000 एपीसोड संपादित किए हैं। उन्हें इससे पहले 1989 में **परिंदा**, 1991 में **सरदार** तथा 1992 में धारावी के संपादन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

Renu Saluja

WITH a diploma in film editing from the Pune-based Film and Television Institute of India, Renu Saluja has handled over 50 feature films. Among the many modern masterpieces she has edited are Saaed Mirza's **"Albert Pinto Ko Gussa Kyon Aata Hai"**, Kundan Shah's **"Jaane Bhi Do Yaaron"**, Vidhu Vinod Chopra's **"Parinda"** and Govind Nihalani's **"Ardh Satya"**. She has just completed work on Dev Benegal's **"Split Wide Open"**, Nagesh Kukunoor's **"Rockford"**, and Shaji N. Karun and Sukhawant Dadda's documentary **"Rivers of India"**. She has also edited about 1,000 episodes of several TV series, among them **"Yeh Hai Zindagi"** and **"Swabhimaan"**. She has been awarded the National Award for Best Editing thrice before for **Parinda** in 1989, **Sardar** in 1991 and **Dharavi** in 1992.

सर्वश्रेष्ठ कला निर्देशन पुरस्कार

नितिन देसाई

कला निर्देशक : **नितिन देसाई** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

नितिन देसाई को अंग्रेजी भाषा की फिल्म '**डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर**' को दिया जाता है। फिल्म में पूर्व बिजली युग से लेकर आजादी के बाद के भारत के लंबे समय का चित्रण हुआ है। इनडोर शूटिंग से आउटडोर शूटिंग, ग्रामीण से शहरी परिवेश, भारतीय से विदेशी लोकेशन एवं सेट से भारतीय लोकेशन तक फिल्म सहजता से आगे बढ़ती जाती है और कहीं कोई फर्क नहीं दिखता। कैमरे के त्रुटिरहित कार्य से कला निर्देशक ने मानों अकेले ही फिल्म में इन पूरे सालों एवं विभिन्न भावों को साकार कर दिया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION

NITIN DESAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the art director **NITIN DESAI**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1998 is given to Nitin Desai for the English film, **DR BABASAHEB AMBEDKAR**. The film covers a large time span from the pre-electricity age to post-Independent India. The scenes, both indoor and outdoor, move effortlessly from rural to urban, Indian to foreign locales and blur the distinction between sets and locations. With the aid of faultless camerawork, the art direction almost singlehandedly creates the entire period mood and feel of the film.

नितिन देसाई

मंसूर खान की '**जो जीता वही सिंकदर**' से स्टूरला गनरसन की '**सच ए लांग जर्नी**', गोविंद निहलानी की '**द्रोहकाल**' और जान कैम्पियन की '**होली स्मोक**' तक कई फिल्मों में नितिन देसाई का कला निर्देशन देखा जा सकता है। उन्होंने संजय लीला भंसाली की '**खामोशी**' के बैक ड्राप डिजाइन में मदद की जिसका सेट गोवा में लगाया गया था। गुलजार ने आतंकवाद ग्रस्त पंजाब पर '**माचिस**' बनायी जिसके सेट श्री देसाई ने बनाए। उन्होंने '**चाणक्य**' और '**गीता रहस्य**' जैसे धारावाहिकों के सेट भी बनाए। नितिन देसाई अब तक दो स्क्रीन और दो फिल्म फेयर एवार्ड जीत चुके हैं। उन्हें '**सच ए लांग जर्नी**' के सर्वोत्तम कला निर्देशक के लिए जिनी एवार्ड के लिए नामजद किया गया था।

Nitin Desai

FROM Mansoor Khan's **"Jo Jeeta Wohi Sikandar"** to Sturla Gunnarson's **"Such a Long Journey"**, Govind Nihalani's **"Drohkaal"** and Jane Campion's **"Holy Smoke"**, Nitin Desai has worked as art director on several films. He has helped design the backdrop of Sanjay Leela Bhansali's **"Khamoshi"**, which was set in Goa, and handled the sets for Gulzar's **"Maachis"**, which was based in terrorist-stricken Punjab. He has also done the sets for television serials such as **"Chanakya"** and **"Geeta Rahasya"**. He has already won two Screen and two Filmfare awards, and was nominated for the Genie awards for Best Art Director for **"Such a Long Journey"**.

सर्वश्रेष्ठ वेशभूषाकार पुरस्कार

एस.बी. सतीशन

वेशभूषाकार : **एस.बी. सतीशन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 का सर्वश्रेष्ठ वेशभूषाकार का पुरस्कार एस.बी. सतीशन को मलयामल फिल्म '**दया**' के लिए दिया जाता है जो बिना किसी स्पष्ट समय, जगह एवं शिल्प के उल्लेख के एक फैंतासी फिल्म है। यह फिल्म उच्च गुणवत्ता वाली डिजाइन एक रूपता की मिसाल है और फिल्म में उपयोग में लाए गए कपड़े उनकी बुनाई एवं प्रिंट असरकारी प्रभाव छोड़ते हैं।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

S. B. SATHEESAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the costume designer **S. B. SATHEESAN**.

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1998 is given to S. B. Satheesan for the Malayalam film, **DAYA**, a fantasy without any concrete reference to known periods, locales and styles. The film achieves a high quality design integrity and the use of fabrics, weaves and prints leaves a lasting impression.

एस.बी. सतीशन

30 साल की उम्र में ए. सतीशन एस.बी. ने मलयालम सिनेमा के वरिष्ठ हस्तियों के साथ काम कर लिया था। 1996 में उन्होंने अदूर गोपाल कृष्णन की '**कथा पुरुषन**' पर काम किया। 1997 में उन्होंने राजीव अंचल निर्देशित '**गुरु**' के लिए सर्वश्रेष्ठ कास्ट्यूम डिजाइनिंग का पुरस्कार प्राप्त किया। 1998 में वेणु की '**दया**' के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने सुरेश कृष्ण की '**भारतीयम**' और सिद्धीकी की '**फ्रैंड्स**' में बतौर डिजाइनर काम किया।

S.B. Satheesan

AT the age of 30, A. Satheesan S.B. has already worked with the masters of Malayalam cinema. In 1996, he worked on Adoor Gopalakrishnan's **"Kathapurushan"**. In 1997, he won the State award for Best Costume Designing for **"Guru"**, directed by Rajeev Anchal. And in 1998, he repeated that feat when he triumphed with Venu's **"Daya"**. Among the other films he has worked as designer are Suresh Krishna's **"Bharatheeyam"** and Siddique's **"Friends"**.

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन पुरस्कार

विशाल भारद्वाज

संगीत निर्देशक (संगीत एवं पार्श्व संगीत) **विशाल भारद्वाज** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 के सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पुरस्कार विशाल भारद्वाज को हिन्दी फिल्म **'गॉड मदर'** के लिए दिया जाता है। फिल्म के कथा और संगीत में लोक एवं आधुनिक संगीत का अद्‌भुत मिश्रण है तथा गुजरात की मिट्‌टी की सौंधी महक बरकरार है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

VISHAL BHARDWAJ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the music director (songs and background music score) **VISHAL BHARDWAJ.**

Citation

The Award for the Best Music Direction of 1998 is given to Vishal Bhardwaj for the Hindi film, **GODMOTHER**, where the narrative of the film and music bring about an excellent blend of folk and modern. It retains the fragrance of the soil of Gujarat.

विशाल भारद्वाज

विशाल भारद्वाज का संगीत निर्देशक के रूप में काम गुलजार की '**माचिस**' से गोविन्द निहलानी की '**संशोधन**', रामगोपाल वर्मा की '**सत्या**' से वेणु की '**दया**' तक दिखाई देता है। 1965 में जन्में विशाल दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक हैं। विशाल के कार्य में भाषा बाधक नहीं होती।

Vishal Bhardwaj

VISHAL BHARDWAJ has worked as music director for films ranging from Gulzar's **"Maachis"** to Govind Nihalani's **"Sansodhan"**, Ram Gopal Varma's **"Satya"** to Venu's **"Daya"**. Born in 1965, he is a graduate from Delhi University. Vishal's work has no language barriers.

सर्वश्रेष्ठ गीतकार पुरस्कार

जावेद अख्तर

गीतकार **जावेद अख्तर** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 के सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार जावेद अख्तर को हिन्दी फिल्म '**गॉड मदर** ' के गाने '**माटी रे माटी रे**' के लिए दिया गया है। इस गाने में लोक भाषा एवं भावनाओं का प्रमाणिक मिश्रण है। इसके लगभग सारे गाने देशभक्ति, आवेग पूर्ण, सहज एवं विचारोतेजक हैं।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

JAVED AKHTAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the lyricist **JAVED AKHTAR**

Citation

The Award for the Best Lyrics of 1998 is given to Javed Akhtar for the Hindi film, **GODMOTHER**, for the song, **MATI RE MATI RE**, for its authentic blend of dialect and emotion. A song of patriotism and passion, the lyrics are lucid and thought-provoking.

जावेद अख्तर

जाने माने उर्दू शायर जान निसार अख्तर के बेटे जावेद अख्तर ने पिछली 7 पीढ़ियों से चली आ रही अपने परिवार की लिखने पढ़ने की परंपरा को आगे बढ़ाया। कैम्ब्रिज स्कूल, भोपाल से स्कूली शिक्षा और सोफिया कालेज, भोपाल से स्नातक होने के बाद जावेद अख्तर का कृतित्व ऐसे स्क्रिप्ट राइटर, गीतकार और शायर के रूप में देखा जा सकता है, मुंबई फिल्म उद्योग में जिसका कोई जोड़ नहीं है। सलीम खां के साथ मिलकर **'एंग्री यंग मैन'** की छवि का सृजन करने वाले जावेद ने उर्दू शायरी में लोगों की रूचि फिर से जगायी। अलग-अलग तरह के कलाकारों के साथ मिलकर काम करने वाले जावेद ने सूफी कलामों के उस्ताद गायक स्वर्गीय नुसरत फतेह अली, गजल किंग जगजीत सिंह के साथ काम किया है। उन्होंने 1980 में शायरी की शुरूआत की और उनका पहला दीवान **'तरकश'** के अब तक 6 एडीशन छप चुके हैं। उन्हें पद्मश्री से भी नवाजा जा चुका है।

Javed Akhtar

SON of well-known Urdu poet, Jan Nisar Akhtar, Javed Akhtar has carried forward the family tradition, where writing can be traced back to seven generations. Having done his schooling from Cambridge School, Bhopal, and graduation from Safiya College, Bhopal, Javed Akhtar's work as a script writer, lyricist and poet is unrivalled in the Mumbai film industry. The creator, along with Salim Khan, of the **"Angry Young Man image"**, he has been instrumental in reviving popular interest in Urdu poetry. He has collaborated with a variety of artistes, from the late Sufi maestro Nusrat Fateh Ali Khan, to the current ghazal king, Jagjit Singh. Married to actress Shabana Azmi, he forms one-half of a dynamic power couple. Having started writing poetry in 1980, his first collection, **"Tarkash"**, is already in its sixth edition. He has already won the Padma Shri.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

किछु संलाप किछु प्रलाप

निर्माता : **मै. दृश्यकाव्य** को रजत कमल एवं 12,500 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **अशोक विश्वनाथन** को रजत कमल एवं 12,500 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 का विशेष जूरी का पुरस्कार बंगला फिल्म **'किछु संलाप किछु प्रलाप'** के शानदार निर्देशन के लिए अशोक विश्वनाथ को दिया जाता है। प्रयोगात्मक प्रयास के रूप में फिल्म असाधारण है और छद्म-बुद्धिजीवी जनित मूल्य-व्यवस्था पर एक तीखा व्यंग्य है।

SPECIAL JURY AWARD

KICHHU SANLAP KICHHU PRALAP

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 12,500/- to the producer **M/S DRISHYAKAVYA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 12,500/- to the director **ASHOKE VISWANATHAN**

Citation

The Special Jury Award of 1998 is given to the Bengali film **KITCHHU SANLAP KITCHHU PRALAP**, brilliantly directed by Ashoke Viswanathan. The film is extraordinary in its experimental effort and works as a satire on our pseudo-intellectual dominated value system.

अशोक विश्वनाथन

कलकत्ता के सत्यजीतराय फिल्म और टेलीफिल्म संस्थान के सहायक प्रोफेसर तथा जादवपुर विश्वविद्यालय के वैकल्पिक प्रवक्ता अशोक विश्वनाथन पुणे फिल्म संस्थान से फिल्म निर्देशन में स्नातक हैं। सेंट जेवियर कालेज के गणित स्नातक विश्वनाथन ने 40 से अधिक फिल्मों और टी.वी. प्रोग्रामों का निर्देशन किया है। उन्हें **'शून्य ठेके शुरू'** के लिए 1993 का सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तथा उनके अंग्रेजी सीरियल **'थ्रू द एजस'** को दूरदर्शन पर 9 हिस्सों में दिखाया गया। कलकत्ता के अंग्रेजी रंगमंजीय परंपरा के सक्रिय सदस्य श्री विश्वनाथन सिनेमा पर जर्नलों तथा अखबारों में नियमित लेखन भी करते हैं।

Ashoke Viswanathan

ASSISTANT Professor at the Calcutta-based Satyajit Ray Film and Television Institute and occasional lecturer at the Jadavpur University, Ashoke Viswanathan is a graduate in film direction from the Film and Television Institute of India. A mathematics graduate from St Xavier's College, Calcutta, he has directed more than 40 films and TV programmes. **"Sunya Theke Suru"** won the National Award for Best First Film for the year 1993 and the made a nine-part English serial for Doordarshan. Theatre **"Through The Ages"**, Viswanathan has worked in very film form possible. An active member of Calcutta's English theatrical tradition, he is also a regular writer on cinema in journals and newspapers.

सर्वश्रेष्ठ विशेष प्रभाव सृजन पुरस्कार

एस.टी. वेंकी

विशेष प्रभाव सृजक : **एस.टी. वेंकी** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 के सर्वश्रेष्ठ प्रभाव सृजन का पुरस्कार वेंकी को तमिल फिल्म '**जीन्स**' के लिए दिया जाता है जिसमें उन्होंने कम्प्यूटर पर बेहद प्रयोगात्मक एवं उल्लेखनीय विशेष प्रभाव की रचना की। जुड़वां चरित्रों के एनीमेशन आकर्षक एवं जटिल हैं।

AWARD FOR THE BEST SPECIAL EFFECTS

S.T. VENKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the creator **S. T. VENKI.**

The Best Special Effects Award of 1998 is given to the creator Venki for the Tamil film, **JEANS**, for his extremely innovative and spectacular special effects created on the computer. The animation of the twin characters is fascinating and intriguing.

एस. टी वेंकी

एस. टी. वेंकी चेन्नई के गर्वनमेंट कॉलेज ऑफ आर्टस एंड क्राफ्ट्स से फाइन आर्टस में स्नातकोत्तर हैं। 44 वर्षीय वेंकी विशेष प्रभाव देने के मामले में अद्वितीय हैं और उन्होंने एनीमेशन और कंप्यूटर ग्राफिक्स में 14 वर्ष बिताए हैं। **अंजलि** (1990), **जेंटलमैन** (1990) एवं **इंडियन** (1996) जैसी फिल्मों जिसके लिए उन्होंने काम किया है तकनीकी प्रभाव के लिए काफी विख्यात हैं।

S.T. Venki

S.T. Venki is a post-graduate in fine arts from the Government College of Arts and Crafts, Madras. The 44-year-old is a whiz at special effects and has spent 14 years now in animation and computer graphics. Some of the films he has worked on have been regarded as ground-breaking for their technical effects, among them **"Anjali"** (1990), **"Gentleman"** (1990) and **"Indian"** (1996).

सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशन पुरस्कार

वृन्दा

नृत्य निर्देशक **वृन्दा** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 के सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशक का पुरस्कार वृन्दा को मलयालम फिल्म '**दया**' में अरबी नृत्य के ऊर्जाशील एवं नवीन प्रयोग के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHY

BRINDA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the choreographer **BRINDA**

Citation

The Award for the Best Choreography of 1998 is given to Brinda for the Malayalam film, **DAYA**, for the spirited and novel adaptation of an Arabic dance.

वृन्दा मेनन

वृन्दा मेनन ने आठ वर्ष की आयु से नृत्य करना शुरु किया और 15 से कैरियर। इन्होंने सर्वप्रथम सी. सुन्दर द्वारा निर्देशित तमिल फिल्म '**उल्लतई अलित**' में नृत्य निर्देशन किया। उसके बाद वृन्दा तमिल, मलयालम, तेलुगू, कन्नड़ एवं हिन्दी की 150 फिल्मों में नृत्य निर्देशन कर चुकी हैं। जिनमें '**इरुवर**', '**अरुणाचलम**', '**पादयप्प**', '**मेल पीली**', '**दया**' इत्यादि शामिल हैं। इन्हें दो बार फिल्म फेयर पुरस्कार, स्क्रीन एवार्ड तथा सिनेमा एक्सप्रैस एवार्ड मिल चुके हैं। ये अपनी बहन के साथ '**कला कलालय**' नाम से अपना नृत्यदल भी चलाती हैं।

Brinda

Brinda Menon, youngest daughter of K. Gopal Menon hails from Vaikom District, Kerala. She started her dance from the age of 8 and her career started from 15. She first directed dances in a tamil movie **"Ullathai Allitha"** directed by C. Sunder. After that she has done 150 films in Tamil, Malayalam, Telugu, Kannada and Hindi including **"Iruvar", "Arunachalam", Padaiyappa, "Mail Peeli", "Daya"** etc. She has received Filmfare Award (twice), Screen Awards, Cinema Express Award etc. She and her sister have their own troupe of dancers named as **"Kala's Kalayala"** for stage shows.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

कुहखल

निर्माता **डॉल्फिन कम्युनिकेशन** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार। निर्देशक **जाहुन बरूआ** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की असमिया की सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार कुहखल को ब्रितानी भारत की ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाणिक चित्रण के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

KUHKHAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer **DOLPHIN COMMUNICATIONS.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **JAHNU BARUA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 1998 is given to **KUHKHAL** for its authentic portrayal of a historical event of British India.

जाहुन बरूआ

जाहुन बरूआ फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान के स्नातक हैं। उनकी प्रथम कथाचित्र **अपरूपा** (असमिया) को 1983 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। '**पापोरी**' और '**हलोधिआ चोराए बाओधन खाई**' भी सराहनीय थी। '**हालोधिआ चोराए बाओधन खाई**' को 1988 के राष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण कमल तथा लोकार्नो अंतराष्ट्रीय फिल्म समारोह में रजत पदक प्राप्त हुआ था। 1989 में टोकियो फिल्म समारोह में इस फिल्म को सर्वोत्तम एशियाई फिल्मों में दर्शाया गया था। 1990 में जाहनू ने '**बनानी**' और उसके बाद '**फिरिंगोती**' बनाई। '**फिरिंगोती**' को 1992 में रजत कमल मिला। उनकी फिल्म '**हखागोरोलोई बोहु दूर**' को रजत कमल एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। फिल्मों से पहले वे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन में काम करते थे। वे आजकल जेवियर इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन, मुंबई में सिनेमा विषय को पढ़ाते भी हैं।

Jahnu Barua

Jahnu Barua is a graduate in film direction from Film and Television Institute of India. His first feature was **"Aparoopa"** film which won the National Award in 1983. His other film include **"Papori"** and **"Halodhia Choraye Baodhan Khai"** (The Catastrophe). The latter won him the Swarna Kamal at the National Film Festival, 1988 and Silver Leopard at the Locarno International Film Festival, 1988. It was also in the best of Asia Section of the Tokyo International Film Festival, 1989. He has also made **"Banani"** (The Forest) in 1990. Then he made **"Firingoti"** (The Spark) which has also won him the Rajt Kamal at the National Film Festival, 1992. His film **"Hakhagoroloi Bahu Door"** has won Rajat Kamal and several international awards. Before making feature film, Jahun Barua worked in the Indian Space Research Organisation (ISRO) making educational programmes for Mumbai television. He also teaches cinema at the Xavier Institute of Communications, Mumbai.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

असूख

निर्माता : **डी. रामानायडु** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **ऋतुपर्णो घोष** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ बंगला फीचर फिल्म का पुरस्कार '**असूख**' को दिया जाता है। इस फिल्म में एक फिल्म अभिनेत्री के जीवन के किसी संवेदनशील मोड़ पर आई दुविधा का चित्रण है। अपने प्रेमी द्वारा ठुकराई यह अभिनेत्री अपने जीवन में आए बहुस्तरीय दबावों से कैसे निपटती है, यह फिल्म उसी का सशक्त चित्रण करती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

ASOOKH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer
D. RAMA NAIDU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director
RITUPARNO GHOSH

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1998 is given to **ASOOKH** profiling the dilemma of a film actress, at a delicate point in her life. Rejected by her lover, **ASOOKH** is an internalised story of an actress coming to terms with multiple pressures in her life.

डी. रामानायडू

दक्षिण भारतीय सिनेमा के किसी संस्थान से कम नहीं हैं डी. रामानायडू। उन्होंने अपने 33 वर्ष के कैरियर के दौरान तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और हिन्दी की 100 फिल्में बनायी हैं। आंध्रप्रदेश के ग्राम करमचेड़ के एक किसान से चावल मिल मालिक बने रामानायडू 1962-63 में एक्टर बनने के लिए चेन्नई आए। लेकिन वे सुरेश प्रोडक्शनस बैनर के तहत निर्माता बने। 1983 में उन्होंने अपना कार्यस्थल हैदराबाद बना लिया, जब राज्य सरकार ने 5 एकड़ के प्लाट की पेशकश की जहां उन्होंने एक खूबसूरत '**रामानायडू स्टूडियो**' बनाया। उनके बेटे सुरेश बाबू निर्माता हैं और वेंकटेश एक हीरो हैं दोनो मिलकर उनकी विरासत को जारी रखे हुए हैं।

ऋतुपर्णो घोष

लघु फिल्म निर्माता और पेंटर सुनील घोष के पुत्र ऋतुपर्णो घोष ने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करने के बाद एक एडवरटाइजिंग एजेंसी में 'कॉपीराइटर' बन गए। 1991 में उनकी नेशनल कौंसिल ऑफ चिल्ड्रन एंड यंग पीपुल की एक बाल फिल्म से शुरुआत हुई। लेकिन, 1994 में '**19 अप्रैल**' जिसमें अपर्णा सेन व देवाश्री राय जैसे कलाकार थे, से उनकी पहचान कायम हुई। इसे 1995 में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। इसे हांगकांग, हवाई और सैन फ्रांसिस्को के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में आमंत्रित किया गया। 1996 में बनी उनकी अगली फिल्म '**दहन**' मध्यम वर्ग का सिनेमा साबित हुई और रजत कमल मिला। 1998 में बर्लिन समारोह में '**फ़ोरम फार यंग सिनेमा**' में '**दहन**' का प्रदर्शन हुआ। इसे सर्वश्रेष्ठ बंगला फीचर फिल्म तथा एक फ़िप्रेसी पुरस्कार मिला। ऋतुपर्णो घोष ने अपनी नई फिल्म '**असूख**' 1998 में बनायी। आजकल वे अपनी पांचवी फीचर फिल्म '**बाड़ीवाली**' पर काम कर रहे हैं।

D. Rama Naidu

NOTHING short of an institution in the world of southern cinema, D. Rama Naidu has produced almost 100 films in Telugu, Tamil, Kannada and Hindi in a career spanning 33 years. From a farmer in Karamchedu in Andhra Pradesh to a rice mill owner, Rama Naidu has come a long way after moving to Chennai in 1962-63 to become an actor. But it was as a producer, under his banner Suresh Productions, that he made it big. He shifted his operations to Hyderabad in 1983 when the State government offered him a five acre plot on which he set up the state-of-the-art Ramanaidu Studio. His sons Suresh Babu, a producer, and Venkatesh, a highly-acclaimed actor, have continued his legacy.

Rituparno Ghosh

SON of short-film maker and painter Sunil Ghosh, Rituparno Ghosh started as a copywriter in an advertising agency after acquiring a post-graduate degree in economics. He made his debut in 1991, with a children's film produced by the National Council of Children and Young People, but it was his 1994 film, **"Unishe April"**, starring Aparna Sen and Debashree Roy which won him the best feature film award at the National Film Awards ceremony in 1995. It was invited to international film festivals at Hong Kong, Hawaii, and San Francisco. His next film, **"Dahan"**, made in 1996, remained true to the new middle class cinema that he was establishing. That film fetched him a Silver Lotus for Best Screenplay. It also won the Best Bengali Feature Film. **Dahan** was shown at the "Forum for Young Cinema" at the Berlinale, 1998 and also the FIPRESCI award. Rituparno Ghosh's latest feature film, **"Asookh"**, was completed in 1998. He is now working on his fifth feature film, **"Bariwali"**. In the midst of this, he also finds time to edit the popular Bangla film fortnightly, Anandalok.

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र पुरस्कार

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर

निर्माता **सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्माता **महानिदेशक (सूचना) महाराष्ट्र सरकार** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक **डॉ. जब्बार पटेल** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की अंग्रेजी भाषा की सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार **'डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर'** को दिया जाता है। यह भारत के महानतम नेताओं में एक बाबा साहेब की सामाजिक एवं राजनैतिक जिंदगी के पहलुओं पर एक प्रमाणिक एवं शोधपरक फिल्म है।

BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

DR BABASAHEB AMBEDKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer Ministry of Social Justice & Empowerment, Govt. of India.
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the producer : Director General (Information), Govt. of Maharashtra.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director, **DR JABBAR PATEL**

Citation

The Award for the Best Feature Film in English of 1998 is given to **DR BABASAHEB AMBEDKAR**, an authentic and well researched biopic which probes the political and social aspects of the life of one of the greatest leaders of India.

जब्बार पटेल

पेशे से चिकित्सक (डाक्टर) जब्बार पटेल ने बी.जी. मेडिकल कालेज (पुणे विश्वविद्यालय) से स्नातक होने के बाद मुंबई से बाल स्वास्थ्य का डिप्लोमा किया। 1971 में अपनी स्त्री रोग विशेषज्ञ पत्नी मणिबेन पटेल के साथ प्रैक्टिस करने लगे। लेकिन, वे हमेशा थियेटर में सक्रिय रहे। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त **'घासीराम कोतवाल'** के प्रदर्शन के लिए पूरे यूरोप और अमरीका का दौरा किया। उनकी फिल्म **'सामना'** को 1975 में बर्लिन फिल्म महोत्सव में आधिकारिक प्रवेश मिला। **'सिंहासन'** और **'उम्बार्ता'** आधुनिक भारतीय सिनेमा के लिए मील का पत्थर हैं। इसमें खासतौर पर स्व. स्मिता पाटिल की अविस्मरणीय भूमिका है। उन्होंने कई वृत्तचित्र भी बनाए, जैसे **'महाराष्ट्र : 25 वर्ष'**, **'एस.एम. जोशी'**, **'तर्कतीर्थ'** और **'पी.एल. देशपांडे'**। इससे उनका सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों को महत्व देना परिलक्षित होता है।

Jabbar Patel

A MEDICAL doctor by profession, Jabbar Patel, a graduate of the B.J. Medical College, University of Poona, did a diploma in child health from Mumbai, and started practising in 1971 with his gynaecologist wife, Maniben Patel. But he had always been actively involved in theatre. His internationally-acclaimed production, Ghasiram Kotwal, toured throughout Europe and the US. His first film, **"Samanaa"** in 1975, was the official entry to the **"Berlin"** Film festival, followed by a musical made for the Mangeshkar family. **"Simhasan"** and **"Umbartha"** remain milestones in modern Indian cinema, the latter especially for an outstanding performance by the late Smita Patil. He has also made documentaries *such as* ***Maharashtra: 25 Years, S.M. Joshi, Tarkatirtha*** *and* ***P.L. Deshpande***, which reflect the importance he gives to the social and cultural point of view.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

गॉड मदर

निर्माता : **ग्रामको फिल्म्स** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **विनय शुक्ला** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फीचर फिल्म का पुरस्कार **'गॉड मदर'** को दिया जाता है। यह फिल्म समसामयिक सत्ता व्यवस्था से ताल्लुक रखती है और सहजता से हिंसा, भ्रष्टाचार और आवेग का चित्रण करती है। फिल्म का संगीत, कला निर्देशन और डायलाग के संयुक्त प्रभाव से लोकप्रिय भारतीय सिनेमा के एक अति सशक्त क्षेत्रीय पात्र के किरदार का उदय हुआ है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

GODMOTHER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producers **GRAMCO FILMS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **VINAY SHUKLA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1998 is given to the film **GODMOTHER**. The film deals with the contemporary power structure and confronts violence, corruption and extreme passion with ease. The music, art direction and the dialogues combine to create a strong ethnic character setting a new trend in popular Indian cinema.

विनय शुक्ल

राजस्थान विश्वविद्यालय से साहित्य स्नातक होने के बाद विनय शुक्ल ने फिल्म और टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में स्वर्ण पदक पाया। 1977 में उन्होंने शबाना आज़मी और आमोल पालेकर अभिनीत **'समीरा'** का निर्देशन किया। 1983 में उसे अंतर्राष्ट्रीय फिल्ममहोत्सव के पैनोरमा सेक्शन के लिए चुना गया था, पर कानूनी अड़चनों के कारण रिलीज नहीं किया जा सका। अभी उनकी फिल्म **'गॉड मदर'** भी विवादों में फंस गई थी। उन्होंने फिल्म लेखन का भी काम किया। 1979 में संजीव कुमार वाली **'हम पांच'** के अतिरिक्त 25 फिल्में लिखीं। इनमें से डिम्पल - राज बब्बर की **'ऐतबार'** और अनिल कपूर -तब्बू की **'विरासत'**भी है।

Vinay Shukla

A GRADUATE in literature from Rajasthan University and a gold medallist in film direction from FTII, Vinay Shukla made his directorial debut in 1977 with **"Sameera"** starring Shabana Azmi and Amol Palekar. It was selected in the Panorama section of the International Film Festival of 1983 but it couldn't be released due to legal problems, a taste of things to come for Shukla, whose **"Godmother"** was also plagued by controversies. He made his debut as a writer in 1979 with **"Hum Panch"** starring Sanjeev Kumar, and has worked on 25 films subsequently. Among those he has written are: **"Aitbaar"** starring Dimple and Raj Babbar, and **"Virasat"** starring Anil Kapoor and Tabu.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

हूमाले

निर्मात्री : **उषा राव के.एस.** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **नागतीहल्ली चन्द्रशेखर** को रजत कमल एवं 20 हजार रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 का सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फिल्म का पुरस्कार '**हूमाले**' को दिया गया है। फिल्म में एक विधवा द्वारा अन्जान क्षेत्र और विषम परिस्थितियों में आतंक पर कठिन विजय प्राप्त करने का सशक्त चित्रण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

HOOMALE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer **USHA RAO K.S.**

Rajt Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **NAGATHIHALLI CHANDRASHEKAR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1998 is given to **HOOMALE** for its strong statement about a widow surmounting severe trials in an unfamiliar land and circumstances and finding love against a background of Terrorism.

उषा राव के.एस.

बी.काम करने के बाद उषा राव के.एस. ने 1985 में शादी की। 1986 में उनके पति अनन्त की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई जो अपने ढाई महीने का बच्चा छोड़ गए। लेकिन यह जीवन का अंत नहीं था। उन्होंने 1988 में एक पोस्टल कर्मचारी नदहल्ली श्रीपद राय से शादी कर ली। इसके साथ ही उन्होंने अपने पति के साथ विधवा कल्याण के लिए एक संगठन **'परिवर्तन'** शुरू किया। अब तक अपने संगठन के जरिए 13 विधवाओं के घर बसाए हैं। उन्होंने **'हूमाले'** का निर्माण किया जो विधवा पुनर्विवाह पर आधारित है। इस फिल्म में इलायाराजा का संगीत है। दादा साहेब फाल्के एवार्ड विजेता डॉ. राजकुमार ने एक गीत गाया है। राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार विजेता नागतीहल्ली चन्द्रशेखर ने इस फिल्म को निर्देशित किया है। हूमाले को कन्नड़ चित्र प्रेमीशाला संघ ने सेकेंड बेस्ट फिल्म कहा है और इसके नायक रमेश, नायिका सुमन नागरवार और निर्देशक चन्द्रशेखर को भी एवार्ड मिल चुके हैं।

नागतीहल्ली

नागतीहल्ली चन्द्रशेखर अध्यापक के बेटे हैं और अपने कैरियर की शुरूआत कहानी और उपन्यास लेखन से की। चन्द्र नाम से मशहूर 1991 में **'उन्डू होडा कोंडू होडा'** को सर्वोत्तम कथा के लिए राज्य सरकार का पुरस्कार उन्हें मिला। यह चन्द्र के निर्देशन में पहली फिल्म थी। 1994 की **'कोत्रेशी कनसु'** 1996 में **'अमरीका! अमरीका!'** को कन्नड़ की सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

Usha Rao K.S.

AFTER completing her B.Com, Usha Rao K.S. got married in 1985. In 1986, she lost her husband, Ananth, in a road accident and was left with a two-and-a-half month old baby. But that wasn't the end of her life. She married Nadahalli Sripad Rao, a young postal employee, in 1988, and started a new organisation with her husband for the welfare of widows, called **"Parivarthana"**. As many as 13 widow marriages have been arranged through their organisation, which has produced **"Hoomale"**, also based on widow remarriage. While Ilayaraja has scored the music, Dadasaheb Phalke Award-winner Dr Rajkumar has sung a song, and National and State Award-winner Nagathihalli Chandrashekhar has directed the film. Already, **Hoomale** has been recognised as the second best film by the Kannada Chitra Premigala Sangha, and the hero, Ramesh, heroine, Suman Nagarkar, and director, Chandrashekar, have all bagged awards.

Nigathihalli Chandrashekar

NAGATHIHALLI CHANDRASHEKHAR, popularly known as Chandru, is the son of a teacher and began his career as a writer of short stories and novesl. His maiden directorial venture in 1991, **"Undu Hoda Kondu Hoda"**, won a State award for best story, while both **"Kotreshi Kanasu"** in 1994 and **America! America!** in 1996 won National Awards for Best Regional Film in Kannada.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

अग्निसाक्षी

निर्माता : **मैसर्स सृष्टि फिल्म्स** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **श्यामा प्रसाद** को रजत कमल एवं 20 हजार रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म का पुरस्कार '**अग्निसाक्षी**' को दिया जाता है। यह फिल्म बड़े प्रमाणिक तरीके से ब्राह्मणों की युगों से चली आ रही सामाजिक प्रथा की विवेचना करती है। फिल्म की कहानी में एक ब्राह्मण महिला - थेथी के निर्भीक कार्यों का चित्रण है जो अंततोगत्वा संन्यास ले लेती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

AGNISAAKSHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer **M/S SRISHTI FILMS**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **SHYAMA PRASAD**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Malayalam for 1998 is given to **AGNISAAKSHI**. It deals, in a very authentic fashion, with the social ambience prevalent among the Brahmins ages ago. The story unfolds through the bold adventures of one Brahmin woman _ Thethi _ who finally takes "sanyas".

आर. श्यामा प्रसाद

कामन वेल्थ की स्कालरशिप पर इंग्लैंड की हुल युनिवर्सिटी से भी मीडिया स्टडीज में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त 39 वर्षीय आर. श्यामा प्रसाद ने कई पुरस्कार हासिल किए हैं। फीचर फिल्म '**अग्निसाक्षी**' के साथ टेलीफिल्म '**नीलवारियुन्नु**' को 1996 बुल्गारिया गोल्डेन क्रेस्ट टी.वी. फेस्ट प्लोवडिव का विशेष जूरी एवार्ड मिला और उन्हें 1993 व 1994 में ओनिडा पिनाकल से सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मिला। 1998 में अग्निसाक्षी को 9 पुरस्कार मिले जिसमें एक सर्वोत्तम निर्देशक भी था।

Dr. Shyama Prasad

WITH a master's degree in media studies from Hull University, England, on a Commonwealth scholarship, 39-year-old R. Shyamaprasad has many award-winning works to his credit, though Agnisakshi is his featue film debut. His telefilm, **Nilavariyunnu**, won the special jury prize at the Golden Crest TV fest held at Plovdiv in Bulgaria in 1996 and the Onida Pinnacle National Award for Best Director in 1993 and 1994. **Agnisaakshi** won him nine prizes at the Kerala State film awards in 1998-among them was Best Director.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार

तु तिथे मी

निर्मात्री : **स्मिता तलवलकर** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **संजय सूरकर** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म का पुरस्कार '**तू तिथे मी**' को दिया जाता है। इस फिल्म में एक पुराने एवं बिखरते संयुक्त परिवार की दुर्दशा पर एक नवीन एवं आकर्षक प्रेम कहानी के जरिए प्रकाश डाला गया है। मोहन जोशी एवं सुहाश जोशी की शानदार अदाकारी फिल्म का उल्लेखनीय पक्ष है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MARATHI

TU TITHE MEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer **SMITA TALWALKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **SANJAY SURKAR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Marathi of 1998 is given to **TU TITHE MEE** which sheds light on the plight of the old and the crumbling of the joint family in the novel and entertaining format of a love story. Beautiful performances by Mohan Joshi and Suhas Joshi are the highlights of the film.

स्मिता तलवलकर

स्मिता तलवलकर ने 1992 में मुंबई दूरदर्शन पर न्यूजरीडर के रूप में कैरियर की शुरूआत की और साथ ही स्टेज और फिल्मों में अभिनय भी किया। 1989 में उन्होंने अपनी प्रोडक्शन कंपनी शुरू की और कई फिल्मों का निर्माण किया। **'कलात-नकलात'** और **'चौकट राजा'**। उन्होंने **'सावत माजीलड़की'** का निर्माण और निर्देशन किया जिसे 5 राज्य पुरस्कार मिले।

Smita Talwalkar

SMITA TALWALKAR started her career as a newsreader in Mumbai Doordarshan in 1972 and went on to act on stage and in films. Beginning her own production company in 1989, Talwalkar has produced several films, **"Kalat Nakalat"** and **"Chaukat Raja"**; and produced and directed **"Savat Mazi Ladki"**, which won five State awards.

संजय सूरकर

संयज सूरकर फाइन आर्ट्स में स्नाकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद 20 वर्षों से मराठी थियेटर में सक्रिय हैं। उन्होंने कई मराठी नाटकों का निर्देशन किया। **'तो एक क्षण'** उन्होंने 1990 में टीवी. सीरियल **'नो प्रॉब्लम'** का निर्देशन किया। उनके निर्देशन में मराठी फिल्म **'चौकट राजा'** बनी जिसे 1991 में इंडियन पैनोरामा के लिए चुना गया। उनकी फिल्म **'अपाली मानस'** को 1992 में राज्य का वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला। उनकी नयी फिल्म **'तू तिथे मी'** को 3 स्क्रीन अवार्ड, 5 फिल्म फेयर और 11 राज्य पुरस्कार मिल चुके हैं।

Sanjay Surkar

SANJAY SURKAR, a post graduate in fine arts, has been working in Marathi theatre for the last 20 years. Director of several Marathi plays such as **"To Ek Kshan"** in 1988 and TV serials such as **"No Problem"** in 1990, he also directed **"Chaukat Raja"**, a Marathi film which was selected for the Indian Panorama in 1991. His next film, **"Apali Mans"**, won the State's Best Film of the Year Award in 1992. His latest film, **"Tu Tithe Mee"** has already won three Screen awards, five Filmfare awards and 11 State awards.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

नंदन

निर्माता : **राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केंद्र** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

निर्देशक : **ए.के. बीर** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ उड़िया फिल्म का पुरस्कार **'नंदन'** को इसकी सहज कहानी एवं यर्थाथवादी पर्यावरण के चित्रण के लिए दिया है। **'नंदन'** एक निर्धन शिशु की अकांक्षाओं एवं उन्हें पूरा करने में उसके माता-पिता की सीमाओं का चित्रण करती है। पारिवारिक मूल्यों एवं प्रेम की भौतिक व्यवस्था पर जीत को फिल्म में बहुत प्रभावकारी तरीके से पेश किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ORIYA

NANDAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer National Centre of Films for Children & Young People (N'CYP)
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **A.K. BIR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Oriya for 1998 is given to the film **NANDAN** for its simple story and realistic milieu. **NANDAN** portrays the aspiration of a poor child and the constraints of his parents in fulfilling them. The triumph of family values and love over material gloss has universal appeal.

ए.के. बीर

ए.के. बीर ने उड़ीसा से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् सिनेमाटोग्राफी का कोर्स करने के लिए सन् 1969-70 में पुणे के टेलीविजन इंस्टीट्यूट में दाखिला ले लिया। उसके बाद के वर्षों में बीर ने तमाम विज्ञापन, फिल्मों, वृतचित्रों आदि की फोटोग्राफी से लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचा। उन्हें सन् 1974 में सर्वश्रेष्ठ सिनेमाटोग्राफी का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा 27 डाऊन के लिए भी बी.एफ.जे.ए. पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बीर को उनके "**घरौंदा**" तथा "**ओडामोनडू**", "**कल्ला उल्ली**", फिल्मों में किये उच्चकोटि के काम पर कई पुरस्कार दिये गये। उनकी बतौर निर्माता निर्देशक के पहली फिल्म "**आदी मीमांसा**" थी। यह फिल्म 1992 में आई। इसे दर्शकों ने खूब पसंद किया। "**आदी मीमांसा**" को किसी निर्देशक की पहली फिल्म का अरविंदम पुरस्कार भी मिला था। इसे टोक्यो तथा बंगलौर अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी दिखाया गया था। बीर ने "**लावण्य प्रीति**" नाम की एक बाल फिल्म का भी निर्देशन किया। इस फिल्म को सन् 1993 के उदयपुर अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में राष्ट्रीय जूरी समीक्षक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। उन्होंने "**आरण्यक**" नाम की फ़ीचर फिल्म का भी निर्देशन किया। "**आरण्यक**" को मुंबई फिल्म समारोह में दिखाया भी गया था। बीर की "**शेष दृष्टि**" फिल्म को सर्वश्रेष्ठ उड़िया फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इस फिल्म ने सिंगापुर अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रतियोगी वर्ग में शिरकत भी की।

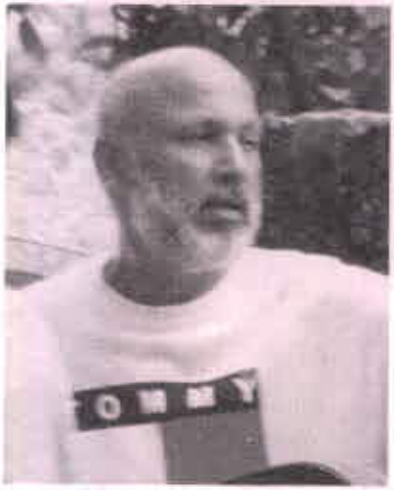

A.K. Bir

AFTER graduation from Orissa, A.K. Bir took up cinematography, enrolling at the Film and Television Institute of Pune in 1969-70. Since then he has shot several advertising films, documentaries and features. He won the National Award for Best Cinematography in 1974 and also the BFJA award for cinematography for **27 *Down***. He has collected other awards for films such as **"Gharonda"** and **"Oondanondu Kalladali"**. He directed and produced his first film, **"Adi Mimansa"** in 1992, which was highly appreciated and won the Aravindan Award for the Best First Film of a Director. It was also selected for the Tokyo International Film Festival and the International Film Festival in Bangalore. He also directed the children's film, **"Lavanya Preeti"**, which received the National Award and International Jury's Critic Award at the Udaipur International Film Festival, 1993. He directed a feature film, **"Aranyaka"**, which was selected and screened at the Mumbai International Film Festival. His ***Shesha Drushti*** received the National Award for Best Feature Film in Oriya and participated in the competition section in the Singapore International Film Festival.

सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र पुरस्कार

शहीद-ए-मोहब्बत बूटा सिंह

निर्माता : **मंजीत मान** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक : **मनोज पुंज** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म का पुरस्कार '**शहीद-ए-मुहब्बत बूटा सिंह**' को दिया गया है। फिल्म में भारत में बंटवारे से प्रभावित बूटा सिंह के दुख एवं संताप का संवेदनशील चित्रण है। गुरदास मान सिंह ने बूटा सिंह की भूमिका में जान फूंक दी है । फिल्म बंटवारे के बाद की दुखद स्थिति की विवेचना करती है और मनुष्य द्वारा बनाई गई सीमा के पार प्रेम एवं मानवता का संदेश देती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN PUNJABI

SHAHEED-E-MOHABBAT BOOTA SINGH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer **MANJEET MAAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **MANOJ PUNJ**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Punjabi of 1998 is given to **SHAHEED-E-MOHABBAT BOOTA SINGH** for its sensitive depiction of pain and sorrow perpetrated by the Partition of India on Boota Singh. The role is played to perfection by Gurdas Maan and the film reflects the aftermath of a tragedy. It delivers a message of love and humanity, reaching far beyond man-made borders.

मन्जीत मान

दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक 37 वर्षीया मनजीत मान कई प्रोजेक्टों की निर्मात्री हैं। उन्होंने दूरदर्शन के लिए **'पॉप टाइम'** और टिप्स तथा सुपर कैसेट जैसी कई कंपनियों के लिए म्यूजिक वीडियो बनाए हैं। उन्होंने पंजाबी फिल्मों, **'दुश्मनी दी अग'**, **'गबरू पंजाब दा'** और **'की बनू दुनिया दा'** में अभिनय किया है। उन्होंने गायक, अभिनेता गुरदास मान के कैरियर को संवारने का काम किया और फिर उन्हीं से शादी भी की।

Manjeet Maan

THE 37-year-old graduate from Delhi University, Manjeet Maan, has produced a number of projects such as **"Poptime"** for Doordarshan and music videos for companies such as Tips and Super Cassettes. She has also acted in Punjabi feature films such as **"Dushmani di Aag"**, **"Gabroo Punjab Da"** and **"Kee Banoo Duniya Da"**. She also manages the career of singer/actor Gurdas Maan, to whom she is married.

मनोज पुंज

मनोज पुंज को नाटक, धारावाहिक तथा म्यूजिक वीडियो जैसे अलग-अलग क्षेत्रों में निर्देशन का सात साल का अनुभव है। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से आर्ट्स में ग्रेजुएट पुंज ने फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे में चेकोस्लोवाकिया और फ्रांस दूतावासों द्वारा आयोजित फिल्म मूल्यांकन कार्यशालाओं में भाग लिया। उनके कई प्रोजेक्टों में गुरदास मान का अलबम, **'चकलो-चकलो'**, पहली पंजाबी वीडियो फिल्म **'मेहर मित्तल नाइट'** तथा चंडीगढ़ के कई नाटक शामिल हैं। सूरज सनीम लिखित **'शहीदे मोहब्बत बूटा सिंह'** उनकी पहली फिल्म है।

Manoj Punj

MANOJ PUNJ has over seven years experience in the industry, ranging from directing plays, serials to music videos. A graduate in arts from Punjab University, Chandigarh, he has attended workshops on film appreciation conducted by the Film and Television Institute of Pune, the embassies of Czechoslovakia and France, among others. Among the variety of projects he has helmed are: Gurdas Maan's album, **Chaklo Chaklo**, the first Punjabi video film, **Meher Mittal Night**, a number of plays in Chandigarh and his first film, written by Suraj Sanim, **Shaheed-e-Mohabbat Boota Singh.**

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

हाउसफुल

निर्माता : **मैसर्स बाइस्कोप फिल्म फ्रेमर्स** को रजत कमल एवं 20 हजार रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **आर. पार्थेपन** को रजत कमल एवं 20 हजार रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म का पुरस्कार '**हाउसफुल**' को दिया जाता है। फिल्म में एक थिएटर मैनेजर और उसकी अपने दर्शकों के साथ आत्मीय संबंधों की कहानी है। थिएटर में शो के समय एक बम होने का पता चलता है लेकिन ठीक समय पर उसे हटाकर थिएटर में सिनेमा देख रहे दर्शकों की जान बचा ली जाती है। फिल्म आतंकवाद के खिलाफ सशक्त रूप से अपील करती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

HOUSE FULL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer Messers Bioscope Film Framers.
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **R. PARTHEPAN.**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tamil for 1998 is given to **HOUSE FULL** telling the story of a theatre manager and his passionate bonding with his audience. A bomb is discovered in the theatre during show time but removed in the nick of time saving the lives of those in the audience. In denouncing violence, the film makes a strong statement against terrorism.

आर. पार्थेपन

41 वर्षीय आर. पार्थेपन ने 20 फिल्मों में अभिनय किया है तथा 10 फिल्में निर्देशित की हैं। चेन्नई निवासी इस एक्टर ने 1989 में अपनी पहली फिल्म **'पूथिया पाथिया'** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार और तमिलनाडु राज्य का पुरस्कार प्राप्त किए हैं। 1998 में **'भारती कन्नम्मा'** के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का एवार्ड **'सिनेमा एक्सप्रेस'** और तमिलनाडु राज्य ने उन्हें दिया।

R. Parthepan

FORTY-ONE-YEAR-OLD R. Parthepan has acted in 20 films and directed 10. The Chennai-based actor has won a National Award and the Tamil Nadu Government State Award for his first film, **"Puthia Paathai"** in 1989, the Cinema Express Award for Best Actor in 1998 and the Tamil Nadu Government State Award for Best Actor in 1998 for the film, **"Bharathi Kannamma"**.

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

थोली प्रेमा

निर्माता : **जी.वी.जी. राजू** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **ए. करुणाकरन** को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फीचर फिल्म का पुरस्कार '**थोली प्रेमा**' को दो दोस्तों की असामान्य प्रेम कहानी के चित्रण के लिए दिया जाता है। फिल्म के आखिर में वे दोनों एक दूसरे के प्रति अपनी भावनाओं का इजहार करते हैं। फिल्म की विषयवस्तु आम फिल्मों से हटकर है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

THOLI PREMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer **G.V.G. RAJU**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **A. KARUNAKARAN**

Citation

The Award for Best Feature Film in Telugu for 1998 is given to **THOLI PREMA**, an unusual love story about two friends who confess their feelings for each other at the end of the film, which is a break from the run-of-the-mill film.

जी.वी.जी. राजू

37 वर्षीय वाणिज्य स्नातक जी.वी.जी. राजू तीन फिल्में पहले ही बना चुके हैं। 1999 का आंध्र प्रदेश राज्य गोल्डेन नंदी अवार्ड भी अपनी फिल्म '**थोली प्रेमा**' के लिए जीत चुके हैं।

G.V.G. Raju

G.V.G. RAJU is a 37-year-old commerce graduate who has produced three films earlier. He has already won the Andhra Pradesh State Golden Nandi Award for Best Picture in 1999 for **"Tholi Prema"**.

ए. करूणाकरन

'**थोली प्रेमा**' का निर्देशन तथा उसकी स्क्रीन प्ले लिखने वाले 33 वर्षीय ए. करूणाकरन ने वास्तव में मैकेनिकल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा किया है। उसकी पहली फिल्म को आंध्र प्रदेश राज्य की ओर से सर्वश्रेष्ठ फिल्म निर्देशक सर्वश्रेष्ठ स्क्रीन प्ले और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का नंदी पुरस्कार मिल चुका है।

A. Karunakaran

THE screenplay writer and director of **"Tholi Prema"**, the 33-year-old A. Karunakaran is actually a diploma in mechanical engineering. His first film has already won the Andhra Pradesh State Nandi Awards for Best Film Director, Best Screenplay and Best New Director.

विशेष उल्लेख

1. कान्टे कुतुरने कानु फिल्म के लिए निर्माता निर्देशक **डॉ. दासरि नारायण राव।**
2. फिल्म अंत: पुरम में शानदार अभिनय के लिए अभिनेता **प्रकाश राज** को।
3. कन्नेजुथी पोट्टम थोदु में अच्छे अभिनय के लिए अभिनेत्री **मंजू वारियर** को।

प्रशस्ति

फीचर फिल्मों की जूरी वर्ष 1998 के लिए तेलुगू फिल्म **'कान्टे कुतुरने कानू'** का लिंग भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाने के लिए विशेष उल्लेख करती है। जूरी तेलुगू फिल्म **'अंत: पुरम'** में अब भी महम युग मानसिकता में रह रहे एक सनकी सामंत की भूमिका में शानदार अभिनय के लिए प्रकाश राज का विशेष उल्लेख करती है।

SPECIAL MENTION

1. Dr Dasari Narayana Rao, director, producer for the film, **KANTE KUTURNE KANU**
2. Prakash Raj, actor, for his performance in the film, **ANTHAHPURAM**
3. Manju Warrier, actress, for **KANNEZUTHI POTTUM THOTTU**

Citation

The feature film jury makes a special mention for 1998 for the Telugu film, **KANTE KUTURNE KANU**, for taking a stand on gender discrimination of Prakash Raj in the Telugu film **ANTHAHPURAM** for his wholesome performance as an obsessive feudal lord still living in medieval times of **MANJU WARRIER** in the Malayalam film, **KANNEZUTHI POTTUM THOTTU**, for her subdued and consistent performance in several films.

प्रकाश राज

34 वर्षीय प्रकाश राज मूलत: कर्नाटक के रहने वाले हैं। वे चेन्नई में बतौर अभिनेता, लेखक तथा निर्देशक के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने बहुत बड़ी संख्या में नाटकों में काम किया। प्रकाश इन दिनों दक्षिण भारत की चारों भाषाओं में बन रही फिल्मों में काम कर रहे हैं। उन्हें तमिलनाडु तथा आंध्र प्रदेश सरकारों द्वारा कलाई मिन्नी तथा नंदी जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। ये सम्मान प्रकाश को फिल्म '**कल्की**' तथा '**इरुवर**' में यादगार काम के लिए दिए गए। मणिरत्नम की '**इरुवर**' में इनके अभिनय को बहुत सहारा गया। इन्हें इसके लिए केलीफोर्निया के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में निमंत्रण तथा पिछले वर्ष सर्वोत्तम सहअभिनेता का पुरस्कार भी मिला।

मंजू वारियर

मंजू वारियर मलयामल चित्रपट की जानी मानी अभिनेत्री हैं। '**ई पुड़युम काडन्नु**' इनकी पहली फिल्म थी। केवल दो वर्षों के अल्पकाल में ही इन्होंने कई मलयालम फिल्मों में अभिनय किया है एवं दर्शकों के हृदय में अपना स्थान बना लिया है। इन्हें अब तक अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें से तीन केरल राज्य सरकार के पुरस्कार एवं केरल फिल्म क्रिटिक पुरस्कार शामिल हैं।

Prakash Raj

THIRTY-FOUR-YEAR-OLD Prakash Raj is a native of Karnataka but has been working as an actor/writer/director in Chennai. He has performed in more than 2,500 shows of Indian plays and Western adaptation. He is now active in all the four southern languages, having won the prestigious **"Kalaimamani"** award from the Tamil Nadu Government for his performance in **"Kalki"** and the Nandhi award from the Andhra Government for **"Gunshot"** and **"Andhapuram"**. His performance in Mani Ratnam's **"Iruvar"** won him many plaudits, as also an invitation to attend an international festival at UCLA, California. He also won the Best Supporting Actor at the 45th National Film Awards in 1997 for the "Iruvar" role.

Manju Warrier

MANJU WARRIER is a well known actress of Malayalam cinema. **Eepuzhyum Kadannu** was her first film. She has won the hearts of cinegoers in the short span of only two years. She has won several prizes including three Kerala State Awards and Kerala Film critics' Award.

दसारी नारायण राव

पचास वर्षीय दसारी नारायण राव ने बचपन में ही तेलुगु नाटकों में अभिनय करना शुरू कर दिया था। उनका फिल्मों में प्रवेश बतौर लेखक के 1972 में हुआ। अपनी पहली फिल्म थत्ता - मानवडू को लिख तथा निर्देशित करके राव ने अपनी प्रतिभा का लोहा मानवा लिया। यह सन् 1973 की बात है। तब से वे तेलुगू, हिन्दी तथा कन्नड़ भाषाओं में 140 फिल्मों को निर्देशित कर चुके हैं। वे फिल्मों में संवाद तथा गीत लिखने का काम अब भी करते हैं। राव न साथ ही साथ खासे लोकप्रिय अभिनेता के रूप में भी अपनी पहचान बना ली है। उन्होंने 26 फिल्मों का निर्माण भी किया। उन्हें उनकी इन तमाम उपलब्धियों के बल पर नंदी पुरस्कार तथा आंध्र विश्व विद्यालय ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से नवाजा। यह सम्मान उन्हें तेलुगू सिनेमा तथा संस्कृति के प्रसार के लिए किये गये उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया। राव को सन् 1991 में आंध्र सरकार ने रघुपति वैंकेया पुरस्कार दिया। वे आठ सालों तक दक्षिण भारत फिल्म निर्देशक संघ तथा दक्षिण भारत फिल्म कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष भी रहे।

Dasari Narayana Rao

FIFTY-YEAR-OLD Dasari Narayana Rao started off as an actor in Telugu plays at an early age but joined films as a writer in 1972. After he wrote and directed his first Telugu film, **"Thatha-Manavadu"** in 1973, there was no looking back. Since that time, he has directed 140 films in four languages; Telugu, Tamil, Hindi and Kannada. Though he continued dialogue and song-writing, he emerged as a popular actor and also found time to produce 26 feature films. He has received several awards for all his achievements, ranging from the Nandi awards to an honorary doctorate from Andhra University for his contribution to Telugu culture and cinema. He received the prestigious Raghupathi Venkaiah Award from the Andhra government in 1991 and has also been president of the South Indian Film Directors Association for eight years as well as of the Film Employees Federation of South India.

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार
Awards for Non-Feature Films

सर्वश्रेष्ठ गैर कथाचित्र पुरस्कार

इन द फारेस्ट हैंग्स ए ब्रिज (अंग्रेजी)।

निर्माता : **संजय काक,** को स्वर्ण कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार
आक्टेव कम्युनिकेशन प्रा लि.

निर्देशक : **संजय काक** को स्वर्ण कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म का पुरस्कार फिल्म, **'इन द फारेस्ट हैंग्स ए ब्रिज'** को सामूहिक भावना की विजय के शानदार सिनेमाई प्रस्तुतीकरण के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

IN THE FOREST HANGS A BRIDGE (ENGLISH)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the producer **SANJAY KAK**, Octave Communications Pvt Ltd

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 20,000 to the director **SANJAY KAK**

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1998 is given to the film, **IN THE FOREST HANGS A BRIDGE,** for its excellent cinematic documentation of the triumph of the collective spirit.

संजय काक

पुणे में जन्में 41 वर्षीय स्वतन्त्र वृत्तचित्र निर्माता **संजय काक** इस व्यवसाय में सेंट स्टीफेंस कालेज और दिल्ली स्कूल ऑफ इकानमिक्स से आए। उन्हें 1985 में फिल्म '**गीली मिट्टी**' के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार-रजत कमल मिला। वे दिल्ली की '**ऑक्टेव कम्युनिकेशन**' के संस्थापक सदस्य हैं। उनका वीडियो सहित हाल का काम इस प्रकार है-1997 में '**वन वीपन**' जिसमें भारत की आजादी के 50वें वर्ष के उपलक्ष में लोकतंत्र के बारे में 2 कहानियां हैं तथा 1995 में '**हारवेस्ट आफ रेन**' पर्यावरणविद् अनिल अग्रवाल के साथ नई दिल्ली के विज्ञान व पर्यावरण केन्द्र में बनायी। ब्रिटेन में प्रवासियों पर भी उनकी फिल्में हैं-'**द लैंड**', '**माई लैंड**', '**इंग-लैंड**' जो 1993 में बनी। 1993 में ही '**साउथ अफ्रीका, एक हाउस एंड ए होम**' भी बनायी। ये फिल्में पेरिस, फ्रीबर्ग, हवाई के डाक्यूमेंट्री समारोहों में दिखाई गयी तथा भारतीय पैनोरामा के हिस्से के रूप में कलकत्ता अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 1995 में भी प्रदर्शित की गई। उन्होंने 1990 में '**कंबोडिया-एंगकर रेमेम्बर्ड**' का निर्माण और निर्देशन किया। टेलीविजन के लिए भी काक ने ढेर सारा काम किया है। जिसमें शामिल हैं-'**ट्रेवेलाग**' (सात भाग), '**प्रदक्षिणा : जर्नी डाउन द गंगा**' (1985-86) जो बाद में चित्रमय पुस्तक का आधार बनी जिसे मुकुल केशवन ने लिखा और संजीव सेठ के चित्रों से सजाया गया। 1995 में काक ने '**ए मैटर आफ च्वायस**' नामक उपभोक्ता हित का टी.वी. का साप्ताहिक कार्यक्रम संपादित किया। 1985-87 के दौरान उन्होंने दूरदर्शन के लिए हिन्दी समाचार वृत्तचित्र बनाए जिसमें '**पंजाब : दूसरा अयोध्या**' और '**किसकी गंगा**' शामिल है।

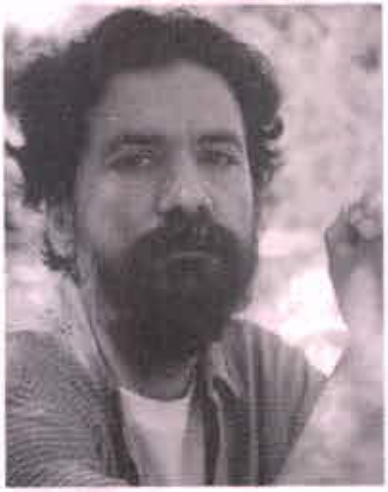

Sanjay Kak

THE Pune-born, 41-year-old Sanjay Kak is an independent documentary film-maker who came to the profession via St Stephen's College and the Delhi School of Economics. Winner of the Silver Lotus at the National Film Awards for his 1985 film, **"Geeli Mitti"**, he is the founding member of the Delhi-based production, **"Octave Communications"**. His recent work includes the videos, **"One Weapon"** in 1997, which is two stories about democracy in the 50th year of Indian Independence, and **"Harvest of Rain"** in 1995 which is made in association with the environmentalist Anil Agrawal at the Centre for Science and Environment, New Delhi. His films on migrants in the UK, **"The Land", "My Land", "England"** made in 1993, and **"South Africa", "A House and a Home"**, also made in 1993, have been widely screened at documentary festivals in Paris, Fribourg, Hawaii, Dhaka and as part of the Indian Panorama at the International Film Festival in Calcutta in 1995. He has also produced and directed Cambodia: **"Angkor Remembered"** in 1990. His work for television includes the seven-part **"travelogue"**, **"Pradakshina"**: **"Journey Down the Ganga"** in 1985-86, which became the basis of a best-selling large format picture book, with text by Mukul Kesavan and pictures by Sanjeev Saith. In 1995, Kak was series editor on a weekly TV series on issues of consumer interest, **"A Matter of Choice"**. Between 1985 and 1987, he directed a series of Hindi news documentaries for DD, including Punjab: **"Doosra Adhyaya"** and **"Kiski Ganga?"**.

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम ग़ैर-कथाचित्र

रिपेन्टेन्स (मलयालम)

निर्माता : **डॉ. मोहन अगाशे,** निदेशक, भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **राजीव राज** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति
निर्देशक की पहली गैर - कथाचित्र का पुरस्कार "**रिपेन्टेन्स**" को सिनेमाई अभिव्यक्ति के नवीन रूपों को उद्घाटित करने के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

REPENTANCE (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, **DR MOHAN AGASHE**, director, Film and Television Institute of India, Pune

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **RAJEEV RAJ**

Citation
The Award for the First Non-Feature Film of a Director is given to **REPENTANCE** for exploring new forms of cinematic expression.

मोहन अगाशे

मोहन अगाशे प्रवृत्ति से एक अभिनेता तथा पेशे से एक मनोचिकित्सक हैं। स्टेज तथा फिल्म के एक शानदार अभिनेता के रूप में विख्यात अगाशे की थिएटर अकादमी के विदेशी दौरों के एक सफल आयोजक के रूप में भी काफी प्रतिष्ठा है। **थिएटर अकादमी - ग्रिप्स परियोजना** के निर्देशन के बतौर उन्होंने बर्लिन के एक थिएटर ग्रुप ग्रिप्स के साथ मिलकर बच्चों तथा युवाओं के लिए सार्थक नाटकों का विचार भी प्रस्तुत एवं विकसित किया। अगाशे ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के थिएटर सलाहकार के रूप में भी काम किया है। वर्ष 1985 में उन्हें होमी भाभा फेलोशिप, 1990 में पदमश्री तथा 1996 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। वह पुणे की थिएटर अकादमी के मानद अध्यक्ष तथा बी.जे मेडीकल, पुणे के मनोचिकित्सा विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष भी रहे हैं।

Mohan Agashe

MOHAN AGASHE is a psychiatrist by training and an actor by instinct. Acknowledged as one of the finest actors of stage and screen, Agashe has also earned his spurs as organiser of the Theatre Academy's overseas tours. As project director of the Theatre Academy-GRIPS Project, he introduced and developed the concept of meaningful plays for children and young people in collaboration with GRIPS, a theatre group from Berlin. Agashe has also worked as a the theatre consultant for the Indian Council for Cultural Relations. He is a recipient of the Homi Bhabha Fellowship in 1985, Padmashree in 1990 and Sangeet Natak Academy Award in 1996. He has also been honorary president of the Theatre Academy in Pune, as well as professor and head of the Department of Psychiatry, B.J. Medical College, Pune.

राजीव राज

राजीव राज का जन्म 1971 में हुआ और उन्होंने तिरूवनंतपुरम के यूनिवर्सिटी कालेज से दर्शनशास्त्र में स्नातक किया। उन्होंने मलयालम की एक लघु फिल्म **'अनटाइटिल्ड'** (1993) का निर्देशन तथा पटकथा सह-लेखन किया। इस फिल्म को 1994 के तीसरे मुंबई अंतर्राष्ट्रीय लघु फिल्म समारोह के स्पेक्ट्रम इंडिया सेक्शन में दिखाया गया। राजीव राज ने जनवरी 1995 में निर्देशन के छात्र के रूप में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान ज्वाइन किया। **'रिपेन्टेन्स'** उनकी डिप्लोमा फिल्म है।

Rajiv Raj

RAJIV RAJ was in 1971 and did his his B.A. in philosophy from University College. Thiruvananthapuram. He directed and co-scripted a short film in Malayalam called **"Untitled"** (1993). The film was shown in the Spectrum India section of the Third Mumbai International Short Film Festival, 1994. Rajiv Raj joined the Film and Television Institute of India in January 1995 as a student of direction. **"Repentance"** is his diploma film.

सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय/जनजातीय फिल्म

खेरवाल परब (संथाली)

निर्माता : **शंकर रक्षित** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **शंकर रक्षित** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 का सर्वश्रेष्ठ मानव शास्त्रीय/जनजातीय फिल्म का पुरस्कार "**खेरवाल परब**" को दिया जाता है। फिल्म में संथाली रस्मों-रिवाजों को बड़ी प्रमाणिकता से प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ETHNOGRAOHIC FILM

KHERWAL PARAB (SANTHALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer **SANKAR RAKSHIT**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director **SANKAR RAKSHIT**

Citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1998 is given to **KHERWAL PARAB** for offering an insider's view of Santhal rites and rituals with great authenticity.

शंकर रक्षित

शंकर रक्षित के पिता नाटकों में खासी दिलचस्पी लेते थे, इसलिए उनका नाटकों में शुरू से ही खासा रूझान था। रक्षित ने सन 1963 में सहायक निर्देशक के रूप में अपने पेशेवर जीवन की शुरूआत की। उसके बाद उन्होंने सन 1974 में दूरदर्शन के कलकत्ता केंद्र में नौकरी शुरू कर दी। रक्षित ने दूरदर्शन के लिए **ग्राम बंगालार खाला, कुमारतुल्ली कथा** तथा **सिल्क शरीर आत्मकथा** नाम से कई वृत्तचित्र बनाये। उनकी आदिवासी संस्कृति में गहरी दिलचस्पी है। संभवत: इसी वजह से उनकी ताजा फिल्म **खेरवाल परब** की पृष्ठभूमि आदिवासी समाज पर ही है।

Sankar Rakshit

WITH a father who was a drama enthusiast, Sankar Rakshit started his career as an assistant director in 1965 and then joined Doordarshan Kendra, Calcutta, as a stringer in 1974. He has directed several documentaries for Doordarshan, among them **"Grama Bangalar Khala"**, **"Kumartullyr Katha"** and **"Silk Sareer Atmakatha"**. He has always been interested in Adivasi culture, which led him to the subject of his current film, **"Kherwal Parab"**.

सर्वश्रेष्ठ जीवनी संबंधी फिल्म पुरस्कार

प्रेम जी - इतिहासातिंते स्पर्सम (मलयालम) एवं **उनारविन्ते कमल - एम.आर.बी. (मलयालम)**
निर्माता : **सचिव केरल संगीत नाटक अकादमी, त्रिशूर** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **एम.आर. राजन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति
वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ जीवनी संबंधी पुरस्कार दो फ़िल्मों, "**प्रेमजी - इतिहासातिंते स्पर्सम**" एवं "**उनारविन्ते कलम**" को दो ऐतिहासिक समाज सुधारकों प्रेमजी एवं एम.आर.बी. के प्रेरणादायी जीवन को आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए दिए जाता है।

BEST BIOGRAPHICAL FILM

PREMJI _ ITHIHASATHINTE SPARSAM (MALAYALAM)and UNARVINTE KALAM _ M.R.B. (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, secretary of the Kerala Sangeetha Nataka Akademi, Trichur

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **M.R. RAJAN**

Citation
The Award for the Best Biographical Film of 1998 is given to the films **PREMJI _ ITHIHASATHINTE SPARSAM** and **UNARVINTE KALAM** for an insightful voyage into the exemplary lives of Premji and M.R.B., two legendary social reformers.

एम.आर. राजन

एम.आर. राजन का जन्म त्रिशूर मे हुआ। उन्होंने दर्शन में स्नातक की डिग्री हासिल करने के पश्चात पुणे के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में दाखिला लिया। वहाँ से राजन ने निर्देशन की डिग्री हासिल की। राजन द्वारा 1989 में बनाई डिप्लोमा फिल्म ''**दूरम**'' को फिल्म समीक्षकों ने भी खासा सराहा और उसे सन 1990 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा वर्ग के लिए चुन भी लिया गया था। उनकी अगली फिल्म ''**छाया**'' तथा ''**प्रकाशनट्टम : अमानूर**'' को भी राष्ट्रीय पुरस्कार दिये गये। राजन ने कला और संस्कृति से जुड़े सवालों पर कई टी वी कार्यक्रम भी बनाये। उनके द्वारा सन् 1993 में बनाये गये ''**चैंकालील उरू संकीर्तनम**'' कार्यक्रम को केरल राज्य पुरस्कार भी मिला। राजन इन दिनों रंगमंच की दुनिया की दिग्गज हस्तियों पर फिल्मों की एक पूरी शृंखला ही बना रहे हैं। उन्होंने इस बाबत सन 1997 में टी.आर. गोपालन पर नाटकपथ तथा सन 1998 में एम. आर. भट्टाथिरीपद पर ''**उनारविन्ते कालम - एम.आर.बी.**'' नाम से फिल्में बना भी ली हैं।

M.R. Rajan

BORN in Thrissoor, M.R. Rajan graduated in philosophy and then joined the Film and Television Institute of India, Pune, from where he graduated in direction. His diploma film, **"Dooram"**, in 1989, received much critical acclaim and was selected to be part of the India Panorama at the International Film Festival of 1990. His next films, **"Chhaya"** and Prakash **"Nattam Amannur"** won the National Awards. Rajan has also made several TV programmes on art and culture, one of which, **"Chenkallil Oru Sankeerthanama"** in 1993, won the Kerala State Award. He is currently working on a series of films on eminent theatre personalities: **"Natakapatha"** on actor T.R. Gopalan in 1997 and **"Unarvinte Kalam"** - MRB in 1998 on M.R. Bhattathirippad have already been completed.

सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

ए. पेंटर ऑफ एलोक्वेन्ट साइलेंस, गणेश पायने (अंग्रेजी)

निर्माता : **बुद्धदेव दासगुप्ता** को रजत कमल एवं 5,000 रुपए नकद पुरस्कार
निर्माता : **फिल्म्स डिवीज़न, मुम्बई** को रजत कमल एवं 5,000 रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक : **बुद्धदेव दास गुप्ता** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म '**ए पेंटर ऑफ एलोक्वेन्ट साइलेन्स गणेश पायने**' को दिया जाता है। यह फिल्म एक कलाकार द्वारा दूसरे कलाकार दो दी गई मार्मिक श्रद्धांजलि तथा एक चित्रकार की गोपनीय अभिव्यक्ति की सराहना है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

A PAINTER OF ELOQUENT SILENCE; GANESH PYNE (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 5,000 to the producer, **BUDDHADEB DASGUPTA**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Producer, Films Division Mumbai.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **BUDDHADEB DASGUPTA**

Citation

The Award for the best Arts/Cultural Film of 1998 is given to "A Painter of Eloquent Silence: **GANESH PYNE** for a moving tribute from one artiste to another and an appreciation of the painter's hidden expression.

बुद्धदेव दास गुप्ता

बुद्धदेव दास गुप्ता एक मशहूर बंगला फिल्मकार हैं। सत्यजीत राय एवं ऋत्विक घटक जैसे विलक्षण फिल्मकारों की परंपरा के हिस्से हैं। दास गुप्ता की फिल्मों में उनकी जीवंत व्यक्तिवादिता झलकती है। जिसमें उनकी आश्चर्यजनक मौलिकता सम्मिलित होती है। उनकी फिल्मों ने भारत तथा विदेशों में अनगिनत पुरस्कार बटोरे हैं। उनकी तीन फिल्मों को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है तथा ज्यादातर फिल्मों को विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में सम्मान के साथ दिखाया जा चुका है।

Buddhadeb Dasgupta

BUDDHADEB DASGUPTA is a well-known Bangla filmmaker and what gives special interest to this particular filmmaker is not just that he is part of a long and distinguished tradition of Satyajit Ray and Ritwik Ghatak but that he has consciously avoided incurring any debt to the founding luminaries of Indian art cinema. Dasgupta's films reflect his vibrant individualism, many reflecting an amazing originality. His work has won numerous awards in India and abroad - three of them have won the National Award for Best Film of the Year, and most have been shown to great acclaim at several international film festivals.

सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण संरक्षण/संग्रहण फिल्म (जागरुकता समेत)

विलिंग टू सैक्रीफाइस

निर्माता : **दयाकर राव** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **बी.बी.पी. राव** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण संरक्षण/संग्रहण फिल्म का पुरस्कार फिल्म **'विलिंग टू सेक्रीफाइस'** को दिया जाता है। यह फिल्म ऐसे लोगों की पवित्र भावनाओं का ईमानदार चित्रण है जिनके लिए पर्यावरण संग्रहण जिन्दगी जीने के एक तरीका है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/ CONSERVATION/PRESERVATION FILM (INCLUDING AWARENESS)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, **DAYAKAR RAO**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **B.V.P. RAO**

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film of 1998 is given to the film, **WILLING TO SACRIFICE**, for an honest portrayal of the sacred convictions of a people for whom conservation is a way of life.

बी.वी.पी. राव

बी.वी.पी. राव का जन्म आंध्र प्रदेश के वारंगल जिले में 1956 में हुआ तथा अपने गांव से स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह वाणिज्य में स्नातक करने के लिए शहर चले गये। उस्मानिया विश्वविद्यालय से उन्होंने विधि की पढ़ाई की तथा इंटरनेशनल लॉ में शोध करने के लिए उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ज्वाइन किया। 1982 में उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा ज्वाइन किया। भारतीय प्रशासनिक अफसर के रूप में उन्होंने असम में कई महत्वपूर्ण काम अंजाम किए। असम में ही जब वे फिल्म महोत्सव आयोजित कर रहे थे तो फिल्मकार जाहनू बरूआ से उनकी मुलाकात हुई। इस साहचर्य से उनके भीतर अभिव्यक्ति की एक वैकल्पिक विधा, सिनेमा के प्रति अभिरूचि पैदा हुई। अपने मित्र से इस शिल्प के बारे में कुछ आवश्यक बातें सीखकर उन्होंने नई दिल्ली के फिल्म निर्माण का एक लघु कालीन प्रशिक्षण लिया। '**विलिंग टू सेक्रीफाइस**' उनकी पहली फिल्म है।

B.V.P. Rao

FORTY-THREE-YEAR-OLD B.V.P. Rao was born in Warangal district, Andhra Pradesh. After school in his village, he moved to Warangal town to graduate in commerce. He went on to Osmania University to do law and then joined the Jawaharlal University in New Delhi to do research in international law. He then joined the Indian Administrative Service in 1982. As a civil servant he held sevceral important assignments in Assam. It was while he was organising film festivals in Assam that he met filmmaker Jahnu Barua. This association led him to discover an alternative medium of expression, cinema. Having learnt some of the basics of this craft from his friend, he then did a short term course in flimmaking at the New York Film Academy. **"Willing To Sacrifice"** is his first film.

दयाकर राव

दयाकर राव का जन्म आंध्र प्रदेश के किसानों के एक परिवार में हुआ तथा वह अपने कालेज के दिनों से ही काफी उद्यमशील रहे हैं। पिछले 10 वर्षों से वह गहरे समुद्र में मछली पकड़ने तथा विशाखापटनम में इससे जुड़े व्यापार में संलग्न रहे हैं। यामिनी फिल्म्स उनकी कंपनी है और '**विलिंग टू सेक्रीफाइस**' उनकी पहली फिल्म है।

Dayakar Rao

BORN into a family of farmers in Andhra Pradesh, Dayakar Rao has been an entrepreneur from his college days. For the past 10 years, in fact, he has been involved in deep-sea fishing and marine exports in Vishakapatnam. Yamini Films is his company and **"Willing to Sacrifice"** is his first film.

सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक/पुनर्निमाण/संकलन फिल्म

अन्ना वाजीगिरार (तमिल)

निर्माता **तमिलनाडु फिल्म्स डिविजन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **तमिलनायु फिल्म्स डिविजन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक/पुर्ननिर्माण संकलन फिल्म का पुरस्कार तमिल फिल्म '**अन्ना लिव्स**' को दिया जाता है। फिल्म में अन्ना हरई के सशक्त चित्रण के लिए विभिन्न सिनेमाई रूपों को एकीकृत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST HISTORICAL/RE-CONSTRUCTION/COMPILATION FILM

ANNA VAAZHIGIRAR (TAMIL)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, **Director, Tamil Nadu Films Division**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **Director, Tamil Nadu Films Division**

Citation

The Award for Best Historical Reconstruction Film of 1998 is given to the film, **ANNA LIVES**, for integrating various cinematic forms to present a strong portrait of **ANNADURAI**.

A still from the film Anna Vazhigrar

सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म (जैसे मद्य निषेध, महिला व शिशु कल्याण, दहेज विरोध, नशा सेवन, विकलांग कल्याण आदि)

मल्ली (तमिल)

निर्माता : **पी. अमृतम** निर्देशक, **फिल्म एवं टेलिविजन ऑफ तमिलनाडु** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

निर्देशक : **आर. माधव कृष्णन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार तमिल फिल्म '**मल्ली**' को सेक्स वर्कर्स के विषय पर मौलिक प्रस्तुति के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, AND DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.)

MALLI (TAMIL)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, director, Film and Television of Tamil Nadu

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **R. MADHAVA KRISSHNAN**

Citation

The Award for Best Film on Social Issues of 1998 is given to the film, **MALLI**, for its original reflection on the subject of sex workers.

पी. अमृथम

पी. अमृथम ने 20 वर्ष की उम्र में 1956 में सिनेमा की दुनिया में कदम रखा। वह 25 से ज्यादा फिल्मों में फोटोग्राफी के निर्देशक तथा तमिल, तेलुगू तथा मलयालम की 20 फिल्मों के निर्देशक रह चुके हैं। 1969 में उन्होंने तमिल फिल्म 'सोरगाम' के लिए तमिलनाडु सरकार का सर्वश्रेष्ठ कैमरा मैन का पुरस्कार जीता। 1996 से वह तमिलनाडु के फिल्म एवं टीवी इंस्टीट्यूट तथा तमिलनाडु फिल्मस डिवीजन के निर्देशक रहे हैं। उनके संस्थान ने 44 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में विदियालाई नोक्की के लिए सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार जीता। 1998 के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा में उनकी दोनों फिल्मों **'वानाविल'** तथा **विदियालाई नोक्की** को प्रवेश मिला जो 1960 में संस्थान की स्थापना के बाद पहला ऐसा अवसर था।

P. Amritham

P. AMRITHAM made his entry into theworld of cinema in 1956 at the age of 20. He has served as director of photography on over 25 films and has directed 20 films in Tamil, Telugu and Kannada. In 1969, he won the Best Comeraman Award of the Tamil Nadu State Government for the Tamil film, **"Sorgam".** He has been director of the Film and TV Institute of Tamil Nadu and the Tamil Nadu Films Division since 1996. His institute won the Best Short Film Award for **"Vidiyalai Nokki"** at the 44th National Film Festival and both **"Vaanavil"** and **"Vidiyalai Nokki"** won entry into the Indian Panorama of the International Film Festival of 1998, a first of its kind since the institute was established in 1960.

आर. माधव कृष्णन

तेईस वर्षीय आर. माधव कृष्णन ने प्रेसेडेंसी कालेज से रसायन विज्ञान की डिग्री हासिल की। उनके बाद कृष्ण ने चेन्नई के फिल्म संस्थान से फिल्म टेक्नालोजी तथा टेलीविजन प्रोडक्शन के क्षेत्र में डिप्लोमा हासिल किया।

Madhava Krisshnan

TWENTY-THREE-YEAR-OLD R. Madha Krishnann is a B.Sc in Chemistry from Presidency College, who went on to do a diploma in film technology and television production at the Film Institute in Chennai.

सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक/प्रेरक/सलाहात्मक फिल्म पुरस्कार

साइलेंट स्क्रीम (अंग्रेजी)

निर्माता : **मैसर्स विवेक फिल्म्स** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **विक्रम के. कुमार** रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ शैक्षिणक/प्रेरक/सलाहात्मक फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी भाषा की फिल्म '**साइलेन्ट स्क्रीम**' को दिया जाता है। फिल्म में मुसीबतजदा युवा के प्रति लोगों की उपेक्षा का बेबाक चित्रण किया गया है।

BEST EDUCATIONAL/MOTIVATIONAL/ INSTRUCTIONAL FILM

SILENT SCREAM (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer Messers Vivek Films.
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **VIKRAM K. KUMAR**

Citation

The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1998 is given to the film, **SILENT SCREAM**, for its daring attempt to shake people out of their apathy towards youth in distress.

विवेक के. कुमार

विवेक के. कुमार ने कोयम्बतूर के पी.एस.जी कालेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस से लाइफ साइंस में स्नातक किया तथा नई दिल्ली के इंटरनेशनल मैनेजमैंट से एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। 27 वर्षीय विवेक ने एक निर्माता के रूप में पहली लघु फिल्म "**साइलेन्ट स्क्रीम**" बनाई। इसका निर्देशन उनके भाई विक्रम ने किया। 1999 में हैदराबाद में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा खंड में इसका चुनाव किया गया। फिल्म की शूटिंग चेन्नई में एक दिन में और काफी कम बजट में पूरी कर ली गई थी।

Vivek K. Kumar

A GRADUATE in Life Sciences from the PSG College of Arts and Science, Coimbatore, 27-year-old Vivek K. Kumar has done an MBA from the International Management Institute, New Delhi. As a producer, **"Silent Scream"** is his first short fictional venture. Directed by his younger brother Vikram, it was selected and screened as part of the Indian Panorama section of the International Film Festival held at Hyderabad in 1999. It was shot on a shoe-string budget over a single day in Chennai.

विक्रम के. कुमार

विक्रम के. कुमार ने चेन्नई में मद्रास क्रिश्चयन कालेज से स्नातक की डिग्री प्राप्त की तथा 1997 के अप्रैल में भारत के विख्यात निर्देशकों में एक प्रियदर्शन एस. नायर के साथ जुड़ गए। शुरू में उन्होंने एक प्रशिक्षु के तौर पर काम किया और एक मलयालम फिल्म "**चंद्रलेखा**" का निर्देशन किया। तब से उन्होंने "**हेराफेरी**" (अब तक अप्रदर्शित) और "**डोली सजा के रखना**" (दोनों हिन्दी) में एक साथ काम किया। फिलहाल वह असिस्टैंट निर्देशक के रूप में उनके साथ काम कर रहे हैं।

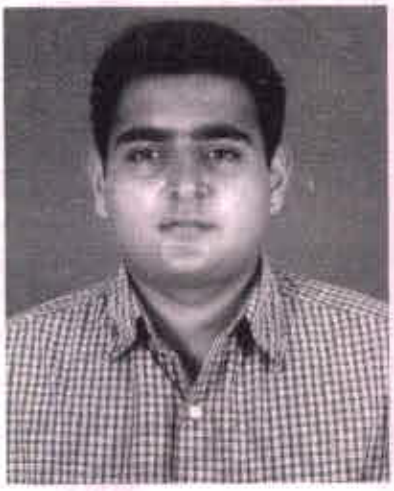

Vikram K. Kumar

TWENTY-THREE-YEAR-OLD Vikram K. Kumar graduated from the Madras Christian College in Chennai. He joined Priyadarshan S. Nair, one of the leading film directors in India, in April 1997, intially as an apprentice, where he worked on the Malayalam film, **"Chandralekha"**. since then they have worked together in films such as **"Heerapheeri"** (yet to be released) and **"Doli Saja Ke Rakhna"**, both in Hindi. He is currently working as an assistant director with him.

सर्वश्रेष्ठ गवेषणात्मक/रोमांचक फिल्म (खेलकूद)

मलाना – इन सर्च ऑफ (अंग्रेजी)

निर्माता : **मैसर्स निओ फिल्म्स, मुंबई** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **विवेक मोहन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ गवेषणात्मक/रोमांचक फिल्म का पुरस्कार फिल्म '**मलाना – इनसर्च ऑफ**' को एकाकी में फंसे लोगों के विस्तृत वर्णन व गंभीर चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EXPLORATION/ADVENTURE FILM (TO INCLUDE SPORTS)

MALANA _ IN SEARCH OF (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producers, Messers Neo Films, Mumbai
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **VIVEK MOHAN**

Citation

The Award for the Best Exploration/Adventure Film of 1998 is given to the film, **MALANA** _ In Search Of for its indepth and detailed unearthing of a people isolated in time.

विवेक मोहन

विवेक मोहन शिमला से मुम्बई लेखन के सिलसिले में गये। उस समय फ्रैंक सिमोस विज्ञापन एजेंसी में काफी प्रमुख विनोद आडवानी के प्रोत्साहन के फलस्वरूप विवेक ने लिंटास विज्ञापन एजेंसी के फिल्म विभाग में नौकरी करनी शुरू कर दी। उन्होंने यहाँ पर रहते हुए तीन साल तक चोटी की विज्ञापन की दुनिया की हस्तियों के साथ काम किया। कुछ समय तक फिल्म निर्माता पंकज पराशर के साथ काम करने के पश्चात वे प्रदीप उप्पूर की निओ फिल्म्स में चले गये। यहाँ पर विवेक ने बहुत सी विज्ञापन तथा कार्पोरेट वृत्तचित्रों का निर्देशन किया। उन्होंने फिर "**इन सर्च ऑफ मलाना**" जैसी बड़ी फिल्म के लिए काम किया।

Vivek Mohan

WRITING brought Vivek Mohan from Shimla to Mumbai. Encouraged by Vinod Advani (then copy chief at Frank Simoes Advertising) he joined the Lintas Film department, and worked with top ad makers for three years. After a brief stint with filmmaker Pankaj Parashar, he joined Pradeep Uppoor's Neo Films. This was where he directed ad films and coporate documentaries before venturing into his first major film, **"In Search of Malana".**

सर्वश्रेष्ठ खोजी फिल्म पुरस्कार

सागा ऑफ डार्कनेस (बंगला)

निर्माता : **मैसर्स क्रिएटिव इमेज** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **गौतम सेन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ खोजी फिल्म का पुरस्कार फिल्म **'सागा ऑफ डार्कनेस'** को एक अमानवीय प्रथा के साहसिक पर्दाफाश एवं प्रशासन की उपेक्षा के चित्रण के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATE FILM

SAGA OF DARKNESS (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, **M/S CREATIVE IMAGE**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **GAUTAM SEN**

Citation

The Award for Best Investigative Film of 1998 is given to the **SAGA OF DARKNESS** for its courageous expose of an inhuman practice and the State's apathy to it.

गौतम सेन

गौतम सेन ने कलकत्ता के जाधवपुर विश्वविद्यालय से बंगाली साहित्य में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद अपना पेशेवर जीवन बतौर सहायक निर्देशक तथा संवाद लेखक शुरू किया। उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में काम किया। वे अब तक हिन्दी तथा बंगला के तीन-तीन धारावाहिकों का निर्देशन भी कर चुके हैं। इन्हें डी.डी. मेट्रो तथा डी.डी. के बंगला चैनलों पर इन दिनों रोज दिखाया जा रहा है। इनमें धारावाहिक "**आकाश छांव**" शामिल है। उनका फिल्मी वृत्तचित्र बनाने का अनुभव खासा व्यापक है। उन्होंने कृष्णानगर की परम्परागत मिट्टी की गुडियों पर बने "**पुतुल कथा**" से लेकर बंगाल के सपेरों पर बने "**सुपुरि सत कहाँ**" जैसे बेहतरीन वृत्तचित्रों को सफलतापूर्वक ढंग से बनाया। उन्होंने वाणिज्य जगत के लिए भी कुछ काम किया है।

Gautam Sen

A POST-GRADUATE in Bengali Literature, from Jadavpur University, Calcutta, Gautam Sen started his career as an assistant director and script writer. He has done work in both Hindi and Bangla. He directed three Hindi serials and three Bangla sereials, including a current daily soap, **"Akash Chaon"**, on DD Metro and DD Bangla. His experience in docuementary film-making is varied : from **"Putul Katha"** on the traditional clay dolls of Krishnanagar to **"Sapuriar Sat Khana"** on the snake catchers of Bengal. He has also done work for the corporate sector. His **"Saga of Darkness"** is in the 16 mm format.

सर्वश्रेष्ठ कार्टून फिल्म

एजुकेशन ओनली हर फ्यूचर (केवल संगीत)

निर्देशक : **अरुण गोंगडे फिल्म्स डिवीज़न, मुंबई** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरुण गोंगडे, फिल्म्स डिवीजन, मुंबई** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

कार्टूनकार : **अरुण गोंगडे फिल्म्स डिवीज़न, मुंबई** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फिल्म का पुरस्कार '**एजुकेशन ओनली हर फ्यूचर**' कन्या शिशु की शिक्षा के सशक्त पक्षधर के रूप में तकनीक के कल्पनाशील उपयोग के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

EDUCATION ONLY HER FUTURE (ONLY MUSIC)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, **ARUN GONGADE** of the Films Division, Mumbai

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **ARUN GONGADE,** Films Division, Mumbai

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the animator, **ARUN GONGADE,** films Division, Mumbai.

Citation

The Award for the Best Animation Film of 1998 is given to the film, **EDUCATION ONLY HER FUTURE**, for its imaginative use of technique to make a strong statement for the education of the girl-child.

अरूण एस. गोंगडे

अरुण एस. गोंगडे फिल्म डिवीजन के कार्टून फिल्म प्रभाग के प्रभारी हैं। उन्होंने कई एनीमेशन फिल्मों की पटकथा और निर्देशन किया है। उनकी बहुत सी फिल्में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित भी की जा चुकी हैं। ऐसी फिल्मों में "**बिदाई**" 1984, "**ए.बी.सी.**" 1987, "**लोस्ट होराइज़न**" 1997, "**शी कुड डू यू प्राऊड**" 1998 तथा "**एजुकेशन ओनली हर फ्यूचर**" 1999 शामिल हैं।

Arun S. Gongade

ARUN S. GONGADE is officer in charge of the cartoon film unit of the Films Division and has scripted and directed several animation films which have won State, national and international awards : **"Bidaai"** in 1984, A.B. **"See"** in 1987, **"Lost Horizon"** in 1997, She **Could Do You Proud"** in 1998, and **"Education Only Her Future"** in 1999.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

पवन मल्होत्रा

अभिनेता **पवन मल्होत्रा** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

वर्ष 1998 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार अभिनेता पवन मल्होत्रा को गौतम घोष की फिल्म '**फकीर**' (हिन्दी) में मासूमियत के नियंत्रित अभिनय के लिए दिया जाता है।

SPECIAL JURY AWARD

PAVAN MALHOTRA

Rajt Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the actor **PAVAN MALHOTRA**

The Special Jury Award for 1998 is given to the actor Pawan Malhotra for his superb restraint in portraying innocence in Goutam Ghose's film, **FAQIR** (Hindi).

पवन मल्होत्रा

पवन मल्होत्रा नए सिनेमा की लगभग सारी फिल्मों में नियमित रूप से कार्यरत रहे हैं। उन्होंने 1990 में सईद मिर्जा की "**सलीम लंगड़े पर मत रो**" और बुद्धदेव दासगुप्ता की "**बाघ बहादुर**" में काम किया था और 1996 में उदयन प्रसाद की बीबीसी-2 फिल्म, "**बदर्स इन ट्रबल**" में काम कर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। हाल की कुछ फिल्मों में ब्रिटेन की एक फिल्म "**डॉग ट्राईब**" में एक अप्रवासी की भूमिका, दीपा मेहता की फिल्म "**1947**", सईद मिर्जा की दो कृतियों "**राजा का बाजा**" और "**पतंग**" (दोनों टेलिविजन धारावाहिक) उल्लेखनिय हैं। गौतम घोष की फिल्म "**फकीर**" में एक मजदूर एवं समर्पित मुस्लिम की भूमिका में भी उन्होंने काफी सशक्त भूमिका निभाई है।

Pavan Malhotra

Pavan Malhotra has been a fixture in nearly all the New Cinema films. He acted in Saaed Mirza's **"Salim Langde Pe Mat Ro"** in 1990, Budhadeb Dasgupta's **"Bagh Bahadur"**, also in 1990, and then went on to win significant international acclaim in Udayan Prasad's BBC 2 film, **"Brothers in Trouble"** in 1996-96. Some of his current projects are the role of an immigrant in a UK film, **"Dogtribe"**, and parts in Deepa Mehta's **"1947"**, Saaed Mirza's **"Raja ka Baja"** and **"Patang"** - the latter two on television. As the field labourer and devout Muslim in Goutam Ghose's **"Faqir"**, based on Bibhuti Bhushan Banerjee's story, he is powerful in his usual understated style.

सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म पुरस्कार

जी करता था (हिन्दी)

निर्माता : **डॉ. मोहन अगाशे,** निर्देशक फिल्म एंड टेलिविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया पुणे को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
निर्देशक : **हंसा थपलियाल** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति
वर्ष 1998 की सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म का पुरस्कार फिल्म **'जी करता था'** को एक छोटे से शहर का शानदार मौलिक विवरण एवं एक नया सिनेमाई मुहावरा गढ़ने के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

JEE KARTA THA (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, **DR MOHAN AGASHE,** director, Film and Television Institute of India, Pune
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **HANSA THAPLIYAL**

Citation
The Award for the Best Short Fiction Film of 1998 is given to the film, **JEE KARTA THA**, for its brilliant originality in delineating a small town and in evolving a new cinematic idiom.

मोहन अगाशे

मोहन अगाशे प्रवृत्ति से एक अभिनेता तथा पेशे से एक मनोचिकित्सक हैं। स्टेज तथा फिल्म के एक शानदार अभिनेता के रूप में विख्यात अगाशे की थिएटर अकादमी के विदेशी दौरों के एक सफल आयोजक के रूप में भी काफी प्रतिष्ठा है। **थिएटर अकादमी - ग्रिप्स परियोजना** के निर्देशन के बतौर उन्होंने बर्लिन के एक थिएटर ग्रुप ग्रिप्स के साथ मिलकर बच्चों तथा युवाओं के लिए सार्थक नाटकों का विचार भी प्रस्तुत एवं विकसित किया। अगाशे ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के थिएटर सलाहकार के रूप में भी काम किया है। वर्ष 1985 में उन्हें होमी भाभा फेलोशिप, 1990 में पदमश्री तथा 1996 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। वह पुणे की थिएटर अकादमी के मानद अध्यक्ष तथा बी.जे मेडीकल, पुणे के मनोचिकित्सा विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष भी रहे हैं।

Mohan Agashe

MOHAN AGASHE is a psychiatrist by training and an actor by instinct. Acknowledged as one of the finest actors of stage and screen, Agashe has also earned his spurs as organiser of the Theatre Academy's overseas tours. As project director of the Theatre Academy-GRIPS Project, he introduced and developed the concept of meaningful plays for children and young people in collaboration with GRIPS, a theatre group from Berlin. Agashe has also worked as a the theatre consultant for the Indian Council for Cultural Relations. He is a recipient of the Homi Bhabha Fellowship in 1985, Padmashree in 1990 and Sangeet Natak Academy Award in 1996. He has also been honorary president of the Theatre Academy in Pune, as well as professor and head of the Department of Psychiatry, B.J. Medical College, Pune.

हंसा थपलियाल

हंसा थपलियाल का जन्म सन 1971 में नई दिल्ली में हुआ। लेडी श्रीराम कालेज से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की डिग्री लेने के बाद उन्होंने समाजिक संचार मीडिया विषय पर सोफिया पोलिटेक्निक से कोर्स किया। हंसा ने 1995 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में बतौर निर्देशन के विद्यार्थी के रूप में दाखिला लिया। जी करता था उनकी डिप्लोमा फिल्म है।

Hansa Thapliyal

HANSA THAPLIYAL was born in 1971 in New Delhi. Completing her graduation in English Literature from Lady Sri Ram College, she did a course in social communications media from Sophia Polytechnic. She joined the Film and Television Institute of India as a student of direction in 1995. **"Jee Karta Tha"** is her diploma film.

परिवार कल्याण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म समाचार पत्र 367 - सन्टेन्स ऑफ साइलेंस (अंग्रेजी)

निर्माता : **वाई.एन. इंजीनियर,** फ़िल्म्स डिवीज़न, मुंबई को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

निर्देशक : **जोशी जोसेफ़,** फ़िल्म्स डिविज़न, मुंबई को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की परिवार कल्याण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार "**समाचार पत्रिका 367 - सेन्टेन्स ऑफ साइलेंस**" को भारतीय ईसाइयों के बीच परिवार की प्रथा की सशक्त पुर्नव्याख्या के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

N.M. NO. 367 _ SENTENCE OF SILENCE (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the producer, **Y.N. ENGINEER,** Films Division, Mumbai

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the director, **JOSHY JOSEPH**, Films Division, Mumbai

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1998 is given to the film, **N.M. NO. 367 _ SENTENCE OF SILENCE**, for its strong redefining of the family ethos among the Indian Christians.

यज्दी एन. इंजीनियर

यज्दी एन. इंजीनियर ने फिल्म और टेलीविजन संस्थान से सिनेमा में डिप्लोमा किया। उन्होंने हिन्दी फिल्म उद्योग में सिनेमाटोग्राफर जल मिस्त्री के सहायक, दूरदर्शन में कैमरामैन तथा एफ.टी.आई.आई. में प्रवक्ता के रूप में काम किया। 1978 में फिल्म्स डिविजन में निर्देशक हैं और 40 से अधिक वृत्तचित्र और समाचार पत्रिकाओं का निर्माण किया। उन्हें निर्देशक के रूप में एक तथा निर्माता के रूप में 7 राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। आजकल वे फिल्म्स डिवीजन में उपमुख्य निर्माता हैं।

Yazdi N. Engineer

YAZDI N. ENGINEER did his diploma in cinema from the Film and Television Institute of India in 1968. He has worked in the Hindi film industry as an assistant to cinematographer Jal Mistry, as a cameraman on Doordarshan and as a lecturer in the FTII. Since 1978, as a director in the Films Division, he has made more than 40 documentaries and since 1990, he has produced 70 documentaries and news magazines. He has won one National Award as director and seven National Awards as producer. At present, he is Deputy Chief Producer in the Films Division.

जौशी जोसेफ

37 वर्षीय जौशी जोसेफ मलयालम साहित्य में स्नातक हैं। उन्होंने मलयालम भाषा के जाने माने फिल्मकार अदूर गोपाल कृष्णन को **'कथापुरुषन'** के निर्माण में सहयोग किया। 1985 में वे फिल्म डिविजन में नियुक्त हुए और 8 वृत्तचित्रों का निर्देशन किया।

Joshy Joseph

JOSHY JOSEPH is a 37-year-old gradute in Malayalam Literature. He assisted the Malayalam language maestro Adoor Gopalakrishnan in the making of Kathapurushan and joined the Films Division in 1985 where he has scripted and directed nine documentaries.

सर्वश्रेष्ठ छायांकन पुरस्कार

रंजन पलित

कैमरामैन : **रंजन पलित** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
फिल्म की प्रोसेसिंग करने वाली लेबोरेटरी, **प्रसाद फिल्म लेबोरेट्रीज,चेन्नई** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

गैर-फीचर फिल्म के सर्वश्रेष्ठ छायांकन का पुरस्कार रंजन पालित को अंग्रेजी भाषा की फिल्म **'इन द फॉरेस्ट हैंग्स ए ब्रिज'** में एक रूपता की विवेचना करने के लिए छवियों के एक शिल्प में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

RANJAN PALIT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the cameraman, **RANJAN PALIT**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the laboratory processing the film, **PRASAD FILM LABORATORIES**, Chennai

Citation

The Award for the Best Cinematography for a Non-Feature Film is given to Ranjan Palit for the film, **IN THE FOREST HANGS A BRIDGE** (English), for his perception of images to define a style that illustrates the harmony in the film.

रंजन पलित

रंजन पलित अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मान्य सिनेमाटोग्राफर हैं। उन्होंने 1984 में '**भोपाल-ए. लाइसेंस टू किल**' के सह निर्देशक और कैमरामैन के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। तब से वे लगातार वृत्तचित्रों पर काम कर रहे हैं। मसलन, उन्होंने 1986 में '**बंबई अवर सिटी**' फॉर चैनल-फोर, 1989 में '**वायसेस फ्राम बलियापाल**' बनाई जिसे पर उन्हें सामाजिक मुद्दों सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला। '**मेमोरीज़ ऑफ मिल्क सिटी**' पर उन्हें 1992 में ओबरहौसेन फेस्टिवल का मुख्य पुरस्कार मिला। 1992 में बंबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टीवल में '**कमलाबाई**' को सर्वश्रेष्ठ प्रथम वृत्तचित्र करार देते हुए पुरस्कृत किया गया। '**द मैजिक मिस्टिक मार्केट प्लेस**' को 1996 में मुंबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टीवल में स्वर्णशंख मिला। दो घंटे की 35 एम.एम. '**मास्क ऑफ डिजायर**' को काठमांडू में फिल्माया गया।

Ranjan Palit

RANJAN PALIT is an internationally-recognised cinematographer, who began his career in 1984 as the co-director and cameraman of Bhopal: **"A Licence to Kill"**. Since then he has regularly worked on several demanding documentaries such as Bombay: **"Our City for Channel 4 in 1986"**; **"Voices From Baliapal"** which won the National Award for the Best Film on Social Issues in 1989; **"Memories of Milk City"** for Channel 4 which won the main prize at the Oberhausen Festival in 1992; **"Kamlabai"**, winner of the Best First Documentary at the Bombay International Film Festival in 1992; **"The Magic Mystic Marketplace"** which bagged the Golden Conch at the Mumbai International Film Festival in 1996; and **"Mask of Desire"**, a two-hour feature film on 35 mm shot in Kathmandu.

सर्वश्रेष्ठ, ध्वनि आलेखन

पी.एम. सतीश

ध्वनि आलेखक : पी.एम. सतीश को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की गैर-कथाचित्र में सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन का पुरस्कार पी.एम. सतीश को हिन्दी फिल्म **'कुमार टाकीज'** के लिए दिया जाता है। इस फिल्म में सतीश ने एक ऐसा श्रवण डिजाइन प्रस्तुत किया जो तेजी से क्षरित हो रहे युग का दृश्य आंखों के सामने स्पष्ट कर देता है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

SATHEESH P.M.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the audiographer, **P.M. SATHEESH**

Citation

The Award for Best Audiography in a Non-Feature Film of 1998 is given to **SATHEESH P.M.** for the film, **KUMAR TALKIES** (Hindi), for a sound design which evokes a vision of an era fast fading away.

पी.एम. सतीश

34 वर्षीय पी.एम. सतीश ने सन 1985 में भौतिकी में स्नातक की डिग्री हासिल की। उन्होंने फिर पुणे में साउंड रिकार्डिंग का कोर्स किया। पिछले आठ साल से वे मुंबई में डॉक्यूमेंट्री फिल्में बना रहे हैं। इन्होंने 1993 में बाल फिल्म **'संडे'** तथा 1996 में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा निर्मित **'लिमिटेड मानुष्की'** में ध्वनि आलेखन किया। वे चैनल 4, कनाडा के राष्ट्रीय फिल्म बोर्ड, कनाडा ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन आदि के लिए भी डॉक्यूमेंट्री फिल्में बना रहे हैं।

P.M. Satheesh

THIRTY-FOUR-YEAR-OLD P.M. Satheesh graduated in physics in 1985 and joined the Film and Television Institute of India, Pune, in 1987, for a sound-recording course. Completing the course in 1990, he moved to Mumbai and has been working on documentaries for the past eight years. He has done the sound for the children's film, **"Sunday"**, in 1993, and **"Limited Manushki"**, produced by the National Film Development Corporation, in 1996. He has done documentaries for Channel 4, National Film Board of Canada, Canadian Broadcasting Corporation, and Central Television, England, among others.

सर्वश्रेष्ठ संपादन पुरस्कार

रीना मोहन

संपादक **रीना मोहन** को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 की गैर-फीचर फिल्म में सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार **रीना मोहन** को अंग्रेजी भाषा की फिल्म **'इन द फारेस्ट हैंग्स ए ब्रिज'** के लिए जीवन के लयात्मक बिन्दुओं के साथ फिल्म की कहानी के सफल संयोजन के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

REENA MOHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000 to the editor, **REENA MOHAN**

Citation

The Award for the Best Editing of a Non-Feature Film of 1998 is given to Reena Mohan for the film, **IN THE FOREST HANGS A BRIDGE** (English), for weaving a narrative imbued with lyricism of life.

रीना मोहन

रीना मोहन ने दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस से आर्ट्स में स्नातक किया है और भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा भी। 1983 में उन्होंने निर्माता के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत की। वे भारत में टेराकोटा की कल्पना तकनीक एवं परम्परा पर मणिकौल द्वारा निर्मित 90 मिनट के वृत्तचित्र '**माटी मानस**' की सह-निर्देशिका भी रहीं। उन्होंने निर्देशक के रूप में खासा अनुभव हासिल किया है। मसलन 1999 में 26 मिनट के वृत्तचित्र '**पाथफाइंडर : बाबा आम्टे**' का निर्देशन किया है। इसके साथ ही बिहार में सुजनी कढ़ाई पर 15 मिनट का वृत्तचित्र तथा 1998 में '**जर्नीज**' का निर्देशन किया। उन्होंने 1999 में ऋतु सरीन और टेंजिंग सोनम के '**बिग ट्रेज़र चेस्ट फोर फ्यूचर चिल्ड्रन**' और अनीता प्रताप के '**आरफेंस ऑफ एन एन्शन्ट सिविलाइज़ेशन**' का संपादन किया। रीना '**कमलाबाई**' वृत्तचित्र के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।

Reena Mohan

Reena Mohan is a bachelor in arts from Miranda House, Delhi University, and a diploma in cinema from the Film and Television Institute of India. She began her career as a producer in 1983 with the Centre for Development of Instructional Technology, New Delhi, and as editor and assistant director on **"Maati Manas"**, Mani Kaul's 90-minute documentary on the myths, techniques and traditions of terracotta in India. She has had varied experience as a director on Pathfinders: **"Baba Amte"**, a 26-minute documentary on the human rights activist in 1999, and a 15-minute documentary on sujni embroidery in Bihar, Journeys, in 1998. She has also worked as editor on Ritu Sarin and Tenzing Sonam's **Big Treasure Chest for Future Children** and Anita Pratap's **Orphans of An Ancient Civilisation** both in 1999. Reena has won National Award for her documentory **Kamalabai**.

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन पुरस्कार

संगीत निदेशक विश्वदेव दासगुप्ता को रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

वर्ष 1998 की गैर-फीचर फिल्म में सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पुरस्कार **विश्वदेव गुप्ता** को अंग्रेजी भाषा की फिल्म '**ए पेंटर ऑफ इलोक्वेन्ट साइलेन्स, गणेश पायने**' को दिया जाता है। फिल्म में श्री दास गुप्ता ने लय के चिंतन भाव को दृश्यों में सजीव कर दिखाया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the music director Biswadeb Dasgupta.

The Award for the Best Music Direction of a Non-Feature Film of 1998 is given to Biswadeb Dasgupta for the film, **A PAINTER OF ELOQUENT SILENCE: GANESH PYNE** (English) for enriching the visuals with a contemplative sense of rhythm.

विश्वदेव दासगुप्ता

विश्वदेव दासगुप्ता ऐसे संगीत निर्देशक हैं जिन्होंने किसी घराना या अलग किसी से पारंपरिक प्रशिक्षण नहीं लिया है। अपने माता-पिता से संगीत प्रेम विरासत में मिला। उन्होंने 4 फिल्मों का निर्देशन किया और **'माझी'** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इस फिल्म के साथ सभी फिल्मों में उन्होंने बुद्धदेव दास गुप्ता की **'ताहेदेरकथा'** और **'चराचर'** में भी संगीत दिया है।

Biswadeb Dasgupta

A SELF-TAUGHT music director, Biswadeb Dasgupta has had no conventional training from any gharana or individual. Having inherited the love of music from his parents, his first love remains film direction. He has directed four films and won the National Award for **"Majhi"**, for which he also scored the music (as he does for all his films). He has also composed the music in films such as Buddhadeb Dasgupta's **"Tahader Katha"** and **"Charachar"**.

विशेष उल्लेख

उन्नी विजयन

प्रशस्ति

वर्ष 1998 के गैर-कथाचित्र निर्णायकमंडल द्वारा हिन्दी फिल्म **'जी करता था'** के लिए उन्नी विजयन का फिल्म के निर्माण में एक आत्मनिष्ठा एवं अन्वेषणात्मक शिल्प को साकार करने के लिए विशेष उल्लेख किया गया।

SPECIAL MENTION

UNNI VIJAYAN

Citation

The Special Mention for 1998 is made for Unni Vijayan for the film, **JEE KARTA THA** (Hindi), for his realisation of an innovative and a personalised style of constructing the film.

उन्नी विजयन

33 वर्षीय थार्वथ उन्नी विजयन, कोट्टयम के महात्मा गांधी विश्वविद्यालय से स्नातक हैं। उन्होंने पुणे के फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान से फिल्म संपादन में विशेषता सहित सिनेमा में डिप्लोमा भी किया है। फिल्म संपादक सुभाष गुप्ता के साथ वर्ष 1995 एवं 1996 के बीच प्रशिक्षु के बतौर काम करने के बाद उन्होंने दो मलयालम फिल्मों के लिए संपादक के. राजगोपाल के साथ भी काम किया। फिलहाल, वह डिजिटल मैजिक नामक स्टूडियों के लिए काम कर रहे हैं जहाँ उन्होंने कई विज्ञापन फिल्मों एवं धारावाहिकों पर काम किया।

Unni Vijayan

THIRTY-YEAR-OLD Tharavath Unni Vijayan is a graduate of the Mahatma Gandhi University, Kottayam. He has also done a diploma in cinema with a specialisation in film editing from the Film and Television Institute in Pune. Having apprenticed with film editor Subhash Gupta between January 1995 and 1996, he worked with another editor, K. Rajagopal, on two Malayalam films. He is currently working with a studio, Digital Magic, where he has handled serials and ad films.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए।

1. विज्ञान के तरीकों एवं प्रक्रियाओं वैज्ञानिकों के योगदान आदि समेत सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक फिल्म।

2. सर्वश्रेष्ठ प्रर्वत्तक फिल्म (पर्यटन, निर्यात, शिल्प, उद्योग आदि समेत)।

3. सर्वश्रेष्ठ कृषि फिल्म (पशुपालन, डेयरी पालन आदि समेत कृषि से जुड़े विषयों सहित)।

AWARDS NOT GIVEN

1. BEST SCIENTIFIC FILM INCLUDING METHOD AND PROCESS OF SCIENCE, CONTRIBUTION OF SCIENTISTS, ETC

2. BEST PROMOTIONAL FILM (TO COVER TOURISM, EXPORTS, CRAFTS, INDUSTRY ETC.)

3. BEST AGRICULTURAL FILM (TO INCLUDE SUBJECT RELATED TO AND ALLIED TO AGRICULTURE LIKE ANIMAL HUSBANDRY, DAIRYING ETC)

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सिनेमा 1998 का सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार

सिनेमाई भाषा और हिन्दी संवादों का विश्लेषण (हिन्दी)। लेखक डॉ. किशोर वासवानी
लेखक : **डॉ. किशोर वासवानी** को स्वर्ण कमल एवं 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार।
प्रकाशक : **हिन्दी बुक सेंटर** को स्वर्ण कमल एवं 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 का सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार "**सिनेमाई भाषा और हिन्दी संवादों का विश्लेषण**" पुस्तक को दिया जाता है। यह पुस्तक अध्ययन के नए क्षेत्र को शुरू करने, हिन्दी सिनेमा में भाषा के प्रादुर्भाव के मौलिक विश्लेषण और भारतीय थिएटर एवं साहित्य से इसके संबंधों पर रोशनी डालती है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA 1998

CINEMAEE BHASHA AUR HINDI SAMVADON KA VISHLESHAN (Hindi) by Dr Kishore Vaswani

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 15,000 to the author **DR KISHORE VASWANI**
Swarna Kamal and a cash prize of Rs 15,000 to the publisher, **HINDI BOOK CENTRE**

Citation

The Award for Best Book on Cinema for 1998 goes to **CINEMAEE BHASHA AUR HINDI SAMVADON KA VISHLESHAN** for taking on a new area of study and for its original analysis of the evolution of language in Hindi cinema, drawing links with Indian theatre and literature.

किशोर वासवानी

किशोर वासवानी का जन्म 1944 में सिंध में, जोकि अब पाकिस्तान मे है, हुआ था और वह बड़ोदरा में सिंधी भाषा को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रीय परिषद के निर्देशक है। वह हिन्दी साहित्य में एम.ए. एवं पी.एच.डी. हैं तथा उन्होंने संस्कृत, संगीत पत्रकारिता एवं फ्रेंच में भी डिप्लोमा किया है। टीवी वृत्तचित्र के लिए पटकथा लेखक तथा भारत के राष्ट्रीय फिल्म पुरातत्व के रिसर्च फेलो के रूप में उनका कैरियर बहुआयामी रहा है। उन्होंने कविताएं नामक हिन्दी कविताओं का संकलन भी लिखा है।

Kishore Vaswani

KISHORE VASWANI was born in Singh, now in Pakistan, in 1944, and is director of the National Council for Promotion of Sindhi Language, in Vadodara. A post-graduate in MA (Hindi Literature) and Ph.D in Hindi, he has also done diplomas in Sanskrit, music, journalism and French. He has has a varied career, as a scriptwriter for a TV documentary, research fellow with the National Film Archives of India, and written a collection of Hindi poems, **"Kavitayen".**

सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक पुरस्कार

समीक्षक : मीनाक्षी शेड्डे

समीक्षक **मीनाक्षी शेड्डे** को स्वर्ण कमल एवं 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 1998 के सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक का पुरस्कार **मीनाक्षी शेड्डे** को सहज एवं वस्तुपरक समीक्षा के लिए दिया जाता है। फिल्म को सामाजिक संदर्भ में देखने समझने की कोशिश में वह फिल्म की साधारण समीक्षा से आगे बढ़ जाती हैं। उसकी समीक्षा में सिनेमा के सौन्दर्य पर उसकी अच्छी पकड़ के प्रमाण मिलते हैं।

AWARD FOR BEST FILM CRITIC 1998 MEENAKSHI SHEDDE

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 15,000 to the film critic, **MEENAKSHI SHEDDE**

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1998 goes to Meenakshi Shedde for her lucid and objective criticism. She goes beyond the evaluation of a film in her attempt to place it in its social milieu and her work reflects a strong grasp of the aesthetics of cinema.

मीनाक्षी शेड्डे

मीनाक्षी शेड्डे द टाइम्स ऑफ इंडिया की सह-संपादक तथा फिल्म समीक्षक हैं। पिछले 16 वर्षों से वह द टाइम्स ऑफ इंडिया, द एशियन एज, द हिन्दू और द इन्डेपेन्डेन्ट जैसे राष्ट्रीय समाचार पत्रों में सिनेमा पर लिखती रही हैं। वह फेडेरेशन इंटरनेशनल डे-ला-प्रेस सिनेमैटोग्रैफिक (एफ.आई.पी.आर.ई.एस.सी.आई.) की सदस्य हैं और 1995 में जर्मनी में ओबरहौसेन इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल तथा 1998 में मुंबई में आयोजित लघु फिल्मों के लिए अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल जैसे कई सम्मानजनक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में समीक्षक की जूरी में रही हैं। बर्लिन, पेरिस, ओबरहौसेन, मैनहेइम - हैडेलबर्ग, विलो डे कोन्डे, मुंबई, हैदराबाद समेत एक दर्जन से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों की रिपोर्टिंग कर चुकी हैं। वह यूनाइटेड टेलीविजन में पूर्व सह-निदेशक मिड-डे की 1988 से 1990 तक टेलीविजन समीक्षक तथा डेबोनियर की 1985 से 1987 तक टेलिविजन समीक्षक रह चुकी हैं।

Meenakshi Shedde

MEENAKSHI SHEDDE is Assistant Editor and Film Critic of *The Times of India*. She has been consistent writer on cinema for the past 16 years for national newspapers such as *The Times of India*, *The Asian Age*, *The Hindu* and *The Independent*. A member of the Federation **"Internationale de la Presse Cinematographique"** (FIPRESCI), she has been on the festival of several prestigious international film festivals such as the Oberhausen International Film Festival in Germany in 1995 and the critics jury at the Mumbai International Film Festival for Short Films in 1998. She has covered over a dozen international film festivals, including those in Berlin, Paris, Oberhausen, Mannheim-Heidelberg, Vilo de Conde, Mumbai, Hyderabad. A former assistant director with United Television, she was television critic of **"Mid-day"** from 1988-90, and **"Debonair"** from 1985-87.

विशेष उल्लेख

बुक जूरी ने 1998 के लिए **गास्टन राबर्ज** की पुस्तक '**कम्युनिकेशन सिनेमा डेवेलपमेन्ट**' का विशेष उल्लेख किया है, जिसमें फिल्म के विषय पर बहुकोणात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है।

SPECIAL MENTION

The Book Jury makes a Special Mention for 1998 of **GASTON ROBERGE** for his book **COMMUNICATION CINEMA DEVELOPMENT** which brings a multidisciplinary approach to bear on the subject of film.

गैस्टन राबर्ज़

गैस्टन राबर्ज़ का जन्म 1935 में कनाडा के मौंट्रियल में हुआ था। मौंट्रियल विश्वविद्यालय से बी.ए. (क्लासिक) की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने सोसायटी ऑफ जीसस (जेसुइट्स) ज्वायन कर लिया। फिर आग्रह करने पर 1961 में उन्हें भारत भेजा गया। तब से वह ज्यादातर कलकत्ता में रह रहे हैं। 1970 में उन्होंने लांस एंजिल्स के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (यूसीएलए) से थिएटर आर्ट्स (फिल्म) में एम.ए. किया। उसी वर्ष स्वर्गीय सत्यजीत राय के साथ उन्होंने कलकत्ता में चित्रबनी में कम्युनिकेशन सेन्टर की स्थापना की। 1986 में उन्होंने कलकत्ता के सेंट जेवियर्स कालेज के एजुकेशनल मीडिया रिसर्च सेन्टर (इएमआरसी) की स्थापना की। इसका उद्देश्य टेलीविजन के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम बनाना था जिसे दूरदर्शन ने पूरे भारत में दिखाया। फादर राबर्ज़ इएमआरसी और चित्रबनी के निर्देशक थे। फिर बाद में 1996 में उन्हें सोशल कम्युनिकेशन सोसायटी का सचिव बनाने के लिए जेसुइट्स के मुख्यालय रोम में बुला लिया गया। तीन वर्षों तक रोम में रहने के बाद वह चित्रबनी के स्टाफ सदस्य के रूप में कलकत्ता आ गए। फादर राबर्ज़ भारत में फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान एवं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन के अतिथि व्याख्याता रहे हैं। उन्होंने सिनेमा पर काफी कुछ लिखा है।

Gaston Roberge

GASTON ROBERGE was born in Montreal, Canada, in 1935. After obtaining a BA (Classics) from the University of Montreal, he joined the Society of Jesus (Jesuits). At his request, he was sent to India in 1961. Since then he has been living mostly in Calcutta. In 1970, he obtained an MA in Theatre Arts (Film) from the University of California at Los Angeles (UCLA). In the same year, with the late Satyajit Ray, he founded the communication centre, Chitrabani, at Calcutta. In 1986, he founded the Educational Media Research Centre (EMRC) of St Xavier's College, Calcutta, one of the centres created by the University Grants Commission, to produce educational television programmes telecast throughout India by DD. Father Roberge was director of EMRC and of Chitrabani until 1996 when he was called to Rome, the headquarters of the Jesuits, to be the society's secretary for social communication. After three years in Rome, he came back to Calcutta as a staff member of Chitrabani. Father Roberge has been a guest lecturer at the Film and Television Institute of India and at the National Institute of Design. He has written extensively on cinema.

कथासारः Synopses :
कथाचित्र Feature Films

अग्निसाक्षी/मलयालम/140 मिनट

निर्माता : सृष्टि फिल्म्स **निर्देशन एवं पटकथा** : श्यामा प्रसाद, **कलाकार** : रजित कपूर शोभना, माडम्बु, प्रवीन **छायाकार** : अलगप्पन **ध्वनि आलेखक** : कृष्ण उन्नी **संपादक** बीना **कलानिर्देशक** : प्रेमचन्द्रन **संगीतकार** : कैथाप्रम नम्बूदिरी

थंकम नैयर, मृत भाई उन्नी के अंतिम संस्कार के लिए हरिद्वार आती है। इस मौके पर उसे अपनी बीती जिन्दगी को फिर से याद करने का अवसर मिलता है। एक युवा के रूप में उसका भाई उन्नी काफी धार्मिक एवं पारंपरिक मूल्यों में विश्वास करने वाला व्यक्ति था। जब थेथी उसकी पत्नी के बतौर उसके घर में आई तभी से उन्नी में बदलाव आने शुरू हुए। जब थेथी के भाई स्वतंत्रता सेनानी पी.के.पी. नंबूदरी को गिरफ्तार कर लिया गया तो थेथी को कहा गया कि वह फिर कभी अपने मैके न जाए। इस बीच थंकम ने शादी करने से मना कर दिया और उन्नी के हस्तक्षेप के बाद उसे शहर में अध्ययन करने की अनुमति दे दी गई। लेकिन जब थेथी की मां की मृत्यु हो गई और काफी विरोध के बाद उसे घर जाने की अनुमति दे दी गई तो उसने फैसला किया कि अब वह कभी भी उन्नी के पास नहीं लौटेगी। उसने स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा ले लिया और समाज सुधारक बन गई। मरने के पहले उन्नी ने थंकम के नाम एक पार्सल छोड़ा था जिसमें थेथी का मंगलसूत्र था और उन्नी के नाम लिखा गया एक पत्र था जिसमें थेथी ने लिखा था कि उसे कभी भी सुख नहीं मिला और उसने सन्यासिन बनने का फैसला लिया है। थंकम उसे हरिद्वारा में ढूंढ निकालती है और वे सालों के बाद फिर से मिल जाते हैं।

AGNISAAKSHI

Malayalam/140 Min.

Producer : Shristi Films **Direction and Screenplay :** Shyam Prasad **Cast :** Rajit Kapur, Sobhana, Madambir, Praveena **Cameraman :** Alagappan **Audiogrpaher :** Krishna Luxmi **Editor :** Bina **Art Director :** Premachandran **Music Director :** Kaithapram Namboodiri

THANKAM NAIR arrive in Haridwar to perform the final rituals of her late brother Unni. The occasion causes her to look back on her life. As a young man, her brother Unni was deeply pious and committed to tradition. When Thethi was brought into the household as his wife, changes came about in Unni. When Thethi's brother P.K.P. Namboodiri, a freedom fighter, was arrested, Thethi was told never to set foot in her natal home again. Meanwhile Thankam refused to marry and upon Unni's intervention was allowed to study in the city. But when Thethi's mother died and she was allowed to go home after a struggle, she decided never to return to Unni. She joined the independence movement and became a social reformer. Years rolled by. Unni died, leaving her a parcel with Thethi's mangalsutra and a letter she sent to Unni saying how she could never find happiness and had decided to become a sanyasin. Thankam locates her in Haridwar, where they finally meet after all these years.

अंत:पुरम/तेलुगू/120 मिनट

निर्माता : पी. किरण **निर्देशन एवं पटकथा** : पी. कृष्ण वम्सी **कलाकार** : प्रकाशराज, सौंदर्या, जगपति बाबू, शारदा **छायाकार** : एस.के भूपति **ध्वनि आलेखक** : मधुसूदन रेड्डी **संपादक** शंकर **कलानिर्देशक** : श्रीनिवास रानु **संगीतकार** : इलयाराजा

भानुमति और उसका चाचा बॉबी मारीशस में बड़े प्यार से रह रहे हैं। फिर उनकी जिन्दगी में प्रकाश आता है जो एक युवा उद्यमी है एवं बॉबी की फैक्टरी में काम करता है। प्रकाश और भानुमति की शादी हो जीती है और उन्हें एक बच्चा होता है जिसका नाम रखा जाता है राजा। तभी आंध्र प्रदेश के एक सुदूर गांव में एक बम विस्फोट की खबर आती है और उनका सुख भरा जीवन छिन्न-भिन्न हो जाता है वह परिवार प्रकाश की मां की हालत देखने आंध्र प्रदेश जाता है जो प्रकाश के पिता के विरोधियों नरसिम्ह के हमले में घायल हो गई है। यह दल उस बस पर भी हमला करता है जिसमें प्रकाश और उसका परिवार यात्रा कर रहे होते हैं। आखिरकार वे प्रकाश के पैतृक गांव अंत:पुरम पहुंचते हैं जहां कुलपति नरसिम्ह को उसकी पुत्रवधु पसंद नहीं आती। एक दिन प्रकाश की हत्या हो जाती है। भानुमति अपने घर मारीशस लौटने का फैसला करता है लेकिन वह अपने श्वसुर को एक छोटे चोर, विराजू की मदद से कैसे मात देती है, यही इस कहानी का मुख्य केन्द्रबिन्दु है।

ANTHAHPURAM

Telugu/120 Min.

Producer : P. Kiran **Direction and Screenplay :** P. Krishna Vams **Cast :** Prakash Raj, Somdarya, Jagapathi Babu, Sarada **Cameraman :** S.Ka. Bhoopathy **Audiographer :** Madhusudan Reddy **Editor :** Shambar **Art Director :** Srinivasa Raju **Music Director :** Ilayaraja.

BHANUMATHI and her uncle, Bobby, live in Mauritius and have a loving relationship. Bhanumathi is married to Prakash, who is an enterprising youngman. They have little son, Raja. This idyllic existence is torn apart by news of a bomb blast in a remote village in Andhra Pradesh. The family travels to see how badly Prakash's mother is injured in the attack by his father's rivals, Narasimha. The group also attack the bus Prakash and his family are travelling in. Finally, they escape it to arrive at Anthahpuram, Prakash's ancestral home, where the patriarch, takes an instant dislike to his daughter-in-law. One day, Prakash is killed. Bhanumathi decides to return home to Mauritius but her father-in-law refuses to let his grandson accompany her. How she outwits the old man with the help of a petty thief, Veeraju, is the crux of the story.

ASUKH

Bengali

Producer : D. Rama Naidu **Director :** Rituparno Ghosh, **Direction and Screenplay :** Rituparno Ghosh **Cast :** Soumitra Chatterjee, Debasre Roy, Shilajit Majumer, Gouri Ghosh **Cameraman :** Areek Mukhopadhyay **Andiographer :** Anup Mukhoparnosen **Editor :** Arghya Kamal Mitra **Art Director :** Indramil Ghosh **Music Director :** Debajyoti Mishra

IN Asukh, his fourth feature film, Rituparno Ghosh traverses familiar territory, the middle class woman's mind. Rohini, a popular film star, comes to a phase in her life when her fiance falls for a young starlet and her mother is struck down by an illness suspected to be AIDS. As her life unravels, including the relationship between her parents, whom she idolises, Rohini finds solace only in the words of Rabindranath Tagore. The movie marks the return of Soumitra Chatterjee to Bengali cinema as Rohini's father. It also marks the return of Debasree Roy to Rituparno Ghosh's fold. The movie, which is inspired by a Tagore poem, handles delicately the multiple pressures working on a woman's life.

असुख/बंगला

निर्माता : डी. रामानायडू **निर्देशन एवं पटकथा :** ऋतुपर्णो घोष **कलाकार :** सौमित्र चटर्जी, देबाश्री रॉय, शिलाजीत मजुमेर, गौरी घोष **छायाकार :** अविक मुखोपाध्याय **ध्वनि आलेखक :** अनूप मुखोपर्णोसेन **संपादक** अर्घ्यकमल मित्र **कलानिर्देशक :** इंद्रनील घोष **संगीतकार :** देबज्योति मिश्र

अपनी चौथी फीचर फिल्म असुख में ऋतुपर्णो घोष एक बार फिर अपने प्रिय विषय "मध्यवर्गीय स्त्री" की मानसिकता का चित्रण करते हैं। रोहिणी एक लोकप्रिय फिल्म अभिनेत्री है। उसके दिन आजकल अच्छे नहीं चल रहे। उसका मंगेतर दूसरी युवा अभिनेत्री के प्रेम में पड़ गया है और उसकी मां संभवतः एड्स की शिकार हो गई है। जिस माता-पिता को वह अपना आदर्श मानती रही जब उनसे भी उसके रिश्ते खराब हो जाते हैं तो वह रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं में शांति ढूंढती है। इस फिल्म में सौमित्र चटर्जी की रोहिणी के पिता की भूमिका में एक बार फिर बंगाली सिनेमा में वापसी होती है। इस फिल्म में देवीश्री राय की भी ऋतुपर्णो के खेमे में वापसी होती है। टैगोर की एक कविता से प्रेरित यह फिल्म एक स्त्री पर पड़ने वाले बहुस्तरीय दबावों का बहुत सूक्ष्मता से विवेचन करती है।

आत्मीयो स्वजन/बंगला/140 मिनट

निर्माता : धात्री फिल्म्स **निर्देशन** : राजा सेन **पटकथा** : उज्जल चटर्जी **कलाकार** : सौमित्र चटर्जी, सुप्रिया देवी, सव्यसाची चक्रवर्ती, ऋतुपर्ण सेनगुप्ता **छायाकार** : सौमेन्दु राय **संपादक** महादेव शी **कलानिर्देशक** : गौतम घोष **संगीतकार** : पार्थ सेनगुप्ता

दो उम्रदराज माता-पिता अपने बच्चों के साथ रहते हैं। ये लोग मानवीय मूल्यों के अवमूल्यन के उदाहरण हैं। निर्दयी, महत्वाकांक्षी एवं आत्मकेन्द्रित। उनकी दो बेटियां भी अपनी -अपनी घरेलू परेशानियों की शिकार हैं। एक का वैवाहिक जीवन टूट के कगार पर है तो दूसरी का पति एक भ्रष्ठ अफसर है जिसकी तलाश में सी.बी.आई. लगी हुई है। कहानी में उस वक्त मोड़ आता है जब वृद्ध व्यक्ति मरने को होता है और इस निरर्थक जीवन से अपनी पत्नी को भी मुक्त करने की इच्छा व्यक्त करता है। लेकिन उसकी पत्नी बच जाती है और तब उसे जिन्दगी की सही परिभाषा का पता चलता है। फिर धीरे-धीरे सभी पारिवारिक समस्याएं भी सुलझने लगती हैं और परिवार के सारे सदस्यों को यह अहसास हो जाता है कि सभी को एक दूसरे के सुख दुख में बराबर का हिस्सेदार होना चाहिए।

ATMIYO SWAJAN

Bengali/140 Min.

Producer : Dhatri Films **Director:** Raja Sen **Director :** Raja Sen **Screenplay :** Ujjal Chatterjee **Cost :** Soumitra Chatterjee, SupriyaDevi, Sabyasach Chakraborty, Rituparna Sengupta **Cameraman :** Soumendu Roy **Editor :** Mahadeb Sri **Art Director :** Goutam Bose **Music Director :** Partha Sengupta.

TWO aged parents live with three sons who are typical examples of urban decay: callous, ambitious or plain self-serving. Their two daughters are caught up in their own domestic wrangles. One is in a marriage that is verging on a breakdown and another is married to a corrupt officer being investigated by the CBI. The twist in the tale comes when the father is dying and is about to fulfill his desire to end his meaningless life - taking his wife with him. But when the wife survives and realises the true meaning of life, it is then that the family problems are resolved with every member realising they owe it to themselves and to their family to live on.

DR. BABASAHEB AMBEDKER

English/170 Min.

Producer : Ministry of Social Justice and Empowerment, Govt. of India & Director General, Govt. of Maharashtra **Director:** Jabbar Patel, **Director** : Sooni Taraporevala, Arun Sadhu, Daya Pawar **Cast :** Mamootty, Sonali Kulkarni, Mohan Gokhale, Mrinal Kulkarni **Cameraman :** Ashok Mehta **Audiographer :** Pramod Purandare **Editor** : Vijay Khochikar **Art Director :** Amar Haldipur.

AT a time that the caste system was an entrenched part of society, Babasaheb Ambedkar brought it to the centrestage of the political system. for Ambedkar it was a difficult task, especially as India was fighting the might of the British empire. Despite his well-known differences with Mahatma Gandhi and Jawaharlal Nehru, Ambedkar rose to become the author of the Indian Constitution, a document unrivalled by any other for its completeness. The film, Dr Babasaheb Ambedkar by Jabbar Patel captures this turmoil, the tears and the struggle that went into making Dalits a politically and socially conscious community.

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर/अंग्रेजी/ 70 मिनट

निर्माता : सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार तथा महानिदेशक (सूचना) महाराष्ट्र सरकार **निर्देशन** : जब्बार पटेल **पटकथा** : सूनी तारापोरवाला, अरुण साधु, दया पवार **कलाकार** : ममूटी, सोनाली कुलकर्णी, मोहन गोखले, मृणाल कुलकर्णी **छायाकार** : अशोक मेहता **ध्वनि आलेखक** : प्रमोद पुरन्दर **संपादक** विजय कोचीकर **कलानिर्देशक** : नितिन देसाई **संगीतकार** : अमर हल्दीपुर

ऐसे समय में जब जाति व्यवस्था समाज का एक अभिन्न अंग थी, बाबा साहेब अंबेडकर इसे राजनीतिक व्यवस्था के केन्द्र बिन्दु में ले आए। अंबेडकर के लिए यह एक मुश्किल कार्य था, खासकर तब जब भारत ब्रितानी साम्राज्य की शक्ति से जूझ रहा था। महात्मा गांधी एवं जवाहरलाल नेहरू से मतभेद के बावजूद वह भारतीय संविधान के लेखक बने, जो अपनी पूर्णता के मामले में एक अद्वितीय मिसाल है। फिल्म उस हलचल आंसुओं और संघर्ष को रेखांकित करती है जो दलितों के राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से जाग्रत समुदाय बनने की प्रक्रिया में पेश आया।

चिंताविष्टायया श्यामला/मलयालम/ 130 मिनट

निर्माता : सी. करुणाकरन **निर्देशन, पटकथा एवं अभिनय :** श्रीनिवासन **कलाकार :** संगीता, तिलकन **छायाकार :** एस. कुमार **ध्वनि आलेखक :** लक्ष्मी नारायण **संपादक** ए. श्रीधर प्रसाद **कलानिर्देशक :** मुथुराज **संगीतकार :** जॉनसन

श्यामला का पति विजयन शराब, ताश और दोस्तों के साथ हंसी मजाक में मगन रहता है जिससे श्यामला दुखी रहती है। उसके परिवार वाले उस पर अपना रास्ता बदलने का दबाव बढ़ाते हैं और वह एक तीर्थस्थान चला जाता है। वहां विजयन में अकस्मात एक परिवर्तन आता है और वह पूरी तरह भगवान की भक्ति में लीन हो जाता है। घर लौटने पर मांस एवं शराब का सेवन त्याग देता है और पूजा अर्चना करने लगता है। जब उसकी पत्नी उसके इस फिर अतिरंजनापूर्ण जीवन के लिए फटकारती है तो वह घर से भाग जाता है। लेकिन जब वह एक आश्रम में जाता है तो उसे अनुभूति होती है कि वह धार्मिक जीवन के लिए नहीं बना है। इस बीच, श्यामला ने जीवन की चुनौतियों का सामना करने का फैसला कर लिया है। विजयन घर लौटता है और पाता है कि उसकी पत्नी अब पहले की तरह क्षमाशील एवं विनम्र नहीं रही। वह जिम्मेदारी से भरी जिन्दगी गुजारना सीख लेता है और तब उसकी पत्नी भी उसे स्वीकार कर लेती है।

CHINTHAVISHTAYAYA SHYAMALA

Malayalam/130 Min.

Producer : C.K. Gopinath **Director :** Venu **Screenplay :** M.T. Vasudevan Nair **Cast :** Krishna, Manju Warrier, Nedumudi Venu K.P.A.C. Lalitha **Cameraman :** Sunny Joseph **Audiographer :** N. Harikumar **Editor :** Bina **Art Director :** Samir Chanda **Music Director :** Vishal Bhardwaj Saratha.

SHYAMALA is lonely because of her husband Vijayan's erratic ways. Surrounded by friends and drinks, cards and jokes, finally, both families prevail upon Vijayan to mend his ways, beginning with a pilgrimage to Sabarimala. Here a sudden transformation occurs. Vijayan becomes completely devoted to God. He returns home, prays, conducts poojas, shuns meat and alcohol. When he is reprimanded by his wife for his extreme ways, he runs away from home. But when he goes to an ashram, he realises he is not cut out for the holy life. Shyamala, meanwhile, has decided face up to life's challenges. Vijayan returns home and finds that his wife is no longer the forgiving, amenable woman she was when he left. He learns to behave responsibly and it is only then that she accepts him.

DAYA

Malayalam/150 Min.

Producer : C.K. Gopinath **Director :** Venu **Screenplay :** M.T. Vasudevan Nair **Cast :** Krishna, Manju Warrier, Nedumudi Venu K.P.A.C. Lalitha. **Cameraman :** Sunny Joseph **Audiographer :** N. Harikumar **Editor :** Bina **Art Director :** Samir Chanda **Music Director :** Vishal Bhardwaj, Sarath.

Daya a slave girl pushes her master, Mansoor, who has been wasting his life luxuriating in his inheritance, into selling her for a handsome sum. When she is about to be bought by a rogue, Ali, the king's envoys intervene and subject Daya to several tests. Daya passes all and and the king allowed her to stay with Mansoor. Daya starts making carpets but Ali took revenge by kidnapping her. Daya escapes, stealing off to a neighbouring state in the guise of a man. As minister, she assumes enormous popularity with her policies. So much so that the king is happy enough with her to offer the hand of his daughter. But by this time, Daya locates Mansoor and they are united. The king is told about the deceit and is duly angered by it. He forwards the matter to the royal council, which demands that she be pardoned.

दया/मलयालम/150 मिनट

निर्माता : सी.के. गोपीनाथ **निर्देशक :** वेणु **पटकथा :** एम.टी. वासुदेवन नायर **कलाकार :** कृष्ण, मंजु वारियर, नेदीमुदी वेणु, के.पी.ए.सी. ललिता **छायाकार :** सनी जोसेफ **ध्वनि आलेखक :** एन. हरिकुमार **संपादक** बीना **कलानिर्देशक :** समीर चन्दा **संगीतकार :** विशाल भारद्वाज, शरद गांधी

दया एक संपन्न एवं अय्याश व्यक्ति मंसूर की गुलाम है। वह मंसूर को प्रेरित करती है कि वह उसे एक अच्छी रकम के बदले बेच दे। जब उसे बेचा जा रहा होता है तो राजा का दूत अली दया की कई परीक्षाएं लेता है। दया सबमें सफल हो जाती है और राजा खुश होकर उसे मंसूर के साथ ही रहने की इजाजत देता है। दया कालीन बनाना शुरू कर देती है लेकिन अली उससे प्रतिशोध लेने के लिए उसका अपहरण कर लेता है। दया बच जाती है और पुरुष के वेश में पड़ोसी राज्य में चली जाती है। वहां मंत्री बनकर अपनी नीतियों के कारण वह इतनी लोकप्रियता अर्जित करती है कि राजा उसे अपनी बेटी का हाथ देना चाहता है। लेकिन अब तक दया मंसूर को ढूंढ लेती है और उसके साथ रहने लगती है। राजा को उसकी इस धोखाधड़ी के बारे में जब बताया जाता है तो उसे बहुत क्रोध आता है। वह इस मुद्दे को शाही परिषद के हवाले कर देता है जो उसे माफ कर देने पर राजी हो जाती है।

दिल से/हिन्दी/167 मिनट

निर्माता : इंडिया टॉकीज **निर्देशन एवं पटकथा :** मणिरत्नम **कलाकार :** शाहरुख खान, मनीषा कोइराला, पीयूष मिश्र, प्रीती जिन्टा **छायाकार :** संतोषसिवन **ध्वनि आलेखक :** एच. श्रीधर **संपादक** समीर चन्दा **संगीतकार :** ए.आर. रहमान

अमरकान्त वर्मा, जो एक शहीद सैन्य अधिकारी का पुत्र है, आकाशवाणी का संवाददाता है उत्तर-पूर्व क्षेत्र में गया हुआ है। उसके कार्य के ही दौरान, जिसमें एक उग्रवादी गुट के प्रमुख से मिलना शामिल है, एक खूबसूरत युवती मेघना से उसकी मुलाकात होती है। अमर उसके मोहपाश में बंधता चला जाता है। वह उसका पीछ करते-करते लद्दाख चला जाता है लेकिन मेघना वहा भी उसके करीब नहीं आती और उसके लिए एक नोट छोड़ जाती है। जिसमें लिखा है, कुछ लोगों का जीवन रेत पर लिखी इबारत के समान होता है। हवा के एक झोंके से वे मिट जाते हैं। जब अमर की शादी तय हो चुकी होती है तो अचानक वह दिल्ली में उसे मिलती है और अमर उसे आकाशवाणी में एक नौकरी दिलाने का प्रयास करता है। और उससे प्रेम का प्रतिदान मांगता है, उसके लिए अपने जीवन की कुर्बानी देने की बात भी करता है लेकिन वह उससे एक निश्चित दुरी बनाए रखती है। इस बात का कि वह एक आंतकवादी है और उसकी साजिश में गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति पर हमला करना भी शामिल हे का पता धीरे-धीरे ही लग पाता है। क्या अमर उसका मिशन विफल कर पाता है? क्या वह अपने मोह से मुक्त हो पाता है?

DIL SE...

Hindi/167 Min.

Producer : India Talkies **Director:** Mani Ratnam, **Direction and Screenplay :** Maniratnam **Cast :** Shahrukkhan, Manisha Koireala, Piyush Misra, Preity zinta. **Cameraman :** Santosh Sivan **Audiographer :** H. Sridhar **Editor :** Samir Chanda **Music Director :** A.R. Rahman.

AMAR KANT VARMA, the son of a deceased army officer, is a reporter with All India Radio, has gone to North-East on an assignment. While at work, which involves meeting the head of a militant faction, he comes across a beautiful young woman named Meghna and fell in love with her. He tracks her down to Ladakh, but there again she evades him, leaving him with a note in the sand which says: "Some people's lives are like words written on the sand. One gust of wind and they disappear." It is when he is about to marry that she surfaces in New Delhi, asking him for a job in AIR. He gives in and wants more from her, pledging to give up his life for her, but she remains steadfast in maintaining a distance from him. That she is a terrorist who plans to attack the President during the Republic Day parade is something that unravels slowly. Can he abort her mission? Can he get rid of his obsession?

गॉड मदर

निर्माता : मैसर्स ग्रामको फिल्म्स **निर्देशन एवं पटकथा** : विनय शुक्ला **कलाकार** : मिलिन्द गुनाजी, शबाना आज़मी, निर्मल पाण्डे **छायाकार** : राजन कोठारी **ध्वनि आलेखक** : नरिन्दर सिंह **संपादक** : रेणु सलूजा **संगीतकार** : विशाल भारद्वाज

यह एक ऐसी औरत की कहानी है जो अहिंसा की पुजारन होने से अपने पति के हत्यारों से प्रतिशोध लेने वाली में तब्दील हो जाती है और फिर एक तरह का सत्ता केन्द्र बन जाती है। राम्भी, वीरम की विधवा है। वीरम मेड़ जाति का नायक है जिसे एक शक्तिशाली राजनितिज्ञ केशुभाई बहला-फुसला कर एक माफिया डॉन बना देता है। लेकिन जब वीरम अहिंसा की शपथ ले लेता है तो केशुभाई उसकी हत्या कर देता है। उसकी निगाहें अब वीरम की पत्नी राम्भी पर है जिसे वह नया माफिया डॉन बनाना चाहता है लेकिन राम्भी केशुभाई की उम्मीदों से कहीं चतुर साबित होती है। वह तालुक पंचायत का निर्वाचित अध्यक्ष बन जाती है और जो कोई उसकी खिलाफत करने की हिम्मत करता है उसे वह मिटा देने में भी संकोच नहीं करती, यहां तक की अपने जेठ को भी। विधानसभा का चुनाव एक निर्दयी राजनितिज्ञ के रूप में उसकी स्थिति को और मजबूत ही करता है। लेकिन जब उसका बेटा करसन वयस्क हो जाता है और उसी के नक्शेकदम पर चलना चाहता है कि जो चीजें पसंद हो उसे कैसे भी हथियाओ तब जाकर राम्भी की समझ में यह बात आती है कि अब तक वह जिस रास्ते पर चलती रही है वह कितना गलत है।

GODMOTHER

Hindi/

Producer : Granco Films **Director:** Vinay Shukla **Direction and Screenplay :** Vinay Shukla **Cast :** Milind Gunaji, Shabana Azmi, Nirmal Pandey **Cameraman :** Rajan Kothari **Audiographer :** Narinder Singh **Editor :** Renu Saluja **Music Director :** Vishal Bhardwaj

THIS is the story of a woman who grows from being a votary of non-violence to an avenger of her husband's murderer and a power centre in her own right. Rambhi, is the widow of Veeram, a hero of the Mer community who is manipulated into becoming a mafia don by the powerful politician Keshubhai. Once he takes an oath of non-violence, Veeram is killed at the hands of Keshubhai, who now looks at Rambhi to replace her husband. But Rambhi proves to be more than a match for Keshubhai's designs - she agrees to allow herself be elected president of the taluka panchayat, make no mistake - anyone who opposes her finds themselves being eliminated, even her brother-in-law. It is her election to the Vidhan Sabha which seals her ascent as a ruthless politician. But it is when her son Karsan grows up to become a man and parrots her philosophy - get what you want, any way you want - that Rambhi comes to learn the error of her ways.

HOOMALE

Kannada/150 Min.

Producer : Usha Rao K.S. **Director:** Nagathihalli Chandrashekhar **Direction and Screenplay :** Nagathihalli Chandrasekar **Cast :** G. Ramesh, Suman nagarkar, H.G. Dattatreya, Vanishree **Cameraman :** G.S. Bhaskar **Audiographer :** S. Mahendran **Editor :** B.S. Kemparaj **Art Director :** Shashdhara **Music Director :** Ilayaraja

SANTOSH is a young creative director in an advertising firm, full of energy and enthusiasm. His home reflects his outgoing, fun-loving spirit: his grandparents, parents, a bachelor uncle, two sisters, a domestic help, a pet dog and a cute cat. Into this vision of perfect domesticity he has to usher in whoever his wife is to be. When he watches a young woman member in a TV show audience arguing forcefully for marriage, he is impressed enough to think she will fit in perfectly with his family. She is a Kannada girl who lives in Assam. He goes off to locate her, only to discover that she is the mother of a small child and a young widow. Her husband was killed in militant action. The film deals with both the touchy topic of widow remarriage as well as of a state battling with terrorism.

हूमाले/कन्नड़/150 मिनट

निर्माता : उषा राव के.एस. **निर्देशन एवं पटकथा :** नागाथहल्ली चन्द्रशेखर **कलाकार :** जी. रमेश, सुमन नागरकर, एच.जी. दत्तात्रेय, वाणीश्री **छायाकार :** जी.एस. भास्कर **ध्वनि आलेखक :** एस. महेन्द्रन **संपादक** बी.एस. केम्पराज **कलानिर्देशक :** शशीधर **संगीतकार :** इलयाराजा

संतोष एक विज्ञापन फर्म में कार्यरत युवा एवं सृजनशील निदेशक है जो ऊर्जा एवं उत्साह से भरपूर है। उसके घर पर उसके दादा-दादी, माता-पिता, एक कुंवारे चाचा, दो बहनें, एक नौकर, एक पालतू कुत्ता एवं एक प्यारी बिल्ली है। ऐसे खुशमुमा जीवन में अब उसे एक मनपसंद पत्नी की ही जरूरत है। जब वह एक टी.वी. कार्यक्रम में एक युवती को शादी के बारे में अपने विचार रखते देखता है तो वह उससे काफी प्रभावित होता है और उसे अपनी पत्नी बनाने की बात सोच लेता है। वह एक कन्नड़ लड़की है जो असम में रहती है। वह उस लड़की को ढूंढने जाता है जहां उसे पता चलता है कि वह एक युवा विधवा और एक बच्चे की मां है उसके पति की आंतकवादियों ने हत्या कर दी थी। यह फिल्म विधवा पुनर्विवाह के मर्म एवं आतंकवाद से पीड़ित राष्ट्र की व्यथा दोनों मुद्दों को उभारती है।

HOUSE FULL

Tamil/127 Min.

Producer, Bioscope Film Framers, Director, Screenplay and Actor : R. Parthepan **Director:** R. Parthepan, **Cast :** Shivalakshman, Surya, Raja, **Cameraman :** M.V. Pannerselvam **Audiographer :** M. Ravi **Editor :** M.N. Raja **Art Director :** R.K. Nagharaj **Music Director :** Ilayaraja.

AN old man, affectionately known as Ayya, owns a cinema hall called Bharath. The police receive a call one day that says some bombs are being kept in this theatre. They come on a search mission but find that the hall is full- people will panic if there is an alarm. Indu, a young flower vendor, and Hameed, a lorry cleaner, decide to celeberate the confirmation of their marriage by going to the cinema. Even as they are going in, Indu is sought out to make a garland. Hameed goes inside alone. She is prevented from going in by the police once the scare is on. So is Ayya's wife. Will they manage to save their husbands?

हाउसफुल/तमिल/127 मिनट

निर्माता : मैसर्स बाइस्कोप फिल्म फ्रेमर्स **निर्देशन, पटकथा एवं अभिनय :** आर. पार्थेपन **कलाकार :** सुवालक्ष्मी, सूर्या, रोजा **छायाकार :** एम.वी. पन्नीरसेल्वम **ध्वनि आलेखक :** आर.के. नागराज **संगीतकार :** इलयाराजा

एक बूढ़ा आदमी जिसे प्यार से सभी अय्या कहते हैं, भारत नामक एक सिनेमा हॉल का मालिक है। एक दिन पुलिस को सूचना मिलती है कि इस सिनेमा हॉल में कुछ बम रखे जा रहे हैं। वे उसकी खोज करने आते हैं लेकिन पाते हैं कि सिनेमा हॉल दर्शकों से पूरा भरा हुआ है, खतरे की बात सुनते ही वहां भगदड़ मच जाएगी। फूल बेचने वाली एक युवा लड़की इंदु एवं बस क्लीनर हमीद अपनी शादी की बात तय हो जाने की खुशी के उपलक्ष्य में सिनेमा जाने का प्रोग्राम बनाते हैं। जब वे भीतर जा रहे होते हैं तो इंदु एक माला बनाने के लिए बाहर ही रूक जाती है। हमीद अकेला सिनेमा हॉल के अंदर चला जाता है। जब बम की जांच शुरू होती है तो पुलिस इंदु को सिनेमा हॉल के बाहर ही रोक देती है। अय्या की पत्नी के साथ भी ऐसा ही होता है। क्या वे अपने पतियों की जान बचा पाने में सफल हो पाएंगी।

हु तू तू/हिन्दी/173 मिनट

निर्माता : धीरजलाल शाह **निर्देशन एवं पटकथा :** गुलज़ार **कलाकार :** सुनील शेट्टी, तब्बू, नाना पाटेकर, सुहासिनी मुले **छायाकार :** मनमोहन सिंह **ध्वनि आलेखक :** नरिन्दर सिंह **संपादक** रवि सदा रामकोटि **कलानिर्देशक :** नितिन देसाई **संगीतकार :** विशाल

पन्ना ने अपनी मां को शेवरी गांव के एक छोटे से स्कूल की शिक्षिका से राज्य की मुख्यमंत्री बनते हुए देखा है। मालती बर्वे पहले सिर्फ एक सामाजिक कार्यकर्ता थी। ग्राम पंचायत के निर्वाचित प्रतिनिधि सावंत राव गादरे से मिलने के बाद वह महिला केन्द्र की प्रमुख बना दी जाती है और धीरे-धीरे वह नगर में पार्टी की मुख्यधारा में शामिल हो जाती है और अंततोगत्वा सावंत राव सरकार में मंत्री बन जाती है। उसका बेटा अरुण पढ़ाई करने विदेश चला जाता है। पन्ना पुलिस अकादमी मे है, उसका मृदुभाषी पति अपना भवन निर्माण का व्यवसाय संभालता है। कोई जिंदगी इससे अच्छी क्या हो सकती है। लेकिन तभी एक अमीर व्यावसायी आदित्य पटेल और एक दलित कवि भाऊ का पन्ना की जिन्दगी में प्रवेश होता है। आदित्य और पन्ना भाऊ की कविताओं से सम्मोहित हो जाते हैं। भाऊ का मालती बर्वे पर सशक्त प्रभाव है। ''हु तू तू'' व्यक्तिगत जिन्दगियों एवं राजनिति के बीच रिश्ते की खोज करता है।

HU TU TU

Hindi/178 Min.

Producer : Dhirajlal Shah **Director:** Gulzar **Direction and Screenplay :** Gulzar **Cast :** Sunil Shetty, Tabu, Nana Patekar, Suhasini Mulay **Cameraman :** Manmohan Singh **audiographer :** Narinder Singh **Editor :** Ravi Sada Ramkoti **Art Director :** Nitin Desai **Music Director :** Vishal

PANNA has seen the transformation of her mother from a school teacher in a small school in Shewri village to becoming the chief minister of the state. Malti Barve, was just a social worker who, upon being introduced to the elected representative of the village constituency, Sawantrao Gadre, moves from being head of the mahila kendra to becoming part of the party mainstream in the city to finally becoming cabinet member in Sawantrao's government. Her son Arun goes to study abroad, Panna is at the police academy, her soft-spoken husband runs his own construction business. Life couldn't be better. But that is until Aditya Patel, the son of a wealthy industrialist and Bhau, a Dalit poet, enter Panna's life. Aditya and Panna are mesmerised by Bhau's poetry. Bhau, is a powerful influence on Malti Barve. **Hu Tu Tu** explores the relationship between politics and personal lives.

जननी

निर्माता, निर्देशन एवं पटकथा : राजीवनाथ **कलाकार** : बॉबी, कविता रामचन्द्रन, पी.ए. लतीफ, रोजीलिन **छायाकार** : सुरेश पी. नायर **ध्वनि आलेखक** : राजेन्द्रन, हुसैन **संपादक** बीना **संगीतकार** : औसपचन

यह फिल्म सेवानिवृत ननों के कान्वेन्ट में मदर गोरेट्टी के आगमन के साथ शुरू होती है। वहां जीवन नीरस है लेकिन क्रिसमस पर बच्चे के आगमन के साथ वहां सारा कुछ बदल जाता है। हालांकि उस दिन वे बच्चे को दूध पिलाते हैं लेकिन अगले दिन वे उसे एक अनाथालय भेजने का फैसला करते हैं। पर शहर जाने का पुल ध्वस्त हो जाता है। ननें उस बच्चे को कुछ दिन और अपने पास रखने का फैसला करती हैं और यह जानकर बहुत खुश होती हैं कि एक अमरीकी युगल उसे गोद लेना चाहता है। गोद लेने की औपचारिकता पूरी होने तक वे बच्चे के प्रति भावनात्मक रूप से काफी जुड़ चुकी होती हैं। लेकिन जब उन्हें यह सूचना मिलती है कि अमरीकी युगल किसी और बच्चे को गोद लेना चाहते हैं तो ननें उस बच्चे को अनाथालय में भेजने को बाध्य हो जाती हैं। जीवन एक बार फिर नीरस और निरर्थक दिनचर्या में गुजरने लगता है।

JANANI

Malayalam/90 Min.

Producer, Director and Screenplay : Ramachandran, P.A. Latife, Rosiline **Director:** Rajeevnath **Cameraman :** Suresh P. Nair **Audiographer :** Rajendran, Hussain **Editor :** Beena **Music Director :** Ouse Pachan.

THE film begins with the arrival of Mother Goretti into a convent for retired nuns. Life is dull here. But the arrival of a baby on Christmas makes up for all that. Though they feed the baby that day, they decide to send it to an orphanage the next day. But the bridge collapses. The nuns decide to keep the baby for a few days and are overjoyed to learn that an American couple wants to adopt it. As they wait for the formalities of the adoption to be over, have become quite attached to the baby. But when news comes that the couple in the US are about to have another baby, the nuns are forced to send the baby to an orphanage. Life settles down into its meaningless routine again.

JEANS

Tamil/170 Min.

Producer : Jeans Productions **Director:** Shankar **Direction and Screenplay :** Shankar **Cast :** Prashanth, Aishwarya Rai, nasser, Lakshmi, Radhika **Cameraman :** Ashok Kumar **Audiographer :** H. Sridhar **Editor :** B. Lerim **Art Director :** Thota Tharami, bala **Music Director :** A.R. Rahman.

It tells the story of a romance between Madhumitha and Viswanathan, when the former lands in the US, for her grandmother's brain surgery. Viswanathan helps her and they fall in love. But there is a catch. Viswanathan has a twin brother, Ramamurthy, and their father, Nachiappan, will allow them to marry only twin sisters to prevent family disharmony. Madhumitha now has to disguise herself as Vaishnavi, and conveniently, Ramamurthy falls in love with her. But the lie is exposed when the twins have to marry the same day. Much drama happens but finally the union does go through and Nachiappan understands that true love cannot be rendered asunder.

जीन्स/तमिल/170 मिनट

निर्माता : जीन्स प्रोडक्शन्स **निर्देशन एवं पटकथा :** शंकर **कलाकार :** प्रशान्त, ऐश्वर्या राय, नसीर लक्ष्मी, राधिका **छायाकार :** अशोक कुमार **ध्वनि आलेखक :** एच. श्रीधर **संपादक** बी. लेनिन **कलानिर्देशक :** थोटा थरणी, बाला **संगीतकार :** ए.आर. रहमान

यह मधुमिता एवं विश्वनाथन के बीच की प्रेम कहानी है जो मधुमिता के अपनी दादी के ब्रेन सर्जरी (इलाज) के लिए अमरीका पहुंचने के बाद शुरू होती है। विश्वनाथन उसकी सहायता करता है और दोनों में प्रेम शुरू हो जाता है। लेकिन इसमें एक अड़चन भी है। विश्वनाथन का जुड़वा भाई राममूर्ति एवं उसके पिता नचिप्पन उसे केवल जुड़वां बहनों से ही शादी की अनुमति देंगे ताकि पारिवारिक सामंजस्य बना रहे। मधुमिता को वैष्णवी का रूप धारण करना पड़ता है और राममूर्ति धीरे-धीरे उसका दीवाना हो जाता है। लेकिन उसका झूठ तब पकड़ में आ जाता है जब दोनों भाइयों की शादी एक ही दिन तय हो जाती है। इसके बाद काफी नाटकीय परिस्थितियां आती हैं और आखिरकार वे मिल जाते हैं और विश्वनाथन के पिता समझ जाते हैं कि सच्चे प्रेम को अलग नहीं किया जा सकता।

कभी पास कभी फेल/हिन्दी/90 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र **निर्देशक एवं छायाकार** : वीरेन्द्र सैनी **पटकथा** : सईद मिर्जा, अशोक मिश्र **कलाकार** : सजिल पारीख **संपादक** जावेद सय्यद **कलानिर्देशक** : गौतम सेन **संगीतकार** : रजत ढोलकिया

रोबिन एक 8 साल का लड़का है जो अंकों के मामलों में असाधारण रूप से तेज है। आम तौर पर वह अपनी खुशी अपने कुत्ते कोको के साथ बांटता है। उसका अंकल जो एक तिकड़ी व्यक्ति है। वह रोबिन को अपने साथ पंजिम ले जाना चाहता है, रोबिन कोको को भी साथ ले जाता है। पंजिम में अंकल जो और आंटी शील पर्यटकों को रोबिन के इस असाधारण गुण के बारे में बताते हैं, उनके हर गणितीय सवाल का जवाब रोबिन से दिलवाते हैं और उनसे पैसे ऐंठते हैं। धीरे-धीरे अंकल जो मालामाल हो जाता है और रोबिन एक मशहूर शख्सियत बन जाता है। जिसके फोटो टी.वी. अखबारों आदि में आने लगते हैं। एक दिन टी.वी. वाले उसके लिए एक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं लेकिन यहां रोबिन की प्रतिभा अचानक विलुप्त हो जाती है। उसकी एकमात्र इच्छा अब सिर्फ घर लौटने की है। वह एक ट्रक ड्राइवर के साथ घर भाग जाता है। जैसे ही वह घर पहुंचता है उसकी चमत्कारिक शक्तियां फिर से लौट आती हैं।

KABHI PASS KABHI FAIL

Hindi/90 Min.

Producer : N'CYP **Director:** Virendra Saini **Director, Cameraman :** Virendra Saini **Screenplay :** Saeed Akhtar Mirza & Ashok Mishra **Child Artist :** Sajil Parikh **Editor :** Javed Sayyed **Art Director :** Gautam Sen **Music Director :** Rajat Dholokia

AN eight-year-old, Robin, has an amazing natural talent for numbers, and is generally a happy child who shares his joy with Koko, his dog. He his uncle Joe formulates a plan to take Robin with him to Panjim, where he proposes to exploit his talent. Robin took koko along with him. Once in Panjim, Joe and his wife Shiela make a curiosity out of Robin, showing him off to tourists who are supposed to pay for every puzzle Robin solves. Uncle Joe starts to rake in the cash and Robin becomes a celebrity with appearances on television and articles in newspapers. A television network structures a show round Robin but it here that inspiration deserts him completely. All he wants to do now is return home. He runs away with a truck driver. And as soon as he's home, his talent comes flooding back - a washerwoman poses a problem to him and Robin answers correctly. All is well again.

कन्नेझुथि पोट्टुम थोट्टू/मलयालम/

127 मिनट

निर्माता : एस.एन. रघुचन्द्रन नायर **निर्देशन एवं पटकथा :** टी.के राजीवकुमार **कलाकार :** तिलकन, मंजु वारियर, बीजू मेनन **छायाकार :** रवि के. चन्द्रन **संपादक** श्रीकर प्रसाद **कलानिर्देशक :** साबू सिरिल **संगीतकार :** एम.जी. राधाकृष्णन

कुट्टानाद अपनी हरियाली, झरनों एवं मेहनतकशों लोगों के लिए प्रसिद्ध है। फसल कटने के मौसम में भद्रा इस क्षेत्र के एक गांव में आती है। हालांकि दिखावटी रूप से वह यहां एक मजदूर के रूप में आई है लेकिन उसका असली उद्देश्य एक कड़वे रहस्य का पर्दाफाश करना है कि उसके पिता को स्थानीय जमींदार नाटेसन ने बांध में आए दरार को दुरूस्त करने के लिए मानव बलि देने की आड़ में कैसे जिंदा दफन कर डाला था। वह बांध समस्त गांववासियों की आजिविका, धान की फसलों को बाढ़ से बचाने के लिए आवश्यक है। मूल रूप से प्रतिशोध से भरी इस फिल्म में नाटेसन और उसके बेटे उधामान का जटिल संबंध और भद्रा और मूसाकुट्टी के बीच का प्रेम संबंध भी है। स्थानीय देवी के रूप में भद्रा का परिणत होना नारी शक्ति और कामुकता को उभारने के फिल्म के संदेश का ही हिस्सा है।

KANNEZHUTHI POTTUM THOTTU

Malayalam/127 Min.

Producer : S.N. Reghuchandran Nair **Director:** T. K Rajeev Kumar **Direction and Screenplay :** T.K. Rajeev Kumar **Cast :** Thilakan, Manjuwarrier, Biju Menon **Cameraman :** Ravi, K. Chandran **Editor :** Sreekar Prasad **Art Director :** Sabu Cyrl **Music Director :** M.G. Radha Krishnan.

KUTTANAD is famous for its lush green backdrop, sprawling backwaters and its had-working population. It is harvest time when Bhadra comes to a village in this area. Although she is here ostensibly as a wage labourer, her real purpose is to expose a bitter secret - that her father, Chandrappan, was buried alive by the local landlord Natesan in the guise of performing a human sacrifice to solder the crack in the bund that protects the paddy fields, the source of livelihood for the entire village. Added to the central revenge drama is the complicated relationship between Natesan and his son, Uthaman, and the burgeoning love affair between Bhadra and Moosakutty. Bhadra's transformation into the local deity, Veera Bhadra, continues the exploration of female power and sexuality that the film engages in.

KANTE KUTURNE KANU

Telugu/137 Min.

Production, Direction and Screenplay, Actor : Dasari Narayana Rao **Director:** Dasari Narayana Rao **Cast :** Jayasudha, Brahmaji, Ramiya Krishna **Cameraman :** K.S. Hari **Audiographer :** Raj Sekhar **Editor :** B. Krishnam Raju **Music Director :** V. Srinivas.

THE film highlights the importance of a girl child. The first part deals with Jyothi, a child who is allowed to be born only because she is associated with a male twin. Her life is a constant case of discrimination : whether it is in her twin brother going to a convent and her going to a municipal school or whether it is in the housework she is forced to do. Yet, Jyothi excels in academics, unlike her brother, and the intervention of a teacher saves her schooling from being aborted by her father.

कंटे कुतुरने कानु/तेलुगू/137 मिनट

निर्माता, निर्देशन, पटकथा एवं अभिनय : दासरि नारायण राव **कलाकार :** जयासुधा, ब्रह्माजी, रम्याकृष्ण **छायाकार :** के.एस. हरि **ध्वनि आलेखक :** राजशेखर **संपादक :** बी. कृष्णम राजु **संगीतकार :** वी. श्रीनिवास

एक शिशु कन्या ज्योति को इसलिए पैदा होने दिया जाता है क्योंकि वह एक नर शिशु के साथ पैदा होती है। उसकी जिंदगी भेदभाव की एक मिसाल है, चाहे उसके भाई के कन्वेन्ट में जाने और उसके म्युनिसिपल स्कूल में पढ़ने की बात हो या फिर घर का कामकाज हो। फिर भी ज्योति अपने भाई के विपरीत पढ़ाई में अव्वल आती है और एक शिक्षक के हस्तक्षेप से वह स्कूल की पढ़ाई पूरी कर पाती है। बाद में वही शिक्षक उसके अभिभावक तुल्य बन जाते हैं। वह एक युवक विजय के प्यार मे पड़ जाती है जिसके माता-पिता उसे स्वीकार करने से इंकार कर देते हैं। तभी एक दंपत्ति जिनकी अपनी छोटी बेटी 7 वर्ष की उम्र में बिछड़ गई है, उसके समर्थन में आगे आते हैं और विजय के परिवार की मांगो को पूरा करने में सहायक होते हैं। जब उनका बेटा उन्हें छोड़ कर चला जाता है, ज्योति उन्हें सहयोग करने के लिए कामकाज करने का फैसला करती है लेकिन विजय इस बात को स्वीकार नहीं कर पाता। ज्योति उसे भी छोड़ देती है और इस बात का प्रमाण देती है कि अक्सर बेटियाँ माता-पिता के लिए बेटों से ज्यादा उपयोगी हो सकती हैं।

किछु संलाप किछु प्रलाप/बंगला/

116 मिनट

निर्माता : हिल्लोलदास **निर्देशन, पटकथा एवं अभिनय :** अशोक विश्वनाथन **कलाकार :** संजीवन गुहा, नंदिनी घोषाल, लाबोनी सरकार **छायाकार :** शुभाशीष बनर्जी **संपादक** महादेव शी **कलानिर्देशक :** अमिताभ धर **संगीतकार :** गौतम चटर्जी

न्यूटन एक आरामतलब युवक है जिसकी दिनचर्या में दिन भर अनगिनत कप चाय पीना और काफी हाउस में बैठकर गप्पें मारना ही है। उसके खास दोस्तों में है अनन्या जो कि एक फोटोग्राफर है। उसकी मित्र मंडली में बुद्धिजीवी श्यामल, सेवानिवृत सरकारी अधिकारी अमल नौकरीशुदा विश्वजीत और एक झक्की पत्रकार विश्वजीत है। एक लेबोनी भी है जो अनन्या के कालेज की दोस्त थी और अब फिल्म अभिनेत्री है। तभी इनके बीच एक रहस्यात्मक व्यक्ति अरूप आता है जो अपने आपको पटकथा-लेखक बताता है। वह न्यूटन को अपनी व्यावसायिक योजना के बारे में बताता है और उसे एक व्यावसायिक सैगालजी से मिलवाता है। एक साथ मिलकर वे "शव-यात्रा वाहन" में निवेश करने का फैसला करते हैं। लेकिन अरूप तब गायब हो जाता है। न्यूटन और अनन्या कंगाल हो जाते हैं। क्या वह कभी लौटेगा?

KICHHU SANLAP KICHHU PRALAP

Bengali/116 Min.

Director: Ashoke Viswanathan, **Production :** Hillol Das **Direction and Screenplay, Actor :** Ashoke Viswanathan **Cast :** Sanjiban Guha, Nandini Ghosal, Lobony Sarkar **Cameraman :** Subhashish Banerjee **Editor :** Mahadeb Shree **Art Director :** Amitabha Dhar **Music Direction :** Goutam Chatterjee.

NEWTON is a Sixties character, caught in a time warp of endless cups of tea and lots of idle chatter (what Bengalis like to call adda) at the Coffee House. Ananya, a still photographer, is a close friend. The other friends in Newton's circle: the intellectual Shyamal, the retired government servant Amal, corporate executive Biswajit, and eccentric journalist Biswajit. Then there is Labony, Ananya's one-time college mate and now a popular actress. Arup, a mysterious character who claims to be a screenwriter, enters the scenario at this stage. He volunteers to help Newton with his business plans and introduces him to Saigalji, a businessman. Together they decide to invest in funerary transport. But Arup then disappears: leaving Newton bankrupt and Ananya bereft. Or has he returned?

KUCH KUCH HOTA HAI

Hindi/185 Min.

Producer : Yash Johar **Director:** Karan Johar **Direction and Screenplay :** Karan Johar **Cast :** Shahrukhan, Kajol, Rani Mukherjee **Cameraman :** Santosh Thundiyil **Audiographer :** Uday Inamati **Editor :** Sanjay Sankla **Art Director :** Sharmistha Roy **Music Director :** Jatin-Lalit.

A FILM that is supposed to combine the best of both worlds, Indian and Western, Kuch Kuch Hota Hai has the stunning Rani Mukherjee sporting a mini but singing Om Jai Jagdish Hare. It tells the story of Rahul, played by Shahrukh Khan) and Anjali (Kajol, in a role that consolidated her position at the top of Bollywood's heroines), are best friends at college. They are separated when Rahul marries Tina and Anjali goes home to nurse her wounds. Eight years later, Tina has died of complications during childbirth and has left a letter for her daughter, also named Anjali, to reunite Rahul with his college mate. But of course, the path of true love is difficult. Anjali is engaged to be married to Aman. Rahul and Anjali do finally meet, but that is only after the intervention of Rahul's daughter, mother and former father-in-law.

कुछ-कुछ होता है/हिन्दी/185 मिनट

निर्माता : यश जौहर **निर्देशन एवं पटकथा :** करण जौहर **कलाकार :** शाहरुख खान, काजोल, रानी मुखर्जी **छायाकार :** संतोष थुंडियिल **ध्वनि आलेखक :** उदय इनामती **संपादक :** संजय संकला **कलानिर्देशक :** शर्मिष्ठा राय **संगीतकार :** जतिन-ललित

एक ऐसी फिल्म जिसमें भारतीय एवं पश्चिमी दोनों परंपराओं का समावेश करने का प्रयास किया है। "कुछ-कुछ होता है" में मिन्नी स्कर्ट पहने खूबसूरत रानी मुखर्जी है जो "ओम जय जगदीश हरे" भजन गाती है। फिल्म के राहुल (जिसका किरदार शाहरूख खान ने निभाया है और अंजलि इस भूमिका ने समकालीन हिन्दी फिल्म नायिकाओं के शीर्षस्थ स्थान पर आसीन काजोल की स्थिति को और मजबूती दी) कालेज में पढ़ने वाले दो बहुत अच्छे दोस्त हैं। राहुल टीना से (रानी मुखर्जी) विवाह कर लेता है और अंजलि आहत मन से अपने घर लौट जाती है। आठ वर्षों के बाद टीना की प्रसव काल के दौरान मृत्यु हो जाती है। उसने अपनी बेटी जिसका नाम भी अंजलि है, के नाम एक चिट्ठी छोड़ी है ताकि राहुल अपने स्कूल की दोस्त (अंजलि) के साथ फिर से एक हो जाए। लेकिन प्रेम की डगर इतनी आसान भी तो नहीं। आखिर कर राहुल और अंजलि एक हो जाते हैं लेकिन इसका काफी कुछ श्रेय राहुल की बेटी, उसकी मां एवं भूतपूर्व ससुर को जाता है।

कुहखल/असमिया/116 मिनट

निर्माता : डॉल्फिन कम्युनिकेशन्स **निर्देशन एवं पटकथा :** जाहनु बरुआ **कलाकार :** संजीब सभापंडित, गैरी रिचर्डसन, अनूप हजारिका, बीना पंतंगिया **छायाकार :** पी. राजन **ध्वनि आलेखक :** जतिन सरमा **संपादक** ह्यू.एन. बरुआ **कलानिर्देशक :** फटिक बरुआ **संगीतकार :** सत्या बरुआ

1942 का समय है। असम राज्य के सुदूर क्षेत्र सारूपाथर स्थित कांग्रेस की एक इकाई महात्मा गांधी के अहिंसा के आह्वान को गलत समझ लेती है और ट्रेन को विस्फोट से उड़ा देती है। केवल उस इकाई का अध्यक्ष कुहखाल कँवर गांधी जी के संदेश का सार समझता है और ट्रेन को उड़ाने से बचाने का प्रयास करता है लेकिन विफल रहता है। एक असाधारण कदम उठाते हुए कँवर विस्फोट की जिम्मेदारी अपने सिर ले लेता है जबकि वह इसके लिए जिम्मेदार नहीं है। जिले के ब्रिदानी प्रमुख सी.ए. हमफ्रे के लिए यह बात बहुत अनुकूल है क्योंकि उसे एक महतवपूर्ण ''बलि का बकरा'' चाहिए। कँवर न केवल ईमानदार है बल्कि शाही खानदान का भी वंशज है, इसलिए पूर्ण रूप से एक आदर्श शिकार है। फिल्म के आखिर में एक ऐसे व्यक्ति को फांसी पर चढ़ा दिया जाता है जिसका कोई कसूर नहीं होता।

KUHKHAL

Assamese/116 Min.

Producer : Dolphin Communications **Director:** Jahnu Barua **Direction and Screenplay :** Jahnu Barua **Cast :** Sanjib Sabhapandit, Gary Richardson, Anup Hazarika, bina Potongia **Cameraman :** P. Rajan **Audiographer :** Jatin Sarma **Editor :** Hue-en Barua **Art Director :** Phatik Baruah **Music Director :** Satya Baruah.

THE state is Assam. The time is 1942. The Congress unit at Sarupathar, a remote area in Assam, misinterprets Mahatma Gandhi's call to non-violence and sabotages a train. Only Kuhkal Konwar, the president of that unit, understands the essence of Gandhi's message and tries to prevent the sabotage. He fails. In an extraordinary act, Konwar actually accepts responsibility for the action, though he is not guilty. It suits the British head of the district, C.A. Humphrey, who wants an important scapegoat. Konwar is not only honest but also of royal lineage - the perfect victim. In the end a man is hanged for no fault of his.

मल्ली/तमिल/90 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र **निर्देशन एवं छायाकार :** संतोष सिवन **पटकथा :** संतोष सिवन, रवि देशपांडे **बालकलाकार :** बेबी अम्मा (श्वेता) **संपादक** ए. श्रीकर प्रसाद **कलानिर्देशक :** एस. श्रीराम **संगीतकार :** असलम मुस्तफा

मल्ली 10 वर्ष की बच्ची है जो जलावन जमा करने के काम में अपने माता-पिता की मदद करती है। बीच-बीच में वह गांव के एक डाक्टर की गतिविधियों पर नजर भी रखती है जिसे अपने पशु-पक्षी रोगियों की भाषा समझने का कौशल प्राप्त है। उसके दो ख्वाब हैं - एक पर्व के लिए नई पोशाक खरीदना और दूसरा अपने मित्र की बीमारी के इलाज के लिए "नील माणिक" पाना। उसकी ये दोनों महत्वकांक्षाएं पूरी होती हैं लेकिन जिस संगीतमय तरीके से संतोष सीवान यह कार्य पूरा करवाता है वह बाल दुनिया की सूक्ष्मताओं को पकड़ने का बेहतरीन प्रयास है। मल्ली एक आत्मा को बुलाती है, उसे एक नई पीली पोशाक मिलती है, एक शिकारी की गोली से घायल मृगशावक की वह जान बचाती है और पूरी रात जब तक डाक्टर उसका इलाज करता है, जगी रहती है। उसके लिए अपनी नई पोशाक को भी फाड़ डालती है और आखिरकार वह नीला माणिक प्राप्त कर लेती है।

MALLI

Tamil/90 Min.

Producer : N'CYP **Director:** Santosh Sivan **Director & Cameraman :** Santosh Sivan **Screenplay :** Santosh Sivan & Ravi Deshpande **Child Artist :** Baby Amma (Shwetha) **Editor :** Asreekar Prasad **Art Director :** S. Shiram **Music Director :** Aslam Mustafa.

MALLI, a ten-year-old, tries her best to help her parents by collecting firewood. In between, she finds time to spy on the activities of the village doctor, who has a knack of communicating with his animal patients. But she has two dreams: to buy a new dress for the festival and to get the 'blue bead' which will cure her friend of her deficiency. Both the ambitions are fulfilled if required. Malli invokes a spirit, gets a new yellow dress, rescues a fawn shot from a poacher, waits through the night as the doctor treats the injured animal, tears her dress and finally, finds a blue bead.

नंदन/उड़िया/82 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र **निर्देशन, पटकथा एवं छायाकार** : ए.के. बीर **बालकलाकार** : सौभाग्य चन्दन सत्पथी **संपादक** : असीम सिन्हा **कलानिर्देशक** : चहल-परेश **संगीतकार** : भावदीप जयपुरवाले

नंदन एक 12 वर्षीय तेज तर्रार लड़का है जिसके मन में कारों के प्रति बहुत लगाव है। उसके परिवार वाले निम्न-मध्यवर्गीय लोग हैं जिन्हें उसका यह अति लगाव काफी अनोखा लगता है। खिलौने की दुकान पर एक विदेशी कार के चक्कर में उसके साथ जो नाटकीय एवं मनोरंजक घटनाएं हैं वे ही इस फिल्म के मुख्य केन्द्र बिन्दु हैं।

NANDAN

Oriya/82 Min.

Producer : N'CYP **Director:** A.K. Bir **Director and Screenplay and Cameraman :** A.K. Bir **Child Artist :** Saubhagya Chandan **Art Director :** Chel-Paresh **Music Director :** Bhavdeep Jaipurwala

A SPIRITED, energetic boy of 12, Nandan has a fascination for cars. His family, which is lower middle class, finds this obsession fanciful. Their rather sceptical view of him is heightened when one day, led by an imported car he sees in a toy shop, he is involved in a series of dramatic events which lead him right back to the warm confines of his parents' ordinariness. All's well that ends well.

SAMAR

Hindi/125 Min.

Producer : Ministry of Social Justice and Empowerment, Govt. of India **Director:** Shyam Benegal, **Director** : Shyam Benegal **Screenplay :** Ashok Mishra **Cast :** Kishore Kadam, Raghuvir Yadav, Ravi Jhankal, Rajeshwari Sachdev, Divya Dutta, **Cameraman :** Rajen Kothari **Audiographer :** Sinha **Art Director :** Sameer Chanda **Music Director :** Vanraj Bhatia.

MADE for the Ministry of Welfare, the film deals with role-playing, literally and metaphorically. It examines the shooting of a movie based on an actual incident involving the use of a village well in a sleepy village of Bundelkhand in Madhya Pradesh. A movie on the incident is shot in the same village seven years later. It examines how the Dalits reacted to the oppression at the time they were prevented from constructing their well and how they are expected to play their roles - words such as victims are bandied about. It looks at how a Dalit actor, Kishore, responds to the treatment of his role - he is told by his director that only he can understand the situation because of his caste. But Kishore finds that patronising. The films explores how he comes to term with his Dalitness, "everything he had been trying to escape all these years".

समर/हिन्दी/125 मिनट

निर्माता : सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार **निर्देशक** : श्याम बेनेगल, **पटकथा** : अशोक मिश्र **कलाकार** : किशोर कदम, रघुवीर यादव, रवि झंकल, राजेश्वरी सचदेव, दिव्या दत्त **छायाकार** : राजन कोठारी **ध्वनि आलेखक** : अश्विन बलसावर **संपादक** असीम सिन्हा **कलानिर्देशक** : समीर चन्दा **संगीतकार** : वनराज भाटिया

यह फिल्म कल्याण मंत्रालय के लिए बनाई गई है और इसमें शाब्दिक एवं लाक्षणिक रूप से भूमिका-अदायगी का प्रश्न उठाया गया है। यह फिल्म मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड के एक छोटे से गांव में कुएं के उपयोग की वास्तविक घटना पर आधारित फिल्म की शूटिंग की तहकीकात करती है। सात वर्ष बाद इसी गांव की इसी घटना पर फिर फिल्म बनाई जाती है। फिल्म इस बात की जांच करती है कि जिस वक्त कुएं का निर्माण हो रहा था उस वक्त दलितों ने खुद को निर्माण कार्य से वंचित रखे जाने पर कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी और अब उनसे कैसी भूमिका निभाने की उपेक्षा की जा रही है। इस फिल्म में इस बात पर रोशनी डाली गई कि एक दलित अभिनेता किशोर अपनी भूमिका के प्रति कैसी रूख अख्तियार करता है – उस उसका निर्देशक बताता है कि केवल वही इस स्थिति को समझ सकता है क्योंकि उसकी भी जाति वही है। लेकिन किशोर को यह रवैया संरक्षणपूर्ण लगता है। फिल्म इस बात की विवेचना करती है कि अपने "दलित होने" को वह किस प्रकार लेता है, हर चीज जिससे वह पिछले तमाम वर्षों में पलायन करता रहा है।

सत्या एक युवक है जो आजीविका की तलाश में सपनों के शहर मुंबई आता है। उसे एक बार में वेटर की नौकरी मिल जाती है। लेकिन जब वह कुछ असमाजिक तत्वों की खिलाफत करता है तो उसे काफी शारीरिक एवं मानसिक यंत्रणाएं झेलनी पड़ती हैं। आखिरकार झूठे आरोप लगाकर उसे जेल भेज दिया जाता है। वहां उसकी मुलाकात एक स्थानीय गैंगस्टर भीखूम्हात्रे से होती है जो उसका साथी बन जाता है। दोनों साथ मिलकर अपने गैंग के दुश्मनों से लोहा लेते हैं लेकिन जब सत्या विद्या से प्यार कर बैठता है तब उसे अहसास होने लगता है कि अपराध की राह पर चलना गलता है। विद्या के साथ सत्या को अहसास होता है कि जीवन क्या है। अब वह एक रास्ता ढूंढना चाहता है लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

सत्या/हिन्दी/125 मिनट

निर्माता, निर्देशक : रामगोपाल वर्मा **पटकथा** : सौरभ शुक्ला **कलाकार** : चक्रवर्ती, उर्मिला मार्तोंडकर, मनोज बाजपेयी **छायाकार** : जनरल हूपर, मजहर क्यू. कमरन **ध्वनि आलेखक** : आर. श्रीधर **संपादक** अपूर्व असरानी **कलानिर्देशक** : आर. कृष्ण **संगीतकार** : विशाल भारद्वाज

SATYA

Hindi/160 Min.

Producer & Director : Ram Gopal Varma **Director:** Ram Gopal Verma **Screenplay :** Savrabh Shukla **Cast :** Chakravarthy, Urmila Matondkar, Manoj Bajpai **Cameraman :** Gerarel Hooper, Mazhar Q. Kamran **Audiographer :** R. Sridhar **Editor :** Apurva Asrani **Art Director :** R. Krishna **Music Director :** Vishal Bhardwaj

SATYA, a young man, comes to Mumbai, the city of dreams, hoping to make a living. He finds a job as a waiter in a bar but when he stands up to some anti-social elements, he is subjected to a lot of mental and physical harassment. Eventually, he ends up in prison on concocted charges. This is where he meets the local gangster Bhiku Mhatre, who takes him under his wing. Together they take on the gang's enemies, but Satya begins to realise he is wrong when he falls in love with Vidya. A simple, middle class girl, Vidya teaches him the little passions of life and how to treasure them. With her he realises what life is all about. He wants to find a way out but it's way too late.

शहीद-ए, मोहब्बत बूटा सिंह/ पंजाबी/130 मिनट

निर्माता : मंजीत मान **निर्देशक** : मनोज पुंज **पटकथा** : सूरज सनीम **कलाकार** : गुरदास मान, दिव्या दत्ता, रघुवीर यादव **छायाकार** : प्रमोद पाटिल **ध्वनि आलेखक** : नरेन्द्रसिंह **संपादक** : ओंकार भाखरी **कलानिर्देशक** : ज्ञान सिंह **संगीतकार** : अमर हल्दीपुर

बूटा सिंह एक पूर्व सैनिक और किसान जो बर्मा की लड़ाई से गांव वापस लौटता है तब तक कोई औरत उससे विवाह करने के लिए सुलभ नहीं रहती। तभी पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक व्यापारी उसे बताता है कि वह दो हजार रुपए में एक दुल्हन खरीद सकता है। अब पिछले चार फसलों में उसने 1800 रुपए बचाए हैं। एक फसल और आएगी और बूटा सिंह शादीशुदा हो जाएगा। तभी देश के बटवारे के दंगों के दौरान एक खूबसूरत मुस्लिम लड़की जैनुब उसके खेतों में आश्रय ढूंढने आती है। जैनुब उससे अपनी जिन्दगी की भीख मांगती है और बूटा सिंह के पास उसके आक्रमणकारियों से उसे 1800 रुपए देकर बचाने के अलावा और कोई चारा नहीं है। कुछ ही दिनों बाद जैनुब जो उसके साथ रहने लगती है उसके घर का सारा कामकाज संभाल लेती है। गांव वाले भी बूटा सिंह को सलाह देने लगते हैं कि जैनुब से शादी कर ले। जैनुब की सहमति से दोनों में शादी हो जाती है लेकिन जब आदेश आता है कि पाकिस्तान की सभी मुस्लिम लड़कियों को हिन्दुस्तान से एवं हिन्दुस्तान की सभी हिन्दु लड़कियों को पाकिस्तान से वापस भेजा जाएगा तो पुलिस जबरन जैनुब को पकड़ लेती है और उसे पाकिस्तान भेज देती है जहां उसकी शादी उसके चचेरे भाई से कर दी जाती है। बूटा सिंह वहां जाकर वहां की कार्यवाहियों में दखल देता है और घोषणा करता है कि वह उसकी पत्नी है। इस पर बूटा सिंह को यंत्रणा दी जाती है और उसके शरीर को एक तालाब में फेंक दिया जाता है। फिर जब एक अदालत में जैनुब को पाकिस्तान में रहने या भारत लौट जाने का विकल्प दिया जाता है तो वह अपने घरवालों की धमकी के कारण बूटा सिंह से अपनी शादी को इंकार कर देती है। बूटा सिंह अपनी बेटी को तो वापस ला सकता है मगर अपनी पत्नी को नहीं। यह उसके लिए असहनीय है और वह खुदकुशी कर लेता है। जब उसके मृत शरीर को लाहौर के लोग जैनुब के गांव में लाते हैं तो जैनुब के संबंधी उन पर घातक हमला कर देते हैं। एक घमासान लड़ाई छिड़ जाती है और लाहौर वालों को उसका मृत शरीर वापस लाना पड़ता है। वे उसके नाम पर एक मकबरा बनाते हैं जहां आज भी हर साल उर्स का आयोजन किया जाता है। बूटा सिंह और जैनुब की बेटी बड़ी होकर एक राजनीतिक से शादी करती है। उसके पिता का मकबरा भारत और पाकिस्तान के बीच प्रेम और घृणा के जटिल संबंधों का एक वसीयतनामा बन जाता है।

SHAHEED-A-MOHABBAT BOOTA SINGH

Punjabi/130 Min.

Producer : Manjeet Mann **Director:** Manoj Punj **Director :** manoj Punj **Screenplay :** Suraj Sanim **Cast :** Gurdas Maan, Divya Dutta, Raghuvir Yadav **Cameraman :** Pramod Patil **Audiographer :** Narender Singh **Editor :** Omkar Bhakri **Art Director :** Gyan Singh **Music Director :** Amar Haldipur

BOOTA SINGH is an ex-soldier and a farmer who served under Lord Mountbatten in Burma. By the time he returns from the front, he can find no woman to marry him. This is when a trader from eastern Uttar Pradesh tells him that he can buy a bride for Rs 2,000. Over the last four harvests, he has saved Rs 1,800. Another harvest and Boota Singh will be a married man. But Partition intervenes. It impacts on his little world when the beautiful Muslim girl, Zainub, comes to seek shelter in his fields. Zainub pleads for her life and Boota Singh has no option but to buy off her attackers who are demanding Rs 1,800. When the trader from Uttar Pradesh comes the next day to sell a woman to Boota Singh, he tells him he is destined to remain a bachelor, having lost his savings. Soon, Zainub, who has remained with him, takes over his household and there are even suggestions from the village that he marry her. Zainub consents and they are married. But when an order is passed that all Pakistani Muslim girls are to be deported from India (and likewise Indian Hindu girls in Pakistan), the police forcibly pick up Zainub. She is sent back to Pakistan, where she is married to her cousin. Boota Singh interrupts the proceedings there and announces that she is his wife - for his pains he is assaulted and his body thrown into a pond. But when Zainab is given the choice to remain in Pakistan or go back to India, in a court of law, she denies her marriage to Boota Singh because of threats from her parents. Boota Singh can take their daughter but not his wife. This is intolerable for him, and he commits suicide. When his body is taken back to Zainab's village by the people of Lahore, Zainab's in-laws mount a vicious attack. A pitched battle follows, and the Lahoris have to take his body back. They erect a tomb in his name where urs is performed every year even today. Zainab and Boota Singh's daughter grows up to marry a diplomat. And her father's grave becomes a testament to the complex relationship of love and hatred between India and Pakistan.

तु तिथे मी/मराठी/135 मिनट

निर्माता एवं अभिनय : स्मिता तलवलकर **निर्देशक** : संजय सूरकर **पटकथा** : एस.एन. नवरे **कलाकार** : मोहन जोशी, सुहास जोशी, सुधीर जोशी

यह फिल्म नाना और अई, जिनके दो बड़े-बड़े बच्चे हैं, के बीच उम्र के ढलान पर हुए रोमांस के बारे में है। जब नाना 60 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत होता है तो वह नहीं जानता कि अपने खाली समय का क्या करे। एक दिन जब वह बालकोनी में बैठा रहता है तो वह दो कम उम्र के प्रेमियों को एक दूसरे के प्रेम संकेत भेजते देखता है। वह अपनी पत्नी के साथ भी वैसा ही करने की कोशिश करता है जो रसोईघर में है। चूंकि उसकी पत्नी के लिए यह बिल्कुल नई भाषा है इसलिए वह इसे समझ नहीं पाती। जब वह उसे यह समझा पाने में सफल होता है कि वह उससे एकांत में घर के बाहर मिलना चाहता है तो वे मंदिर में मिलने लगते हैं। लेकिन छोटे बेटे प्रसाद का शोलापुर तबादला हो जाता है और घर में यह फैसला होता है कि अई उसके साथ जाएगी। नाना से इस मामले में सलाह तक नहीं ली जाती। इसी बीच नाना को वृद्धों के एक क्लब का पता चलता है लेकिन पत्नी से उसकी जुदाई बनी रहती है। इसके बाद क्या होता है और कैसे दोनों वृद्ध पुरुष-स्त्री मिलते हैं, यही इस रोमांटिक फिल्म का सार है।

TU TITHE MEE

Marathi/135 Min.

Produccer Acrtres : Smita Talwalkar **Director:** Sanjay Surkar, **Screenplay :** S.N. Naware **Cast :** Mohan Joshi, Suhas Joshi, Suhas Joshi, Sudhir Joshi

The film deals with the late-developing romance between Nana and Aai, who have two grown-up sons. When Nana retires at 60, he doesn't know what to do with his time. One day, while sitting in the balcony, he espies two young lovers in the building sending signals to each other. He tries the same with his wife, who is busy in the kitchen. Since this is a completely new language for her, it is entirely lost on her. When he is able to finally express to her in code that he wishes to see her in private outside the house, they meet at the temple. But this is cut short by the transfer of his younger son, Prasad, to Solapur, where it is decided by the youngsters that Aai will go with them. Poor Nana is not even consulted. At the same time, Nana discovers an old age club, called Scap. But he continues to be separated from his wife. What ensues and how the two ageing lovers meet is the essence of this little romance.

थोली प्रेमा/तेलुगु/145 मिनट

निर्माता : जी.वी.जी. राजु **निर्देशन एवं पटकथा** : ए. करुणाकरण **कलाकार** : के. पवन कल्याण, कीर्ति रेड्डी, बी. वासुकि **छायाकार** : वाई. महीधर **संपादक** : मार्तण्ड के. वेंकटेश **कलानिर्देशक** : आनन्द साईं बी. **संगीतकार** : देवा

बालू एक मध्यवर्गीय परिवार का लड़का है। उसकी चचेरी बहन प्रिया अक्सर उसके घर आ जाती है। परिस्थितियां उस वक्त करवट ले लेती है जब बालू एक अप्रवासी भारतीय अनु के प्रेम में पड़ जाता है। हर कोई अलग-अलग ऊटी का कार्यक्रम बनाता है जहां बालू अनु को दुर्घटना से बचाता है लेकिन उसे खुद अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। बालू अनु को अपने दिल की बात से अवगत नहीं करा पाता। वह भी उसे प्यार करती है लेकिन उसकी महत्वकांक्षा हारवर्ड विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त करने की है। जब उसके वापस विदेश लौटने का समय आता है तो उसे बालू के प्रति अपने प्रेम की गहराई का अहसास होता है। हालांकि बालू उसके प्रेम का प्रतिदान करता है मगर वह उसकी महत्वकांक्षा के बीच में नहीं आना चाहता। सच्चा प्रेम इंतजार कर सकता है।

THOLI PREMA

Telugu/145 Min.

Producer : G.V.G. Raju **Director:** A. Karunakaran, **Direction and Screenplay** :A. Karunakaran **Cast :** K. Pawan Kalyan, Keerthy Reddy, B. Vasuk **Cameraman :** Y. Maheedar **Editor :** Marthand K. Venkatesh **Art Director :** Anand Saib **Music Director :** Deva

BALU, the hero, belongs to a middle class family. Priya, a cousin, often drops in on the household. Things change when Balu falls in love with Anu, an NRI. In the course of a trip to Ooty, where each has gone their separate way, Balu saves Anu from an accident. But he himself lands up in hospital. Balu is unable to reveal the depth of his feelings for her. She too loves him but is focused on her ambition of attaining a degree from Harvard University. When the day comes for her to leave, she realises the extent of her affection for Balu. But though he responds in kind, he decides not to stand in her way. Love can wait.

ZAKHM

Hindi/130 Minutes

Producer : Pooja Bhatt **Director:** Mahesh Bhatt **Screenplay** : Tanuja Chandra, Mahesh Bhatt **Cast** : Ajay Devgan, Pooja Bhatt, Kunal Khemu **Cameraman** : Nirmal Jani **Editor** : Sanjay Sankla **Art Director** : Gappa Chakraborty **Music Director** : M.M. Kareem

ZAKHM is a love story of a mother and a son. It's the tale of a son whose mother's unfulfilled longings are his own, her humiliations his own, her pain - his pain. The day Ajay Desai's mother is burnt alive by a Muslim mob during the 1993 communal riots, he is forced to come to terms with his past. As the Christian hospital where the police bring his mother in a semi-conscious state becomes a battleground between Hindu-Muslim forces, Ajay recalls his mother's anguish as she would wait for his father, a Hindu, to come home. As his parents were not married, Ajay found himself being shunned socially. When his father dies in an accident, Ajay's desire that his parents marry is never met. But with his mother almost dead now, he feels it is incumbent upon him to fulfill her last wish - that she be buried. But this public acknowledgment that his mother was a Muslim is bound to destroy the political career of his younger brother, who is now the right-hand man of the Hindu fundamentalist leader responsible for inciting riots in the city. But Ajay will have none of this.

जख्म

निर्माता एवं अभिनय : पूजा भट्ट **निर्देशक** : महेश भट्ट **पटकथा** : तनुजा चन्द्रा **कलाकार** : अजय देवगन, कुणाल खेनु **छायाकार** : निर्मल जानी **संपादक** : संजय संकला **कलानिर्देशक** : गप्पा चक्रवर्ती **संगीतकार** : एम.एम. करीम

जख्म एक मां बेटे की कहानी है। यह एक ऐसे बेटे की कहानी है जिसके लिए उसकी मां की अतृप्त इच्छाएं उसकी अपनी इच्छाएं हैं, उसकी मां की प्रताड़नाएं उसकी प्रताड़नाएं एवं उसकी मां का दर्द उसका दर्द अपना दर्द। 1993 के सांप्रदायिक दंगों के कारण मुसलमानों की भीड़ उसकी मां को जिंदा जला देती है, पुलिस उसकी मां को अचेतावस्था में ईसाई अस्पताल में लाती है हिन्दु-मुस्लिम ताकतों तत्वों की रणभूमि बन जाता है। वहां अजय अपनी मां के आक्रोश को याद करता है अपने आपको सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस करने लगा। अब जबकि उसकी मां लगभग मृतशैय्या पर लेट चुकी है, वह अपनी मां की अंतिम ख्वाहिश कि उसे दफनाया जाए - को पूरा करना अपना फर्ज समझता है। लेकिन लोगों को यह मालूम हो चुका है कि उसकी मां एक मुसलमान औरत थी और यह बात उसके छोटे भाई के राजनीतिक जीवन को निश्चित रूप से बर्बाद कर सकती है। उसका भाई एक हिन्दू कट्टरपंथी नेता का अब दाहिना हाथ है जो शहर में दंगे भड़काने के लिए जिम्मेदार है। लेकिन अजय को अब ऐसी किसी बात की परवाह नहीं है और फिर .....।

कथासार : Synopses :
ग़ैर-कथाचित्र Non-Feature Films

अन्ना लिव्स/तमिल/22 मिनट

निर्माता एवं निर्देशक : निदेशक तमिलनाडु फिल्म्स डिवीजन **पटकथा** : एम. लक्ष्मणन **छायाकार** : बालासुब्रह्मन्यम, बी. मुरुगाभूपति, सेल्वम, एल. तमिलवनन **संगीतकार** : एल. देवेन्द्रन

यह वृत्तचित्र तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री सी.एन. अन्नादुर्राई के जीवन पर आधारित है। मंदिरों के शहर कांचीपुरम के एक पारंपरिक जुलाहा परिवार का लड़का जिसे सब प्यार से अन्ना कहते थे, किस तरह राज्य का सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री बन गया, यह उसी की कहानी है। यह फिल्म अन्ना के जीवन की पुर्नव्याख्या करती है और तमिलनाडु फिल्म्स डिवीजन में संरक्षित दुर्लभ दस्तावेजों की मदद से यह उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं कुशल वक्ता, शिक्षक, नाटककार, पत्रकार और सबसे बढ़कर एक महान नेता पर रोशनी डालती है।

ANNA LIVES

Tamil/22 Min.

Producer and Director: Director Tamil Nadu Films Division, **Screenplay :** M. Lakshmanan **Cameraman :** Balasubramaniam, B. Murugaboopathy, Selvam, L. Tamilvanan **Music Director :** L. Devendran.

THE documentary depicts the life of former chief minister of Tamil Nadu C.N. Annadurai. Hailing from the traditional weaver's family in the temple town of Kancheepuram, Arignar Anna, as he was affectionately called, came out of nowhere to become the most admired leader in the State. The film reconstructs the life of Anna, and helped by rare documents preserved in the Tamil Nadu Films Division, it manages to convey his many facets: as orator, teacher, dramatist, journalist and above all, a great leader.

एजुकेशन ओनली फॉर फ्यूचर/सिर्फ संगीत/5 मिनट

निर्माता, निर्देशक एवं कार्टूनकार : अरुण गोंगडे, **छायाकार** : रामचन्द्र कशिर, विनायक पुपुल, प्रकाश परमार **संगीतकार** : दिनेश प्रभाकर

यह एक गरीब कुम्हार की बेटी की कहानी है जिसे घर का सारा कामकाज करना पड़ता है। वास्तव में, जब उसका जन्म हुआ था, तभी उसके पिता ने सोच लिया था कि वह घर का सारा काम करेगी। लेकिन बाद में जब वह अपनी बेटी के पढ़ने व सीखने की लगन को देखता है तो वह उसे शिक्षित बनाने का फैसला करता है। उसे इस बात का अहसास हो जाता है कि पढ़-लिख कर ही वह एक संपूर्ण मानव बन सकती है।

EDUCATION ONLY HER FUTURE

Only music/5 Min.

Producer Director and Animator : Arun Gongade, Films Division **Cameraman** : Ranchandra Kashid, Vinayak Pupula, Prakash Parmar **Music Director :** Dinesh Prabhakar

THIS is a story about a poor potter's daughter, who is condemned to doing all the household chores. In fact, when she is born, her father just assumes that she will be attending to all these duties. But later when he senses in her the urge to learn, he decides to educate her, realising that the only way she can grow up to be a complete human being is by being educated.

FAQIR

Hindi/46 Min.

Producer : Jaykay Production **Cast :** Pavan Malhotra, Indrani Haldar Cameraman and **Music Direction :** Goutam Ghose **Director and Screenplay :** Goutam Ghose,

ICHU MONDAL and his wife Nimmi live in a remote susburb of eastern India. While Nimmi likes her material comforts, including men, Ichu is otherworldly, always in search of the God. Yet Nimmi is fond of Ichu and together they share a comfortable marriage where no questions are asked and none answered. That is till one morning where Nimmi's body is found dead on the railway tracks, setting off a tizzy of speculation and rumour. Whispers gather that Nimmi was a woman of ill-repute. For the first time, it dawns on Ichu that God's ways are inscrutable but then so is human existence.

फकीर/हिन्दी/45 मिनट

निर्माता : जे.के. प्रोडक्शन्स **निर्देशन एवं पटकथा :** गौतम घोष, **कलाकार :** पवन मल्होत्रा, इन्द्राणी हल्दर **छायाकार एवं संगीतकार :** गौतम घोष

इच्छु मंडल और उसकी पत्नी निम्मी पूर्वी भारत के एक छोटे कस्बे में रहते हैं। जहां निम्मी को भौतिक आराम पसंद है, वहीं इच्छु सदैव भगवान की खोज में मगन रहता है। तब भी निम्मी को इच्छु अच्छा लगता है और वे आराम की जिन्दगी गुजार रहे होते हैं, जहां न कोई सवाल पूछता है और न किसी को कोई जवाब देना होता है। तभी एक दिन सुबह निम्मी का शव रेलवे की पटरी पर पाया जाता है जिससे कई आशंकाएं एवं कई तरह की अफवाह फैलने लगती है। लोगों में कानाफूसी होती है कि निम्मी एक बदचलन औरत थी। पहली बार इच्छु को लगता है कि ईश्वर के काम कितने रहस्यमय होते हैं लेकिन मानव का अस्तित्व भी तो यही है।

इन द फोरेस्ट हेंग्स ए ब्रिज/अंग्रेजी/ 39 मिनट

निर्माता, निर्देशक एवं पटकथा : संजय काक, **छायाकार :** रंजन पलित **संगीतकार :** सुष्मित सेन

अरुणाचल प्रदेश की सियांग घाटी में डैमरो गांव के लोग एक झूला पुल बनाने के लिए जमा होते हैं। यह फिल्म एक आदिवासी क्षेत्र में उनके जीवन का बखान करती है जहां छः महीनों की बरसात का मतलब है बेंत एवं बांस का सड़कर गिर जाना। इसलिए जब जाड़े की फसल तैयार हो जाती है तो गांव पंचायत के लोग पुल के निर्माण के लिए एक तिथि तय करते हैं जिसके लिए बेंत एवं बांस को सामुदायिक जंगलों से लाया जाना है। इस काम के लिए कोई अधिकारी नहीं है, किसी को मजदूरी नहीं दी जानी है। पुल की तरह आदि कबीलों के घर को भी नियमित रूप बनाते रहने की जरूरत है। फरवरी मकानों के निर्माण का महीना है। ये समुदाय एक दूसरे के लिए मकान बनाते हैं, मजदूरों की अदला बदली करते हैं और संबंधों का एक ऐसा आपसी नेटवर्क स्थापित करते हैं जो इस समुदाय को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

IN THE FOREST HANGS A BRIDGE

English/39 Min.

Producer, Director and Screenplay : Sanjay Kak, **Cameraman :** Ranjan Palit **Music Director :** Susmit Sen

AS the people of Damro village in the Siang Valley of Arunachal Pradesh gather to rebuild a suspension bridge, the film explores life in a tribal area where nearly six months of rain means that cane and bamboo eventually rot and fall away. So with the winter harvest done, the village council sets a date for the construction of the bridge for which cane and bamboo have to be fetched from the communal forests. No one will be paid wages, no one is in charge. Like the bridge, the Adi tribal's home also needs to be frequently rebuilt. February becomes the month to rebuild houses as well. The community builds for each other, exchanging labour, and setting up the intricate network of relationships that makes it possible to sustain the community.

मलाना-इन सर्च ऑफ/अंग्रेजी/23 मिनट

निर्माता : निओ फिल्म्स **निर्देशक** : विवेक मोहन

उत्तर-पश्चिमी हिमालय कुल्लू घाटी में स्थित छोटा सा गांव मलाना अपने आप में एक विधान है। अपनी भौगोलिक स्थिति एवं यहां के लोगों के स्थानीय देवता देव जामूल के प्रति अनूठी भक्ति के कारण मलाना गणतंत्र के भीतर एक गणतंत्र है। यह फिल्म इस विशेष स्थान मलाना को जिन्दगी के एक दिन की दिनचर्या की विवेचना करती है।

IN SEARCH OF MALANA

English/73 Min.

Producer : Neo Films **Director:** Vivek Mohan

MALANA, a tiny hamlet, embedded in the North-West Himalayas in Kullu Valley is a law unto itself. Because of its geographical isolation and the utmost devotion of its people to the reigning deity Lord Jamlu, Malana is like a republic within a republic. The film explores the place and its people in the form of chronicling a day in the life of a Malani.

That's not the only work, though. There is this skein of wool which has to be rolled and knitted into a sweater for Barkha's husband.

जी करता था/हिन्दी/21 मिनट

निर्माता : मोहन आगाशे, निदेशक, भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशन एवं पटकथा** : हंसा थपलियाल, **छायाकार** : अन्द्रे मेनेजस **संगीतकार** : अजित सोमन

एक युवा विवाहिता बरखा कुछ दिनों के लिए अपने माता-पिता के घर लौट कर आती है। उसका आगमन उसके बचपन की साथी चमन की जिन्दगी में कुछ राहत लाता है। लगभग पच्चीस वर्षीया चमन अपने मध्यवर्गीय माता-पिता के साथ रहती है और अपनी साधारण जिन्दगी से क्षुब्ध है। बरखा की तीसरी दोस्त रेखा अपना सारा दिन अपने बाल संवारने में गुजारती है। हालांकि यह उसका एकमात्र काम नहीं है। उसे बरखा के पति के स्वेटर के लिए ऊन के इस लच्छे को गोला बनाना और बुनने का काम भी करना है।

JEE KARTHA THA

Hindi/21 Min.

Producer : Mohan Agashe, Director FTII **Director and Screenplay :** Hansa Thapaliyal **Cameraman :** Andre Menezes **Music Director :** Ajit Soman

BARKHA, a young married woman, returns to her parents' home for a few days. The arrival brings some relief to her childhood friend, Chaman's life. Now in her mid-twenties, Chaman, is stuck in a small town with middle class parents and feels suffocated by her ordinariness. Barkha's third childhood friend, Rekha, now spends her entire day combing her hair.

KHERWAL PARAB

Santhali/38 Min.

Producer and Director: Sankar Rakshit, **Cameraman :** Sourav Rakshit

THE film attempts to explore the tedium of Santhali life as it is relieved by their festivals. Whether it is the Maghkunami, when they usher in the New year, or Baha, when they celebrate Basant with colours drawn from trees such as Sal, Simul and Palash, or Sedra when they undertake hunts to re-enact the past when they were forced to kill for survival, or even Dasai when they move from house to house dressed in colourful clothing to announce the arrival of Durga, the adivasi existence is simple yet joyous. The film imitates the rhythm of nature and the seasonal cycle is essentially a metaphor for the perpetuity that the adivasis seek.

खेरवाल परब/संथाली/38 मिनट

निर्माता एवं निर्देशक : संकर रक्षित
छायाकार : सौरव रक्षित

यह फिल्म संथाली जिन्दगी की नीरस जिन्दगी में राहत पहुंचाने वाले पर्वों की विवेचना करने का प्रयास करती है। चाहे वह "माघकुनामी" हो जिसे वे नए साल पर मनाते हैं, या "बाहा" हो जिसे वे साल सिमुल एवं पलाश जैसे पेड़ों से निकाले रंगों से बसंत मनाते हों, या "सेद्रा" हो जिसे वे अपने उस अतीत को पुनर्जीवित करने का स्वांग करते हैं जब वे अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए शिकार पर निर्भर थे, या फिर "दसई" हो जिसमें वे दुर्गा के आगमन की घोषणा करने के लिए रंग बिरंगे कपड़े पहनकर एक दूसरे के घर जाते हैं। आदिवासियों का अस्तित्व सरल किन्तु खुशनुमा है। फिल्म प्रकृति के गीत का अनुकरण करती है। मौसम का चक्र वस्तुतः उस निरंतरता का एक रूपक है जिसे आदिवासी बनाए रखने के लिए सदैव प्रयासरत हैं।

कुमार टाकीज/हिन्दी/76 मिनट

निर्माता एवं निर्देशक : पंकज ऋषि कुमार, **छायाकार :** अविजित मुकुल किशोर **ध्वनि आलेखक :** सतीश पी.एम.

कुमार टाकीज उत्तरी भारत के एक छोटे से शहर काल्पी एवं उसके एकमात्र बचे सिनेमा हाल जो शहर के एक गंदे कोने में स्थित जर्जर स्थिति में है, के बीच संबंधों की व्यवस्था करता है। इस संदर्भ में यह सिनेमा छोटे शहरों के लोगों एवं उनके अस्तित्व को अभिव्यक्त करता है। इस संदर्भ के माध्यम के रूप में उभर कर आता है। यह फिल्म काल्पी के अहम यथार्थों एवं भारत में फिल्म निर्माण के विस्तृत निहितार्थों पर रोशनी डालती है, जहां टेलिविजन का असर सिनेमा के प्रत्यक्ष अनुभव पर बड़ी तेजी से छाता जा रहा है।

KUMAR TALKIES

Hindi/76 Min.

Director: Pankaj Rishi Kumar, **Cameraman :** Arijit Mukul Kishore **Audiographer :** Satheesh P.M.

KUMAR TALKIES explores the relationship between Kalpi, a small town in northern India, and its only surviving cinema hall, a decrepit and cash-strapped shed located in a particularly dirty corner of town. Seen from within this context, cinema emerges as a vehicle for conveying remote, urban images to small towns and a medium through which they express their own existence. The film documents the vital realities of Kalpi and its implications in the larger drama of film-making in India, where the compelling imagery of television is fast replacing the more direct experience of cinema.

मल्ली

निर्माता : पी. अमृतम, निदेशक फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, तमिलनाडु **निर्देशक एवं छायाकार :** आर. माधवकृष्ण **संगीतकार :** कार्तिक राजा

वेश्यावृत्ति करने वाली मल्ली एक ग्राहक से मिलती है जो उसके भले की सोचता है, उसकी रुचि-अरुचि का ध्यान रखता है एवं बहुत ही स्नेहपूर्वक बात करता है। बदले में वह उससे अपने भले की सोचने के लिए कहती है और पूछती है कि वह विवाह कर खुशी से रहने के बजाय यहां क्यों आया है। इतने में ग्राहक के जाने का समय हो जाता है क्योंकि दूसरा ग्राहक प्रतीक्षा में खड़ा है। उसके हर्ष की सीमा नहीं रहती जब वही व्यक्ति दूसरे ग्राहक के रूप में आता है और उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। वे विवाह कर आराम से रहने लगते हैं। एक तूफान सा आता है, एक झटके के साथ मल्ली की नींद खुलती है। यह सब स्वप्न था। वास्तविकता कुछ और थी।

MALLI

Tamil/

Producer : P. Amirtham, Director, Film and Television Institute Tamilnadu **Director and Cameraman :** R. Madhava Krishnan **Music Director :** Karthik Raaja

Malli, a prostitue meets with a customer who talks to her in a very affectionate manner by asking her well-being and her interests and likes & dislikes, inturn she asks him of his well-being and why he is here inspite of getting married and expresses her feelings for a happy married life. The time comes for the customer to leave because there is another customer waiting for her. To her amusement she finds the same customer and asks him not to waste money and inturn he says that he wants to marry her and live with her happily. They get married and get along well suddenly a thunder strikes she just shockingly gets up and then she finds out that it was all a dream till now.

एन.एम. 367 - सन्टेन्स ऑफ साइलेन्स/अंग्रेजी/24 मिनट

निर्माता : वाइ.एन. इंजीनियर, फिल्मस डिवीज़न मुंबई **निर्देशक एवं पटकथा :** जोशी जोसेफ, **छायाकार :** एन. स्तानले **संगीतकार :** दिनेश कुमार प्रभाकर

यह फिल्म तलाक की समस्या खासकर ईसाइयों में ज्यादा प्रचलित इस प्रथा पर संजीदगी से रोशनी डालती है। यह लॉ के उच्च न्यायालय के निर्णयों एवं भारतीय तलाक अधिनियम पर विधि आयोग की रिपोर्ट पर आधारित है।

N.M. 367 - SENTENCE OF SILENCE

English/14 Min.

Director and Screenplay : Joshy Joseph **Cameraman :** N. Stanley **Music Director :** Dinesh Kumar Prabhakar

THE film takes a compassionate look at the problem of divorce in general and of the Christian community in particular. It is based on recent High Court judgments and the Law Commission's Report on the Indian Divorce Act.

ए. पेंटर ऑफ एलोक्वेन्ट साइलेंस : गणेश पायने/अंग्रेजी/24 मिनट

निर्माता : फिल्म्स डिवीजन, मुंबई एवं बुद्धदेव दासगुप्ता **निर्देशक :** बुद्धदेव दास गुप्ता, **छायाकार :** असीम बोस **संगीतकार :** बिस्वदेव दासगुप्ता

चित्रकार एम.एफ. हुसैन उन्हें आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण चित्रकारों में एक मानते हैं। यहूदी उनके काम से इतना प्रभावित थे कि जब उन्हें उनका एक कैनवास मिला तो वह उन्हें पत्र लिखने से खुद को नहीं रोक सके। सौम्य व अल्पभाषी पायने के चित्रों की बिक्री न्यूयार्क में सूदबीज आक्शन या लंदन के क्रिस्टी में होती है, लेकिन अब भी वह कुछ शब्दों व कुछ कृतियों के ही चित्रकार माने जाते हैं। उनकी कृतियों में यथार्थ एवं कल्पना, परंपरा एवं आधुनिक, शिल्प एवं बौद्धिकता का संगम है। यह फिल्म विवेचना करती है कि किस प्रकार यह जटिल कलाकार अपने बहुस्तरीय एवं ऊर्जाशील रचनाओं से अपनी कृतियों को जीवंत बनाता है।

A PAINTER OF ELOQUENT SILENCE: GANESH PYNE

English/24 Min.

Producer : Films Division, Mumbai **Director:** Buddhadeb Dasgupta **Cameraman :** Ashim Bose **Music Director :** Biswadeb Dasgupta

M.F. HUSAIN considers him to be one of the most significant painters of modern India. Yehudi Menuhin was so deeply touched by his work he could not resist writing to him after acquiring one of his canvases. Suave and soft-spoken this diminutive painter who sells at Sotheby's auctions in New York or Christie's in London, Ganesh Pyne remains a painter of few words and few works. Here and now, reality and imagination, tradition and modernity, craft and intellect merge in his art. The film explores how this complex artist arrives at his multi-layered and enigmatic visual statements.

PREMJI - ITHIHASATHINTE SPARSAM

Malayalam/50 Min.

Producer : Secretary, Kerala Sangeetha Nataka Academy **Director:** M.R. Rajan **Cameraman :** R.V. Ramani

ACTOR, poet, playwright, social reformer and activist Premji (or Mullamangalath Parameswaran Bhattathiripad) was in the forefront of the Namboodiri youth movement that rebelled against the forces of orthodoxy and hegemony. The spirit of the times turned Premji into the controversial author of Rithumathi, a play which shocked the state by expressing the misery of women in his community. Premji was also able to carve a niche for himself as a film actor and his role in Piravi earned him the Bharath Award for Best Actor. Both Premji and his equally illustrious brother, Mullamangalath Raman Bhattathiripad, also a poet and playwright, paved the way for a brave new world in Kerala. They themselves married widows, which sent shock waves into the community which excommunicated them.

प्रेम जी- इतिहासथिन्ते स्पर्शम

निर्माता : सचिव, केरल संगीत नाटक अकादमी **निर्देशक :** एम.आर. राजन **छायाकार :** आर.वी. रामानी

अभिनेता, कवि, नाटककार, समाज सुधारक एवं सामाजिक कार्यकर्ता प्रेम जी (या मुल्लामंगलथ परमेश्वन भट्टाथिरिपाद) कट्टरपंथ एवं सामंती मानसिकता के खिलाफ विद्रोह करने वाले नंबूदरी युवा आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उन्होंने एक ऐसा विवादास्पद नाटक "ऋतुमति" लिखा जिसमें वर्णित उनके समुदाय की औरतों की व्यथा ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। प्रेम जी ने एक फिल्म अभिनेता के रूप में भी अपनी जगह बनाई एवं फिल्म "पिरावी" में उनकी भूमिका ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने एवं उनके दूसरे विलक्षण प्रतिभाशाली भाई मुल्लामंगलथ रमन भट्टाथिरिपाद, जो एक कवि एवं नाटककार भी थे, ने केरल में एक नए साहसी युग का सूत्रपात किया। दोनों ने विधवा विवाह किए, जिससे उनके समुदाय में आक्रोश की लहर दौड़ गई और उन्हें उनके समुदाय से बहिष्कृत कर दिया गया।

रिपेंटेन्स/अंग्रेजी/22 मिनट

निर्माता : मोहन आगाशे, निदेशक, भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशक** : राजीव राज, **छायाकार** : शम्मी नंदा

यह एक फैक्ट्री मजदूर नीलकंठन की कहानी है जो सपरिवार आत्महत्या कर लेता है। यह नई सदी के शुरू होने का क्षण है और उसकी फैक्ट्री तुरन्त बंद हो गई है। आजीविका का दूसरा विकल्प ढूंढ पाने में वह विफल है और तभी उसे सूचना मिलती है कि उसकी पत्नी का गर्भ पात हो गया है। वह टूट जाता है। टी.वी. एवं कैमरा वाले उसे अपने परिवार समेत टी.वी. कैमरे के सामने आत्महत्या करते हुए अपने कैमरे में कैद कर लेते हैं। यह फिल्म क्रमिक रूप से एक बूचड़खाने में जाकर खत्म होती है जो इस बात का प्रतीक है कि मानव का शोषण किस कदर जारी है।

REPENTANCE

English/22 Min.

Director Screenplay and Music : Rajeev Raj **Cameraman** : Shammi Nanda

THIS is the story of Neelakantan, a factory worker, who commits suicide with his family. It is the eve of the new millennim and his factory has just closed down. Unable to find an alternative way of life, the breaking point comes when he realises his wife has just had a miscarriage. He breaks down and his image is captured on TV and the camera pans away to reveal the factory worker's family lying dead in front of TV. The film ends with a sequence in a slaughter house, which is supposed to symbolise the continuing process of exploitation of man by man.

द सागा ऑफ डार्कनेस/बंगला/38 मिनट

निर्माता : क्रिएटिव इमेज **निर्देशन एवं पटकथा** : गौतम सेन **छायाकार** : असीम बोस

यह फिल्म सुंदरवन से जलपाईगुड़ी एवं मिदनापुर से पुरुलिया तक की यात्रा करती है और पश्चिमी बंगाल में अब भी व्याप्त "डायन-ओझा" प्रथा की विवेचना करती है। यह फिल्म "डायन-ओझा" के वास्तविक कारणों - पारिवरिक रंजिश, राजनीतिक विद्वेष, शिक्षा की कमी, चिकित्सा सुविधाओं की कमी एवं संपत्ति संघर्षों पर रोशनी डालती है।

THE SAGA OF DARKNESS

Bengali/38 Min.

Director and Screenplay : Gautam Sen **Cameraman :** Ashim Bose

TRAVELLING from the Sundarbans to Jalpaiguri, from Midnapore to Purulia, the film seeks to explore the still prevalent tradition of witch-hunting in West Bengal. The film unearths the actual reasons for witch-hunting: family rivalry, political conflict, lack of education, proper medical facilities and property clashes.

साइलेन्ट स्क्रीम/अंग्रेजी/13 मिनट

निर्माता : मैसर्स विवेक फिल्म्स **निर्देशक** : विक्रम के. कुमार **छायाकार** : अर्जुन जेना **संगीतकार** : जयशंकर, अरविन्द

यह फिल्म एक ऐसे युवक की कहानी है जो एक रेलवे पुल के करीब अकेले रहता है। अपने नितांत निजी कारणों से वह अपनी जिन्दगी खत्म करने का निर्णय लेता है। वह एक दराज खोलता है उसमें से कुछ गोलियां निकालता है और उन्हें निगल लेता है। फिर वह लेट जाता है और अवश्यभावी की प्रतीक्षा करने लगता है। तब उसे अचानक अपने इस कृत्य की गंभीरता का अहसास होता है। वह तुरन्त बाथरूम जाता है और गोलियों की उल्टी करने का प्रयास करता है। वह दरवाजे पर किसी को आवाज देने के लिए जाता है लेकिन तभी उसे अहसास होता है कि उसने घर के ताले की चाबियां बाहर फैंक दी हैं। वह खिड़की के पास जाता है ताकि किसी को चिल्लाकर बुला सके, लेकिन रेलगाडियों के शोर में उसकी आवाज दबकर रह जाती है। वह तब टेबल पर रखे सुसाइड-नोट "आत्महत्या" को देखता है और क्षुब्ध होकर उसे फाड़ डालता है। तब उसकी नजर खिड़की के पास के एक चित्र पर पड़ती है और वह उस चित्र को गले से लगा लेता है - जिन्दगी जीने की चाह की वही तो एक मात्र कारण है। तभी उसे अहसास होता है कि गोलियां अब अपना असर दिखाने लगी हैं। वह खुद को तमाचे मारता है मगर तब तक काफी देर हो चुकी होती है।

SILENT SCREAM

English/13 Min.

Director and Screenplay : Vikram K. Kumar **Cameraman :** Arjun Jena **Music Director :** Jaishankar, Arvind

THE film is about a young man who lives alone in a room overlooking the railway bridge. For reasons best known to him, he has decided to end his life. He opens a drawer, takes some pills, and swallows them. He then lies down, awaiting the inevitable. The enormity of the deed then strikes him. He rushes to the bathroom and tries to vomit the pills out. He rushes to the door to ask for help but realises he has thrown away the key to the lock. He goes to the window to scream but a passing train drowns out his voice. He then notices the suicide note on his table and tears it in disgust. He then notices a photograph on the windowsill and holds it to his chest - it has all the reasons for his wanting to live. Then he realises the pills are having an effect. He slaps himself but it is too late.

UNARVINTE KALAM

Malayalam/40 Min.

Producer : Kerala Sangeeta Nataka Academy **Director:** M.R. Rajan **Cameraman :** R.V. Ramani **Music Director :** Kottakkal Murali

RENAISSANCE leader, poet, playwright, editor and essayist, Mullamangalath Raman Bhattathiripad, better known as MRB, was in the vanguard of the social reform movement in Kerala along with EMS Namboodiripad and V.T. Bhattathiripad. Born into an orthodox Namboodiri family in 1909, thanks to his native village of Vanneri being in the eye of the storm of great ideas, he came into contact with legendary writers/ thinkers of his time such as the poet Vallathol, critic Kuttikrishna Marar, and eclectic thinker Nalappat Narayana Menon. Through his play Marakkudakkullile Mahanarakam and his own act of marrying a widow, he was a moving forcve behind the liberation of women. Later taking to literature and journalism, he was on the editorial board of several publications such as Yuvadeepam, Unni Namboodiri, Navalokam and Sahitya Parishad Monthly.

उनारविन्ते कालम-एम.आर.बी./

मलयालम/40 मिनट

निर्माता : केरल संगीत नाटक अकादमी **निर्देशक :** एम.आर. राजन, **छायाकार :** आर.वी. रामानी **संगीतकार :** कोट्टाकल मुरली

पुनर्जागरण नेता, कवि, नाटककार, संपादक, निबंधकार, मुल्लामंगलक रमन भट्टाथिरिपाद जो एम.आर.बी. नाम से ज्यादा लोकप्रिय हैं, ई.एम.ए. नंबूदरीपाद एवं वी.टी. भट्टाथिरिपाद के साथ केरल के समाज सुधार आंदोलन के सूत्रधार रहे हैं। उनका जन्म 1909 में वन्नेरीगांव के एक कट्टर नबूंदरी परिवार में हुआ जो महान विचारों के कारण पूरे क्षेत्र में एक प्रसिद्ध गांव था। एम.आर.बी. अपने समय के महान लेखकों विचारकों जैसे कवि वल्लठोल, मालौचक कुट्टीकृष्णा मरार एवं प्रबुद्ध विचारक नल्लपट्ट नारायण मेनन के संपर्क में आए। अपने नाटक मराक्कुडाककुलिले महानारकम एवं खुद एक विधवा से विवाह करने के कारण वह महिला मुक्ति के प्रेरक सूत्रधारों में से एक बन गए। बाद में साहित्य और पत्रकारिता की ओर उन्मुख होने के बाद वह युवादीपम, उन्नी नंबूदरी, नवलोकम एवं मासिक साहित्य परिषद जैसे कई प्रकाशनों के संपादकीय बोर्ड में रहे।

विलिंग टू सैक्रीफाइस/अंग्रेजी/25 मिनट

निर्माता : दयाकर राव **निर्देशक** : बी.वी.पी. राव **संगीतकार** : मयूख हजारिका, अमित किलम्

यह निहालचंद विश्नोई की कहानी है जो 1996 के अक्तूबर में उसके गांव में जंगली जानवरों को बचाने की कोशिश में अवैध शिकारियों द्वारा मार डाला गया था। उसकी कुर्बानी का संबंध उस समुदाय से है जिसके लोगों का प्रेरणास्त्रोत उनके पूर्वज हैं जिन्होंने 1731 में जोधपुर राजघराने के सिपाहियों द्वारा पेड़ों को काटे जाने का विरोध किया था। खेजरली गांव में उसके पूर्वजों ने पेड़ों को अपने आलिंगपाश में बांध लिया था और उनमें से 363 लोगों को मार डाला गया था। विश्नोई समुदाय आज भी उनके दो सिद्धांतो पर अमल करता है। हरे पेड़ों को काटने एवं जंगली जानवरों की हत्या करने से परहेज।

WILLING TO SACRIFICE

English/25 Min.

Producer : Dayakar Rao **Director:** B.V.P. Rao **Music Director :** Mayukh Hazarika Amit Kilam

THIS is the story of Nihal Chand Bishnoi, who was killed by poachers when he tried to protect wild animals in his village in October 1996. It links his sacrifice to that of his community, people from which draw their inspiration from their ancestors who withstood an attack on their trees in 1731 by soldiers of the Jodhpur kingdom - they had come to cut trees in Khejarli village. As they hugged the trees, 363 of them were killed. The community they left behind, the Bishnois, continue to follow two principles: not to cut green trees and not to kill wild life.